रोजनामा इन्डो गल्फ

www.Newsindogulf.com/Email:-Newsindogulf730@gmail.com

सच्चाई में है दम, सच लिखते हैं हम

पटना, शुक्रवार | 17 जनवरी 2025 | वर्ष : 03 अंक : 17 | पृष्ठ -12 | PRGI NO - BIHHIN/2023/86924 | मूल्य - ₹ 3 | पटना संस्करण

गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि होंगे इंडोनेशियाई राष्ट्रपति,

विदेश मंत्रालय ने जारी किया आधिकारिक बयान

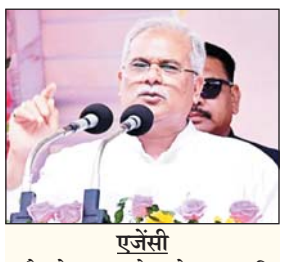

भारत द्वारा चिंता जताए जाने के बाद, सुबियांतो के भारत दौरे के तुरंत बाद पाकिस्तान जाने की संभावना नहीं है। इससे पहले, जकार्ता ने नई दिल्ली की यात्रा के बाद इंडोनेशियाई राष्ट्रपति की पाकिस्तान यात्रा की योजना बनाई थी, पाकिस्तानी मीडिया ने रिपोर्ट दी थी।

एजेंसी

नई दिल्ली: पीएम मोदी के निमंत्रण पर इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबिआंतो 25-26 जनवरी 2025 को भारत की राजकीय यात्रा पर आएंगे। राष्ट्रपति के रूप में भारत की अपनी पहली यात्रा पर प्रबोवो भारत के 76वें गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि भी होंगे। उन्होंने अक्टूबर 2024 में पदभार ग्रहण किया। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर इंडोनेशिया गणराज्य के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबिआंतो 25-26 जनवरी 2025 के दौरान भारत के 76वें गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि होंगे।

भारत द्वारा चिंता जताए जाने के बाद, सुबियांतो के भारत दौरे के तुरंत बाद पाकिस्तान जाने की संभावना नहीं है। इससे पहले, जकार्ता ने नई दिल्ली की यात्रा के बाद इंडोनेशियाई राष्ट्रपति की पाकिस्तान यात्रा की योजना बनाई थी, पाकिस्तानी मीडिया ने रिपोर्ट दी थी। भारत में हर साल अपने गणतंत्र दिवस समारोह में विश्व नेताओं को मुख्य

अतिथि के रूप में आमंत्रित करने की परंपरा है। हाल के दिनों में फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन ने 2024 में मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर की शोभा बढ़ाई, जबकि मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सिसी ने 2023 में भाग लिया। उडश्क्क्ष् 19 महामारी के कारण 2021 और 2022 में कोई गणतंत्र दिवस का मुख्य अतिथि नहीं था।भारत इंडोनेशिया को ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली की आपूर्ति के लिए 450 मिलियन अमेरिकी डॉलर के सौदे को अंतिम रूप देने के करीब है। मामले से परिचित सूत्रों के अनुसार, इंडोनेशिया के रक्षा मंत्रालय ने खरीद के संबंध में जकार्ता में भारतीय दूतावास से आधिकारिक तौर पर संपर्क किया है। इस सौदे की घोषणा इंडोनेशियाई राष्ट्रपति की आगामी नई दिल्ली यात्रा के दौरान होने की उम्मीद है।

भारत द्वारा चिंता जताए जाने के बाद, सुबियांतो के भारत दौरे के तुरंत बाद पाकिस्तान जाने की संभावना नहीं है। इससे पहले, जकार्ता ने नई दिल्ली की यात्रा के बाद इंडोनेशियाई राष्ट्रपति की पाकिस्तान यात्रा की योजना बनाई थी, पाकिस्तानी मीडिया ने रिपोर्ट दी थी।

ब्रीफ न्यूज

केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है बीजेपी, बघेल बोले- संस्थानों पर कर लिया कब्जा

एजेंसी

कांग्रेस ने गुरुवार को आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने भारतीय राज्य के खिलाफ लड़ने के बारे में राहुल गांधी की हालिया टिप्पणियों की गलत व्याख्या की और कहा कि गांधी राज्य की संवैधानिक परिभाषा का जिक्र कर रहे थे जैसा कि अनुच्छेद 12 में उल्लिखित है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) मुख्यालय में प्रेस को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है और संविधान के तहत 'राज्य' के रूप में परिभाषित संस्थानों पर कब्जा कर रही है। यह विवाद तब शुरू हुआ जब बुधवार को दिल्ली में कांग्रेस के नए मुख्यालय के उद्घाटन के दौरान राहुल गांधी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और भाजपा पर देश में हर एक संस्थान पर कब्जा करने का आरोप लगाया। राहुल ने कहा कि आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के इस बयान का जिक्र करते हुए कि अयोध्या में राम मंदिर का अभिषेक भारत की सच्ची आजादी है।

सुरक्षा बलों को मिली बड़ी सफलता, मुठभेड़ में 12 नक्सलियों को किया ढेर

एजेंसी

छत्तीसगढ़: एक महत्वपूर्ण ऑपरेशन में, छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में सुरक्षा बलों ने एक गहन मुठभेड़ में 12 नक्सलियों को मार गिराया। क्षेत्र के घने जंगली इलाकों में चलाया गया यह ऑपरेशन वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ चल रही लड़ाई में एक बड़ी सफलता है। क्षेत्र के घने जंगली इलाकों में चलाया गया यह ऑपरेशन वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ चल रही लड़ाई में एक बड़ी सफलता है। अधिकारी ने बताया कि तीन जिलों के जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी), केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की विशिष्ट जंगल युद्ध इकाई कोबरा (कमांडो बटालियन फॉर रिजोल्यूट एक्शन) की पांच बटालियन और सीआरपीएफकी 229वीं बटालियन के जवान इस अभियान में शामिल थ। ाीजापुर के मद्देड़ थाना क्षेत्र में12 जनवरी को सुरक्षाकर्मियों के साथ मुठभेड़ में दो महिलाओं समेत पांच नक्सली मारे गए थे। पुलिस ने बताया कि छत्तीसगढ़ में दो वर्षों में सुरक्षा बलों पर सबसे बड़ा हमला करते हुए नक्सलियों ने इस महीने की शुरूआत में बीजापुर जिले में 60 से 70 किलोग्राम वजनी संवर्धित विस्फोटक उपकरण (आईईडी) में धमाका किया जिसकी चपेट में सुरक्षाबलों का एक वाहन आ गया और उसमें सवार आठ सुरक्षाकर्मी और उनके चालक की मौत हो गई थी।क्षेत्र के घने जंगली इलाकों में चलाया गया यह ऑपरेशन वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ चल रही लड़ाई में एक बड़ी सफलता है। क्षेत्र के घने जंगली इलाकों में चलाया गया यह ऑपरेशन वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ चल रही लड़ाई में एक बड़ी सफलता है।

अर्बन नक्सल्स के चंगुल में हैं राहुल गांधी, BJP का कांग्रेस नेता पर बड़ा हमला

एजेंसी

पटना: भाजपा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी शहरी नक्सलियों की सोच प्रक्रिया की पूरी तरह से पकड़ में हैं, और पूछा कि क्या उन्हें अब हिंडनबर्ग रिसर्च की बंद दुकान का अनुबंध मिल गया है। भाजपा नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने भी गांधी की उनकी टिप्पणियों के लिए आलोचना की कि कांग्रेस "अब भाजपा, आरएसएस और भारतीय राज्य से लड़ रही है", और कहा कि भारतीय राज्य एक स्वतंत्र देश के रूप में भारत की संवैधानिक पहचान का प्रतिनिधित्व करता है।रविशंकर प्रसाद ने कहा कि राहुल गांधी कल बोले कि राहुल गांधी जी आप संसद में विपक्ष के नेता हैं और आप भारतीय राज्य से लड़ने की बात कर रहे हैं! भारतीय राज्य भारत के संवैधानिक व्यक्तित्व का परिचय है। राहुल गांधी को बोलने से पहले समझना चाहिए कि वो क्या बोल रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमें पता चला है कि हिंडनबर्ग रिसर्च ने अपनी दुकान बंद कर दी है।

मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के 1536 लाभार्थी के खातों में नहीं आएगा पैसा, जानिए क्या है वजह?

एजेंसी

न्पटना: मुख्यमंत्री उद्यमी योजना में गलत जानकारी देने वाले लाभुक को चयन के बाद भी राशि नहीं मिलेगी। उनका चयन निरस्त कर दिया गया है। राज्य में ऐसे चयनितों की संख्या 1536 है। अब इनके बदले नए लाभुक का चयन किया जाएगा। वर्ष 2024-25 में 9247 का चयन हुआ था। योजना के तहत युवा, महिला, अतिपिछड़ा वर्ग, महिला और अल्पसखंख्यक वर्ग में आवेदन किए जाते हैं। नियमानुसार लाभुक को उसी जिले का निवासी होना चाहिए, जहां वह उद्यम लगाना चाहता हो। कई चयनितों ने दूसरे जिले के लिए आवेदन कर दिया था। वहीं, राज्य के पचास वर्ष

की उम्र तक के व्यक्ति आवेदन कर सकते हैं। कई चयनितों की उम्र 50 वर्ष से ज्यादा पाई गई। उद्यमी योजना के लिए कुछ ट्रेड में संबंधित क्षेत्र में तकनीकी प्रमाणपत्र की जरूरत होती है। कई चयनितों के पास पर्याप्त योग्यता नहीं मिली। इन्हीं चयनितों को योजना की राशि नहीं भेजी गई है। जांच के बाद उन्हें अयोग्य करार दिया गया है। उद्योग विभाग के अनुसार जांच के बाद स्क्रूटिनी में ऐसे चयनितों के नाम हटा दिए गए हैं। अब इनकी जगह पर दूसरे योग्य लाभुकों का चयन किया जाएगा। वर्ष 2024-25 के लिए प्राप्त आवेदनों में से कंप्यूटर रैंडमाइजेशन पद्धति से इनका चयन किया जाएगा।वर्ष 2018 में योजना शुरू हुई थी। लाभुक को तीन किस्त में राशि का भुगतान किया गया है।

तो क्या हमलावर ने 1 करोड़ रुपए मांगे थे? जानिए सैफ पर हमले से पहले क्या-क्या हुआ

एजेंसी

नई दिल्ली: अभिनेता सैफ अली खान के बांद्रा स्थित आवास में गुरुवार को एक घुसपैठिया घुस गया। संदिग्ध ने घर के नौकरों को धमकी दी और 1 करोड़ रुपये की मांग की। शोर सुनकर सैफ अली खान कमरे में पहुंचे और हमलावर के साथ हाथापाई में वह घायल हो गए। पुलिस द्वारा दर्ज किए गए बयानों के मुताबिक, सैफ अली खान के घरेलू नौकर ने बाथरूम के पास एक परछाई देखी। शुरूआत में उन्हें लगा कि करीना कपूर उनके छोटे

बेटे की जांच कर रही हैं, लेकिन फिर उन्हें शक हुआ और वह आगे बढ़ीं। अचानक, 35 से 40 वर्ष की आयु के एक व्यक्ति ने उस पर हमला किया, उसे तेज हथियार से धमकाया और चुप रहने का आदेश दिया। झगड़े के दौरान दूसरी नौकरानी आ गई। जब उन्होंने उससे पूछा कि उसे क्या चाहिए तो उसने कहा 1 करोड़ रुपये चाहिए।लीलावती अस्पताल के चिकित्सकों ने बताया कि सैफ (54) आपातकालीन सर्जरी के बाद खतरे से बाहरहैं। यह हमला बीती रात करीब 2.30 बजे सतगुरु शरण इमारत की 12वीं मंजिल पर स्थित उनके अपार्टमेंट में हुआ। चिकित्सकों ने बताया कि अभिनेता की रीढ़ की हड्डी से चाकू का 2.5 इंच का एक टुकड़ा निकाला गया।

अरविंद केजरीवाल ने 13 साल लूटा, इस बार दिल्ली में भी बनेगी भाजपा सरकार: सम्राट चौधरी

एजेंसी

पटना। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि इस बार देश के राजधानी प्रदेश दिल्ली में भी पूर्ण बहुमत से भाजपा की सरकार बनेगी। चौधरी ने कहा कि आम आदमी पार्टी के एक दर्जन से अधिक विधायक, नेता, राज्यसभा सांसद संजय सिंह और मुख्यमंत्री सहित तीन मंत्री भ्रष्टाचार के मामले में जेल जा चुके हैं या जमानत पर हैं। पूरी पार्टी और सरकार घोटालों में डूबी है। उन्होंने कहा कि दिल्ली की जनता और विशेष कर वहाँ बसे

बिहार-यूपी के मेहनत-मजदूरी करने वाले लाखों लोगों को आम आदमी पार्टी की सरकार ने बुरी तरह निराश और अपमानित किया।चौधरी ने कहा कि आम आदमी पार्टी के संयोजक और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने 13 साल तक दिल्ली को लूटा और अपनी छवि चमकाने में करोड़ो रुपये खर्च किये। चौधरी ने कहा कि केजरीवाल ने करोड़ों रुपये के घोटाले किये, मोहल्ला क्लीनिक के नाम पर धोखा दिया और केंद्र से टकराव की राजनीति कर आयुष्मान भारत और किसान सम्मान निधि जैसी योजनाओं को दिल्ली में लागू नहीं होने दिया। उन्होंने कहा कि कैग की रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली सरकार की आबकारी नीति से 2026 करोड़ का घोटाला हुआ।

मोदी कैबिनेट के नए फैसले से स्पेस मिशन में मिलेगा सपोर्ट,

इसरो के श्रीहरिकोटा में 3,984 करोड़ रुपये के तीसरे लॉन्च पैड को मंजूरी

एजेंसी

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र में तीसरे लॉन्च पैड (टीएलपी) की स्थापना को मंजूरी दे दी है। तीसरा लॉन्च पैड अगली पीढ़ी के लॉन्च वाहनों, आगामी मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशनों और एलवीएम-3 लॉन्च का समर्थन करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह विकास भारत के अंतरिक्ष बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और अंतरिक्ष अन्वेषण में अपनी क्षमताओं का विस्तार करने में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस परियोजना को 3,984.86 करोड़ रुपये की लागत से क्रियान्वित किया जाएगा और 48 महीनों के भीतर पूरा होने की उम्मीद है। यह नई सुविधा भारत के महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष कार्यक्रम की बढ़ती मांगों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।तीसरे लॉन्च पैड में सार्वभौमिक और स्केलेबल सिस्टम होंगे जो एनजीएलवी, अर्ध-क्रायोजेनिक चरणों वाले एलवीएम 3 वाहनों और एनजीएलवी के स्केल-अप कॉनफि गरेशन का समर्थन करने में सक्षम होंगे। इस परियोजना में उद्योग जगत की अधिक भागीदारी होगी और श्रीहरिकोटा प्रक्षेपण परिसर में मौजूदा सुविधाओं का उपयोग करके पहले प्रक्षेपण की उपलब्धता का लाभ उठाते हुए इसरो के अनुभव का लाभ उठाया जाएगा।भारत वर्तमान में श्रीहरिकोटा में दो परिचालन प्रक्षेपण स्थलों पर निर्भर है:

14 दिनों बाद प्रशांत किशोर ने तोड़ा अनशन, गंगा में लगाई डुबकी, जानें आगे का प्लान

एजेंसी

पटना: जन सुराज पार्टी के प्रमुख प्रशांत किशोर ने 14 दिन बाद गुरुवार को अपनी भूख हड़ताल खत्म कर दी। किशोर पिछले महीने आयोजित बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) परीक्षा में कथित अनियमितताओं के विरोध में 2 जनवरी से 'आमरण अनशन' पर थे। किशोर अपने 'सत्याग्रह' आंदोलन के अगले चरण की भी शुरूआत करेंगे। अपना उपवास तोड़ने से पहले, किशोर ने पटना में गंगा पथ के पास पवित्र नदी गंगा में प्रतीकात्मक डुबकी लगाई, जो उनके विरोध में एक महत्वपूर्ण क्षण था।किशोर ने कहा कि ये कोई रैली या विरोध प्रदर्शन नहीं है। पिछले 14 दिनों से जन सुराज परिवार की ओर से मैंने प्रयास किया है कि छात्रों को न्याय

मिले। यह लड़ाई प्रशांत किशोर ने शुरू नहीं की; इस संघर्ष की शुरूआत बिहार के उन छात्रों ने की थी जिनका मानना ??है कि बीपीएससी परीक्षा में बड़े पैमाने पर अनियमितताएं हुई थीं। किशोर ने कहा कि वह बिहार सत्याग्रह आश्रम नाम से एक नया मंच स्थापित करके सत्याग्रह शुरू करेंगे। उन्होंने कहा, यह स्थान सभी उत्पीड़ित लोगों के लिए एक आवाज के रूप में काम करेगा, जो सिस्टम द्वारा अन्याय सहने वालों को बिना किसी डर के आने और बोलने के लिए एक जगह प्रदान करेगा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आश्रम में सभी गतिविधियां आवश्यक कानूनी प्रक्रियाओं और अनुमतियों का पालन करेंगी।किशोर ने आश्रम में अगले आठ हफ्तों में एक लाख युवाओं को प्रशिक्षित करने की योजना भी साझा की। इसका उद्देश्य उन्हें समाज को जाति और धार्मिक विभाजनों से परे जाकर अपने बच्चों के लिए बेहतर भविष्य बनाने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करना है। उन्होंने अधिकारियों को आश्वस्त किया कि पहल के प्रति प्रशासन की प्रतिक्रिया के बारे में किसी भी चिंता को कम करने के लिए कोई रैलियां या विरोध प्रदर्शन नहीं होंगे। इससे पहले, किशोर ने दावा किया था कि बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने बीपीएससी परीक्षा विवाद का समाधान खोजने के लिए कदम उठाने का आश्वासन दिया है।

समस्तीपुर में बॉयलर ब्लास्ट हादसे मामले में 2 और मजदूरों की मौत

4 पर पहुंची मृतकों की संख्या

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

समस्तीपुर :- समस्तीपुर जिले के वैनी में एल्यूमीनियम फैक्ट्री बॉयलर ब्लास्ट हादसे में गुरुवार को इलाज के दौरान दो और मजदूरों की मौत हो गई है। जिससे मृतकों की संख्या बढ़कर चार हो गयी।मृतक दोनों मजदूरों का इलाज डीएमसीएच दरभंगा में चल रहा था। दोनों मृतकों की पहचान मोतिहारी निवासी ललित और दरभंगा निवासी ज्योति के रूप में हुई है।इससे पहले दो और की मौत बुधवार को हादसे के वक्त हुई थी।

वहीं, एक घायल पवन हैं, जिनका समस्तीपुर सदर अस्पताल में अभी भी इलाज चल रहा है। घटना के बाद फैक्ट्री के मालिक मुजफ्फरपुर निवासी दिलीप सिंह और मैनेजर सहित अन्य कर्मी फरार हैं। पूसा प्रखंड की सीओ पल्लवी के बयान पर मालिक और मैनेजर पर केस दर्ज हुआ है। पुलिस की जांच में पता चला की फैक्ट्री अवैध रूप से चल रही थी, इसलिए इसकी नियमित जांच नहीं हो रही थी।पुलिस जांच में पता चला कि समस्तीपुर जिले के उद्योग और श्रम विभाग में कोई रिकॉर्ड फैक्ट्री का नहीं है। फैक्ट्री इंस्पेक्टर को भी फैक्ट्री के बारे में नहीं पता है। हालांकि बताया गया कि 1960 में फैक्ट्री की स्थापना पूसा खादी ग्राम उद्योग की ओर से की गई थी। करीब 10 साल तक फैक्ट्री चली, बाद में खादी ग्राम उद्योग ने फैक्ट्री को नीलाम कर दिया। इसके बाद फैक्ट्री के करीब 10 मालिक बदले। अभी मालिक दिलीप सिंह है, पर उनके बारे में कोई नहीं जानता। मजदूर भी खुलकर नहीं बोल रहे।ऐसे में सवाल उठता है कि अवैध फैक्ट्री में 50 से अधिक लोग किस आधार पर काम कर रहे थे। फैक्ट्री का संचालन मुख्य सड़क किनारे कैसे हो रहा था। अब श्रम, उद्योग विभाग के कर्मी सहित फैक्ट्री इंस्पेक्टर जांच के घेरे में हैं। इधर समस्तीपुर एएसपी संजय पांडे ने बताया कि इस मामले में पूसा की सीओ के बयान पर प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। फैक्ट्री मालिक और मैनेजर के बारे में पता लगाया जा रहा है।

प्रोन्नति को लेकर शिक्षक कल्याण संघ ने नियोजन इकाई के अध्यक्ष व सचिव को सौंपा ज्ञापन

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सीतामढ़ी।प्रारम्भिक शिक्षक कल्याण संघ की ओर से एक प्रतिनिधिमंडल प्रदेश अध्यक्ष शशि रंजन सुमन के नेतृत्व में गुरूवार को प्रखंड कार्यालय में प्रखंड विकास पदाधिकारी सह सचिव प्रखंड शिक्षक नियोजन इकाई, बाजपट्टी संदीप सौरभ एवं प्रखंड प्रमुख सह अध्यक्ष प्रखंड शिक्षक नियोजन इकाई,बाजपट्टी अफजल आलम से मिल कर स्थानीय निकाय के अंतर्गत कार्यरत शिक्षकों को स्नातक ग्रेड में प्रोन्नति देने संबंधित ज्ञापन सौंपा। दिये गये आवेदन में कहा गया है की बिहार पंचायत प्रारंभिक विद्यालय सेवा (नियुक्ति, प्रोन्नति, स्थानांतरण, अनुशासनिक कार्रवाई एवं सेवा शर्त)नियमावली 2020 के तहत स्नातक योग्यताधारी स्थानीय निकाय के शिक्षकों को जिनकी सेवा प्रशिक्षित शिक्षक के रूप में आठ वर्ष पूरी हो चुकी है उन्हें स्नातक ग्रेड में तथा वैसे शिक्षक जिनकी 12 वर्षों की सेवा संतोषजनक हो चुकी है उन्हें अपने ही ग्रेड में प्रोन्नति देनी है। प्रतिनिधिमंडल में जिला कोषाध्यक्ष मो तनवीर अहमद, जिला संयुक्त सचिव जय प्रकाश कुमार, प्रखंड अध्यक्ष शत्रुघ्न कुमार सिंह, कोषाध्यक्ष अनिल कुमार शर्मा, संयुक्त सचिव अखिलेश कुमार शामिल है

अलग अलग मामले में पुलिस ने दो अभियुक्त को किया गिरफ्तार

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के वारिसनगर प्रखंड के तहत मथुरापुर थाना की पुलिस ने अलग - अलग स्थानों से अलग - अलग मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया। बताया जाता है कि मथुरापुर थाना के एएसआई राजू कुमार यादव ने गश्त के दौरान नशे की हालत में एक पियक्कड़ को गिरफ्तार कर थाना लेते चले गये। गिरफ्तार किए गये पियक्कड़ की पहचान सारी टोले चकमुराद निवासी विलट महतो का पुत्र रविन्द्र कुमार के रूप में हुई है। वही दूसरी ओर मथुरापुर थाना के एसआई सुप्रिया आर्य ने पॉक्सो एक्ट मामले में एक युवक को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार किए गये युवक की पहचान नागरबस्ती निवासी मो फिरोज अंसारी का पुत्र मो एखलाक के रूप में हुई है। इधर थाना अध्यक्ष मुकेश कुमार ने कागजी प्रक्रिया के बाद पकड़े गये दोनो अभियुक्त को न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

डीएम ने की समीक्षात्मक बैठक

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिलाधिकारी रोशन कुशवाहा द्वारा समाहरणालय सभागार में वृहस्पतिवार को राजस्व एवं आंतरिक संसाधन से संबंधित समीक्षात्मक बैठक की गई। आंतरिक संसाधन की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी द्वारा न्यूनतम राजस्व संग्रहण करने वाले पांच कार्यालय जिसमें जिला खनन कार्यालय जिनकी उपलब्धि 38.49 प्रतिशत, माप तौल कार्यालय जिनकी उपलब्धि 55.49 प्रतिशत , विद्युत कार्यालय दलसिंहसराय जिनकी उपलब्धि 58.80, नगर निगम समस्तीपुर जिनकी उपलब्धि 59.67% तथा भू राजस्व संग्रहण जिनकी उपलब्धि 63.32% है को फटकार लगाते हुए यथाशीघ्र यथा शीघ्र निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने का निर्देश दिया गया। शेष कार्यालय को भी निर्धारित लक्ष्य को वित्तीय वर्ष समाप्ति से पूर्व प्राप्त करने का निर्देश दिया गया। राजस्व की समीक्षा के क्रम में जिलाधिकारी द्वारा अंचल स्तरीय भूमि विवाद की थाना पर होने वाली संयुक्त अनिवार्य बैठक तथा अनुमंडल स्तरीय एसडीओ, एसडीपीओ की भूमि विभाग से संबंधित बैठक नियमित करने तथा इसका प्रतिवेदन भू संपदा पोर्टल पर अपलोड करने हेतु निर्देश दिया गया। राजस्व कर्मचारी मोबाइल ऐप में अभियान बसेरा 2 सर्वेक्षण का प्रगति प्रतिवेदन की समीक्षा के क्रम में सबसे खराब प्रदर्शन सिंघिया का 23%, शिवाजीनगर का 34%, विभूतिपुर का 39% तथा विथान का 40% रहने पर जिलाधिकारी द्वारा नाराजगी व्यक्त की गई तथा सभी संबंधित पदाधिकारी को चेतावनी देते हुए यथाशीघ्र प्रतिवेदन अपलोड करने हेतु निर्देश दिया गया। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन म्यूटेशन तथा परिमार्जन प्लस अंतर्गत जमाबंदी के डिजिटाइजेशन से संबंधित निर्धारित लक्ष्य को समय अवधि में पूर्ण करने हेतु निर्देशित किया गया। राजस्व कर्मचारी मोबाइल ऐप में आधार सीडिंग के में खराब प्रदर्शन करने वाले सिंघिया, विथान एवं रोसड़ा क्रमशः 30%, 31%, 32% को फटकार लगाई गई। इसी प्रकार ई मापी की समीक्षा के क्रम में सर्वाधिक अप्रूवल पेंडिंग क्रमशः 10 - 10 समस्तीपुर सदर एवं पूसा में पाया गया जिस पर जिलाधिकारी द्वारा नाराजगी जाहिर करते हुए शीघ्र अप्रूवल देने हेतु निर्देशित किया गया। इसके साथ-साथ एलपीसी स्टेटस रिपोर्ट, अतिक्रमण वाद के निष्पादन तथा मुख्यमंत्री जनता दरबार के आवेदनों को भी यथाशीघ्र निष्पादित करने हेतु सभी सम्बंधित पदाधिकारीगण को निर्देश दिया गया। बैठक में अपर समाहर्ता अजय कुमार तिवारी के अलावा सभी भूमि सुधार उप समाहर्ता तथा सभी अंचल अधिकारी उपस्थित थे।

सीतामढ़ी में 18 जनवरी वर्ग 8 तक स्कूल बंद

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सीतामढ़ी , जिले में अत्यधिक ठंड और कम तापमान की स्थिति को देखते हुए डीएम रिची पांडे ने बच्चों के स्वास्थ्य और जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना को लेकर आगामी 18 जनवरी तक कक्षा आठवीं तक के वर्ग संचालन पर प्रतिबंध लगा दिया है। डीएम ने जारी आदेश में कहा है कि भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 के तहत सभी निजी एवं सरकारी स्कूलों में आगामी 18 जनवरी तक पठन-पाठन स्थगित रहेगा। जबकि कक्षा नवमी से लेकर 12वीं तक के वर्ग का संचालन का समय सुबह 9 बजे से 3:30 बजे तक संचालित की जा सकेगी,वही बोर्ड परीक्षा से संबंधित शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन इससे मुक्त रहेगा।

वारिसनगर प्रखंड मुख्यालय चौक स्थित हनुमान मंदिर परिसर में 10 दिवसीय नवाह यज्ञ प्रारंभ

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के वारिसनगर प्रखंड मुख्यालय चौक स्थित श्री श्री 108 हनुमान मंदिर परिसर में गुरुवार से 10 दिवसीय नवाह महायज्ञ प्रारम्भ की गई। इस पावन यज्ञ में सर्व प्रथम आचार्य पंडित झा द्वारा कलश स्थापित कर वैदिक मंत्रो का जाप कर हवन की गई। वहीं जय शियाराम जय जय हनुमान, संकट मोचन कृपा निधान की धुन से पुरा इलाका भक्तिमय वातावरण बना हुआ है। कीर्तन मंडली के महेशवर दास, सरपंच भारती देवी, हरि ठाकुर, रामदेव दास, बैजु झा, गोपाल ठाकुर, रानी देवी, ललिता देवी आदि मंडली के द्वारा मंत्रोजाप से सारा वातावरण भक्तिमय हो गया है। मौके पर अर्जुन सिंह, राजकुमार सिंह, दिलीप ठाकुर, विंदेशवर सिंह नेताजी, मनियारपुर मुखिया अरविंद कुमार साह, रमेश कुमार सिंह, अनिल कुमार ठाकुर, संजय बाबा, नरेश साह आदि लोग आये हुए भक्तों को दर्शन - पूजन करवाते हुए विधि व्यवस्था में लगे हुए हैं। बताते चलें कि 21 वर्षो से लगातार 16 जनवरी से उक्त स्थल पर समाजिक सहयोग से नवाह यज्ञ प्रारंभ किया जाता है।

बीपीएससी अभ्यर्थियों के एक प्रतिनिधि मंडल ने चिराग पासवान से मुलाकात कर अपनी मांगों को रखा

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक के कर्ण कुदरिया
दिनांक 15 जनवरी, 2025
आज लोजपा रामविलास बिहार प्रदेश कार्यालय एक व्हीलर रोड पटना में 70 वीं बीपीएससी अभ्यर्थियों के एक प्रतिनिधि मंडल ने लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान से मुलाकात कर अपनी मांगों को रखा। चिराग ने बीपीएससी छात्रों की मांगों को ध्यानपूर्वक सुना तथा हर संभव मदद का भरोसा दिलाया।
पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन कुमार ने बताया कि साथ

महागठबंधन की सरकार बनने पर महिलाओं को मिलेगा 25 सौ प्रति माह : विधायक

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। गुरुवार को समस्तीपुर प्रखंड के वाजिदपुर वार्ड संख्या 05, माधोपुर तथा पोखरैरा में प्रखंड राजद समस्तीपुर की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई तथा सदस्यता अभियान चलाया गया। अध्यक्षता राजद प्रखंड अध्यक्ष संतोष कुमार यादव तथा संचालन पूर्व मुखिया राम विनोद पासवान उर्फ शंभु पासवान ने की। बैठक को संबोधित करते हुए स्थानीय विधायक सह बिहार विधानसभा के मुख्य सचेतक अख्तरुल इस्लाम शाहीन ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने कई बड़ी घोषणा की हैं। नेता प्रतिपक्ष ने दावा किया कि अगर महागठबंधन की सरकार बनी तो माई बहिन मान योजना के तहत गरीब महिलाओं को 2500 रुपए दिए जाएंगे। इसके अलावा 200 यूनिट फ्री बिजली और वृद्धा पेंशन 1500 रुपए किए जाने का एलान कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि हर वर्ग के लोगों विशेषतः महिलाओं में सदस्यता अभियान को लेकर भारी उत्साह और जोश है। बिहारवासी एनडीए की 20 वर्षों की थकाऊ - उबाऊ, अप्रचलित और कालग्रस्त नीतीश सरकार को हटाने के लिए संकल्पित है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय जनता दल का सदस्यता अभियान सभी के बीच चलाना है और जो लक्ष्य पहले से निर्धारित है, उसको हर स्तर पर पूरा करना है। साथ ही उन्होंने दावा किया कि बिहार में आगामी महागठबंधन की होगी। इस अवसर पर 670 लोगों को राजद का प्राथमिक सदस्य बनाया गया।

मशरक में नो पार्किंग जोन में सड़क पर वाहन खड़ा किया तो भरना होगा जुमार्ना

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक नगर पंचायत के महावीर चौक पर जाम की समस्या की गंभीर समस्या को देखते हुए पुलिस प्रशासन ने बेतरतीब वाहन पार्किंग करने वालों पर लगाम लगानी शुरू कर दी है।

सड़क पर मनमाने से बेतरतीब पार्किंग करने वालों से जुमार्ना वसूल करने किया जाने लगा है।जिसके तहत मशरक के महावीर चौक पर सड़क किनारे नो पार्किंग जोन में खड़े वाहनों पर पुलिस ने गुरुवार को कार्रवाई करनी शुरू कर दी है। मशरक थानाध्यक्ष अजय कुमार ने दारोगा सौरभ कुमार के साथ अभियान चलाते हुए सड़क के किनारे अवैध रूप से खड़े वाहनों से जुमार्ना वसूला। पुलिस के द्वारा बताया गया लगातार नो पार्किंग जोन में खड़े वाहनों से हो रही दुर्घटनाओं पर नियंत्रण और सड़क जाम को यह अभियान चलाया जा रहा है। वहीं उन्होंने कहां कि जल्द ही नगर पंचायत के कुछ और जगहों पर भी नो पार्किंग का बोर्ड लगाया जाएगा। जिसका सभी को पालन करना पड़ेगा। वहीं आपकों बता दें कि नगर पंचायत क्षेत्र के कुछ इलाकों में बैंकों के आगे और कुछ बड़े दुकानों के आगे पार्किंग की व्यवस्था नहीं की गयी हैं जहा वाहनों की पार्किंग मुहैया कराया जा सके।

प्रधानमंत्री आवास योजना में नए लाभुकों का नाम जोड़ने में कर्मी बरतें पारदर्शिता: बीडीओ

वरिष्ठसंवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए नए लाभुकों की सूची तैयार करने को विशेष अभियान चलाया जा रहा है जिसमें गुरूवार को मशरक प्रखंड के कर्ण कुदरिया पंचायत के विभिन्न गांवों में बीडीओ पंकज कुमार ने लाभुक के चयन करने की प्रक्रिया का निरीक्षण किया। मौके पर कर्ण कुदरिया पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि अशरफ अली मौजूद रहें। निरीक्षण के बाद बीडीओ पंकज कुमार ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2024-2025 में आवास योजना का लाभ देने के लिए सुयोग्य लाभार्थियों का 31 मार्च तक सर्वे करने का निर्देश प्राप्त हुआ है। लेकिन प्रखंड कार्यालय द्वारा फरवरी के अंतिम सप्ताह तक ही सर्वेक्षण कर लेने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने कहा कि संबंधित कर्मी पंचायत के सभी वार्डों में जाकर योग्य लाभार्थी को चिन्हित कर सूचीबद्ध कर रहे हैं। लाभार्थी का राशन कार्ड, पति-पत्नी का आधार कार्ड, बैंक पासबुक एवं जमीन का रसीद प्राप्त कर प्राथमिकता के आधार पर लाभार्थी का सूची तैयार की जा रही है। पक्का मकान वाले या तय मापदंड के विरुद्ध किसी व्यक्ति का सूची में नाम नहीं जोड़ने का निर्देश दिया।बीडीओ ने कहा कि सर्वेक्षण कार्य या सूची तैयार करने में किसी भी प्रकार का अवैध उगाही नहीं हो इस पर विशेष नजर रखा गया हैं, यदि कोई व्यक्ति किसी प्रकार की वसूली करता है, तो उस पर विभागीय कार्रवाई की जाएगी।

चंदन सहनी ने प्रमुख राजू कुमार को घड़ी देकर किया सम्मानित

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। वारिसनगर प्रखंड प्रमुख राजू चौधरी, अरविंद महतो, मोहन यादव, पूर्व प्रखंड अध्यक्ष अमरजीत चौधरी को राजद के पूर्व जिला अध्यक्ष सह प्रदेश महासचिव चंदन सहनी ने राष्ट्रीय जनता दल नामक की दीवाल घड़ी देकर सम्मानित किया। इधर सभी लोगों ने चंदन सहनी को इस कार्य के लिए खूब तारीफ की।

मानवीय भावनाओं के सागर थे अर्जुन बाबू : विजय चौधरी

श्रद्धांजलि सभा में शामिल हुए जल संसाधन सह संसदीय कार्य मंत्री

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के विद्यापतिनगर प्रखंड अंतर्गत मऊ धनेशपुर दक्षिण पंचायत निवासी समाजसेवी व पुरानी दुर्गा पूजा समिति मऊ के सचिव स्मृति शेष अर्जुन प्रसाद सिंह के आकस्मिक निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता सेवानिवृत राजस्व कर्मी अवधेश कुमार सिंह ने की। श्रद्धांजलि सभा के दौरान बिहार सरकार में जल संसाधन सह संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी ने स्व सिंह के तैल चित्र पर पुष्प अर्पित उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर मंत्री विजय कुमार चौधरी ने कहा कि स्मृति शेष अर्जुन बाबू मानवीय भावनाओं के सागर थे। उन्होंने जीवन पर्यन्त सामाजिक और धार्मिक कार्यों में अपनी सहभागिता दी थी। वें न केवल किसानों के लिए नजीर थे बल्कि पूरे इलाके में विराट व्यक्तित्व वाले एक सच्चे और अच्छे इंसान के रूप में भी उनकी पहचान थी। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में सदैव अपनी महत्ती भूमिका निभाने वाले अर्जुन बाबू के आकस्मिक निधन से मैं बहुत मर्माहत हूं। पुरानी दुर्गा मंदिर, मऊ के सम्यक विकास और नव निर्माण में उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। मंत्री ने कहा कि अर्जुन बाबू न केवल एक सच्चे समाजसेवी, धार्मिक व शालीनता की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने हमेशा गरीबों, मजलूमों की सेवा की। वह हमारे बीच नहीं हैं किंतु उनके आदर्श व सिद्धांत हमेशा हम सबको प्रेरणा देते रहेगें। मौके पर जदयू प्रदेश सचिव धीरेन्द्र कुमार सिंह, युवा जदयू जिलाध्यक्ष विशाल कुमार, प्रखंड जदयू अध्यक्ष रंजीत सिंह टुनटुन, मुखिया दिनेश प्रसाद सिंह, सरपंच चतुर्भुज प्रसाद सिंह, मऊ धनेशपुर उत्तर पैक्स अध्यक्ष संतोष कुमार सिंह, वाजिदपुर पैक्स अध्यक्ष श्याम सुंदर गुप्ता, विमल प्रसाद सिंह, जदयू नेता सुरेंद्र कुमार सिंह, संतोष कुमार सिंह, कुंदन सिंह, सीता गिरी, अमरनाथ मुन्ना, पत्रकार पदमाकर सिंह लाला, संजीव कुमार सिंह, रामाधार झा, राजकुमार पाण्डेय, पंकज कुमार सिंह, दिनेश पासवान, देवेन्द्र महतो, छोटे भाई मिथिलेश कुमार सिंह, पुत्र बच्चा सिंह, अभिमन्यु सिंह, भतीजा मऊ धनेशपुर दक्षिण पैक्स अध्यक्ष रामबिहारी सिंह पप्पू आदि लोगों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित किया। इससे पहले मंत्री ने उनके पुत्र बच्चा सिंह व स्वजनों से मुलाकात कर उन्हें ढांढस बंधाते हुए अपनी शोक संवेदना व्यक्त किया।

समीक्षा बैठक में समस्तीपुर सदर के फरार अभियुक्तों को गिरफ्तार करने का DIG ने दिया

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

समस्तीपुर :- मिथिला क्षेत्र, दरभंगा की पुलिस उप-महानिरीक्षक डॉ. स्वप्ना गौतम मेश्राम ने गुरुवार को अपने कार्यालय कक्ष में समस्तीपुर जिला अन्तर्गत सदर अनुमंडल-1 व सदर अनुमंडल-2 के सभी थानों की गंभीर शीर्ष लंबित कांडों की समीक्षा की। जिसमें सदर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी-1 संजय कुमार पांडेय व सदर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी-2 विजय महतो एवं कांडों के अनुसंधानकर्ता उपस्थित थे। समीक्षा के दौरान लंबित कांडों के त्वरित निष्पादन करने, फरार अभियुक्त की गिरफ्तारी करने से संबंधित आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। डीआईजी ने कहा कि थानावार अभियुक्तों की सूची बनायें।

नहर में आएगा पानी, सर्वे का कार्य शुभारंभ

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सिवान जिले से सारण जिले के मशरक थाना क्षेत्र के विभिन्न गांवों में नहर में पानी आने की संभावना बढ़ गयी हैं। नहर के पुनःस्थापना के लिए सर्वे का कार्य शुरू कर दिया गया है। आपकों बता दें कि सिवान जिले के भगवानपुर थाना क्षेत्र के कौड़ियां से मुख्य नहर से इस नहर में खेतो की सिंचाई के लिए पानी आएगा। सर्वे में लगें कर्मियों ने बताया कि नहर का सर्वे कर रिपोर्ट गंडक विभाग को दी जाएगी जिसके बाद नहर की सीमेंटेड ढलाई का कार्य किया जाएगा फिर सिचाई के लिए पानी आएगा। वहीं सर्वे करते देख ग्रामीणों में हर्ष व्याप्त है। नहरों से पानी आने से किसानों को सिंचाई में आसानी होगी और उनकी फसलें अच्छी पैदावार देंगी।सर्वे के कार्य में लगें सर्वेयर चंद्रकांत त्रिपाठी ने बताया कि नहर में पानी आने के लिए सर्वे किया जा रहा है जिसमें नहर की जमीन की वस्तुस्थिति का भी सर्वे किया जा रहा है। सर्वे कार्य में आदित्य सिंह, स्वामीनाथ राय, विरेन्द्र राय भी मौजूद थे।

समस्तीपुर इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्रों ने प्रतियोगिता में लहराया परचम,

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

समस्तीपुर/सरायरंजन :- विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के दिशा निर्देश में दरभंगा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए रचनात्मक लेखन, वाद-विवाद और खेल प्रतियोगिता उमंग 2025 का भव्य आयोजन किया गया। इस आयोजन में विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों की तर्क क्षमता, रचनात्मकता और खेल कौशल को प्रोत्साहित करना था।
इस प्रतियोगिता में राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालय,छात्र झछात्राओं ने भाग लेकर शानदार प्रदर्शन करते हुए जोनल लेवल का विजेता बना। इस उपलब्धि पर जीईसी समस्तीपुर के प्राचार्य डॉ. राजकिशोर तुगनायत और स्पोर्ट्स प्रभारी प्रो. स्वामी रंजन, प्रो. सफक अजीज, प्रो.नीलोफर अहमद और कल्चरल प्रभारी प्रो. अभय कुमार ने छात्र झछात्राओं को सम्मानित किया और आगे स्टेट लेवल खेलने के लिए प्रोत्साहित किया। बता दें कि लेखन और वाद विवाद प्रतियोगिता सत्यम सागर, श्रेय कुमार राय, शिवम कुमार, विशाखा कुमारी, शगुन आदि विजेता रहे।

अलग-अलग घटनाओं में आधा दर्जन लोग घायल, सीएचसी मशरक में भर्ती

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक के अलग-अलग गांवों में अलग-अलग घटनाओं में आधा दर्जन लोग घायल हो गए। पहले मामले में मशरक बाजार में सामान खरीदने आई महिला बाइक दुर्घटना में घायल हो गयी। घायल महिला गंगौली गांव निवासी गौरी शंकर सिंह की 32 वर्षीय पत्नी गुड़िया देवी हैं। इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराई गई। परिजनों ने बताया कि बाजार के लिए बाइक पर सवार होकर घर से निकली और थोड़ी ही दूरी पर बाइक दुर्घटना में घायल हो गयी। वहीं दूसरे मामले में मशरक नगर पंचायत क्षेत्र के तख्त टोला गांव में छत पर काम कर रही महिला के उपर बंदर ने हमला कर गंभीर रूप से जख्मी कर दिया। घायल महिला को इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराया गया। घायल की पहचान तख्त टोला गांव निवासी उमानात प्रसाद की 50 वर्षीय पत्नी रूकमणी देवी के रूप में हुई। तीसरे मामले में मशरक के बंगरा गांव में चापाकल दरवाजे पर गाड़ने से रोकने पर विवाद में मारपीट में 3 लोग घायल हो गए। घायलों में बंगरा गांव निवासी 67 वर्षीय सोगरा खातुन ,32 वर्षीय अकबर हुसैन और 53 वर्षीय सीमा बेगम शामिल है। सीएचसी मशरक में प्राथमिक उपचार किया गया। घटना के बारे में बताया गया कि पानी की दिक्कत को लेकर चापाकल दरवाजे पर लगाया जा रहा था कि उसी को पड़ोसी के द्वारा रोकने पर विरोध जताया गया कि मारपीट कर घायल कर दिया गया। थाना पुलिस को आवेदन देकर न्याय की गुहार लगाई गयी।

मशरक में दो भैंस चोरी, ग्रामीणों ने जताया आक्रोश

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक के दुरगौली पंचायत के दुरगौली हरिजन टोला और दुमदुमा गांव से अज्ञात चोरों के द्वारा दरवाजे पर बंधी दो भैंस चोरी करने का मामला सामने आया। दुरगौली हरिजन टोली में हरेंद्र राम पिता स्व कमलदेव राम की एक भैंस और दुमदुमा गांव में मोहन मांझी पिता स्व पुण्य देव मांझी की एक भैंस चोरी कर ली गई है। चोरी की घटना की जानकारी गुरूवार की सुबह हुई।वहीं पंचायत में विभिन्न गांवों में लगातार चोरी की घटनाओं से ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है। मुखिया प्रतिनिधि सत्येंद्र सिंह ने बताया कि पंचायत में लगातार विभिन्न वार्डों में चोरी की घटनाएं सामने आ रही है पर प्रशासन कान में तेल डाल सो रहा है।

मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास पर कार्यशाला का आयोजन

वरिष्ठ संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

ताजपुर / समस्तीपुर आदित्य बिरला एजुकेशन ट्रस्ट के सहयोग से दलित विकास अभियान समिति द्वारा गुरुवार को ताजपुर के द क्रैकर अकादमी ताजपुर के सभागार में मानसिक स्वास्थ्य, व्यवहार परिवर्तन और व्यक्तित्व विकास पर जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया।प्रशिक्षिका बबीता कुमारी एवं सन्नी देओल ने बताया कि दलित विकास अभियान समिति पिछले 30 वर्षों से महिला-पुरुष, एलजीबीटी एवं समुदाय के युवाओं और बच्चों के अधिकार और संरक्षण के साथ उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के कार्य संस्था प्रमुख धर्मेन्द्र कुमार के नेतृत्व में कर रही है। समिति ने पाया है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा का कमजोर होना, प्राथमिक शिक्षा में नामांकित हाशिये पर रहने वाले और कमजोर वर्ग के बच्चों को मानसिक अस्वस्थता के कारण शिक्षा से दूर कर देता है। हर पांच व्यक्तियों में से एक व्यक्ति किसी न किसी मानसिक स्वास्थ्य समस्या से पीड़ित है।
एमपॉवर मानसिक स्वास्थ्य के कलंक को दूर करने के लिए काम करता है। कार्यशाला में मानसिक स्वास्थ्य, मानसिक बीमारियों के बारे में उचित जानकारी, मदद कहां, कैसे और किससे मिल सकती है, मानसिक रूप से अस्वस्थ होने पर व्यक्ति क्या करता है, मानसिक बीमारी से ग्रसित व्यक्ति के व्यवहार में बदलाव के लक्षण, मानसिक बीमारियों का जोखिम बढ़ाने वाले कारक, हम मदद क्यों नहीं लेते हैं, उपचार के तरीके मनोवैज्ञानिक और मनोचिकित्सक के द्वारा अपने मानसिक स्वास्थ्य का ख्याल रखना तथा दलित विकास अभियान समिति द्वारा स्थापित परामर्श केंद्र पर जाकर मदद प्राप्त करने के बारे में जानकारी दी गई।कार्यक्रम में कोचिंग संचालक सहित सैकड़ों छात्राओं ने काफी प्रभावित हुआ और अपनी फीडबैक में बताया की यह कार्यक्रम जीवन में एक परिवर्तनकारी हिस्सा साबित हुआ होगा ।

हड्डी रोग विशेषज्ञ की मां की पुण्यतिथि पर स्वास्थ्य शिविर आयोजित

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक के ब्राहिमपुर गांव में प्रसिद्ध चिकित्सक हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ आशीफ इकबाल ने माता स्वर्गीय मैमुन निशा की पुण्यतिथि मनाई। पुण्यतिथि तैल चित्र पर पुष्प अर्पित किया गया और इस दौरान निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाया। शिविर का उद्घाटन डॉ आशीफ इकबाल और जजौली मुखिया प्रतिनिधि वरूण यादव ने फीता काट कर किया। शिविर में विशेषज्ञ चिकित्सक उपलब्ध रहें। डॉक्टरों की टीम ने स्थानीय गांव वालों की जांच करने के साथ-साथ उन्हें स्वच्छता और स्वस्थ आदतों का पालन करने के लिए भी प्रेरित किया। मौके पर जजौली मुखिया प्रतिनिधि वरुण यादव,अमोद कुमार सिंह,इजहारूद्दीन समेत अन्य मौजूद रहें

16 से 21 जनवरी तक चल रहें भूकंप सुरक्षा सप्ताह को लेकर प्रखंड कार्यालय में शिविर आयोजित

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक प्रखंड कार्यालय परिसर में 16 से 21 जनवरी तक चल रहे भूकंप सुरक्षा सप्ताह को लेकर जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। बीडीओ पंकज कुमार ने बताया कि भूकंप सुरक्षा सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है जिसमें जागरूकता रथ और पम्पलेट के माधयम से लोगों को भूकंप आपदा की स्थिति में बरती जानें वाली सावधानियो के बारे में जानकारी दी जा रही है। लोगों को भूकंप आने पर बरतनें वाली सुरक्षा उपाय के बारे में जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। मौके पर परिसर में सुरक्षा उपाय को लेकर सुरक्षा पोस्टर लगाया गया और उपस्थित लोगों को सुरक्षा के उपाय के पम्पलेट वितरण किया गया।

मशरक में सरपंच, न्याय मित्र और सचिव का हुआ प्रशिक्षण

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक प्रखंड कार्यालय के सभागार में गुरुवार को न्याय मित्र व सरपंच को सशक्त बनाने के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। उद्घाटन बीडीओ पंकज कुमार ने किया। उन्होंने कहा कि न्यायिक प्रणाली में सुधार लाने व ग्राम कचहरी को सशक्त बनाने के लिए यह प्रशिक्षण जरूरी है। बीडीओ पंकज कुमार ने कहा कि सरकार की सोच है कि पंचायती राज व्यवस्था के तहत सस्ता व सुलभ ध्यान दिलाने के लिए ग्राम कचहरी को विकसित किया जाए। प्रशिक्षण में प्रशिक्षक शिव प्रकाश सुमन और उमेश कुमार ने बताया कि ग्राम कचहरी के सदस्यों को ग्राम कचहरी के सफल संचालन को लेकर कई कानूनी एवं तकनीकी जानकारी दी। पंचायत स्तर पर ग्राम कचहरी में आने वाले मामले के निष्पादन को लेकर विस्तार पूर्वक जानकारी ग्राम कचहरी के सभी सदस्यों को दी गई। इसके अलावा ग्राम कचहरी ई पोर्टल संचालन के बारे में भी विस्तार पूर्वक जानकारी देकर जरूरतमंद को लाभ पहुंचाने के लिए भी कई बिंदुओं पर प्रकाश डाला। इसके अलावा सरकार द्वारा ग्राम पंचायत में दी जाने वाली सरकारी सहायता के बारे में भी बताया

चोरी के बाइक के साथ युवक गिरफ्तार

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

ताजपुर / समस्तीपुर (रोजनामा इन्डो गल्फ संवाददाता) :- आदर्श थाना अंतर्गत प्रातः गस्ती में विशेष वाहन चेकिंग के क्रम में चोरी के बाइक के साथ एक व्यक्ति गिरफ्तार कर थाना लाया गया । थानाध्यक्ष शनि कुमार मौसम द्वारा गिरफ्तार युवक थाना क्षेत्र के निफ्सी निकासपुर के संजय सहनी का पुत्र अजय कुमार बताया गया । अग्रिम करवाई की जा रही है।

समस्तीपुर की पुलिस ने चावल की बोरी के पीछे छुपा कर रखा गया 203 कॉटन विदेशी शराब बरामद

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

समस्तीपुर :उत्पाद विभाग की टीम ने जिले के हलई थाना के सीमा पर चावल की बोरी के पीछे छुपा कर रखा गया 203 कॉटन विदेशी शराब बरामद की है। इस दौरान पुलिस की टीम ने एक 10 चक्का ट्रक भी जब्त किया है हालांकि चालक ट्रक से कूद कर फरार हो गया। बरामद की गई शराब की कीमत करीब 20 लाख रुपए आंका गया है। उत्पाद अधीक्षक एसके चौधरी ने बतलाया कि रात उत्पाद पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि ट्रक से भारी मात्रा में विदेशी शराब की खेप समस्तीपुर पहुंच रही है।
सूचना के आधार पर उत्पाद विभाग की टीम सरायरंजन सीमा के हलई के पास पहुंचकर पटना की ओर से आ रही ट्रक का इंतजार करने लगी इसी दौरान एक ट्रक को उत्पाद विभाग की टीम में देखा तो ट्रक चालक कूद कर फरार हो गया जब ट्रक की तलाशी ली गई तो
सामने से चावल की बॉडी रखी हुई थी जबकि पीछे पूरा शराब का कार्टून भरा हुआ था। तलाशी के दौरान ट्रक से 203 कॉटन विदेशी शराब बरामद की गई जबकि 43 बोरी चावल भी बरामद की गई है हालांकि चावल सड़ा हुआ बेकार है।
उत्पाद अधीक्षक ने बतलाया कि इस मामले में एक प्राथमिक की दर्ज कर ली गई है शराब कहां से मंगाई गई थी इसको लेकर जांच की जा रही है जल्द ही गिरोह के बारे में भी पता लगा लिया जाएगा।

बॉयलर फैक्ट्री में हुए हादसे में मरने वालों की संख्या दो बढ़कर हुई चार,बॉयलर फैक्ट्री के मालिक और मैनेजर पर हुआ एफआईआर

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के पूसा प्रखंड के वैनी थाना क्षेत्र स्थित अलयूमुनियम फैक्ट्री बॉयलर ब्लास्ट मामले में मृतकों की संख्या दो से बढ़कर चार हो गई है। घटना के तत्काल बाद इलाज में भेजे गये गंभीर रूप से चार घायल कर्मियों में से दो ने जहाँ देर रात डीएमसीएच में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। वही दो घायल कर्मियों में से एक की हालात अब भी नाजुक बनी हुई हैं। हालांकि एक कर्मी खतरे से बाहर बताया गया है। बुधवार देर रात डीएमसीएच में इलाज के दौरान दम तोड़ने वाले फैक्ट्री से जुड़े कर्मियों में वैशाली जिले के किशनपुर गांव निवासी इंद्रदेव राय के 40 वर्षीय पुत्र जतिन ललित कुमार एवं दरभंगा जिले के सदर थाना क्षेत्र स्थित कबीरचक मथुरापुर गांव निवासी जगदीश साह के 40 वर्षीय पुत्र ज्योति साह का नाम शामिल शामिल है। इसके अलावे घायल दो अन्य कर्मियों में से एक बंगाल के हुगली जिला स्थित चंडीतारा थाना क्षेत्र के उकोरदा गांव निवासी बिंदा भगत के पुत्र राजबल्लव भगत जहाँ खतरे से बाहर बताए गये हैं। वही पूसा के दिगंबरा गांव निवासी दीप नारायण सिंह के पुत्र पवन कुमार सिंह फिलहाल सदर अस्पताल समस्तीपुर में इलाजरत है। बतादें की बुधवार दिन के करीब डेढ़ बजे वैनी थाना क्षेत्र स्थित अल्युमिनियम फैक्ट्री के बॉयलर में जबरदस्त धमाका हो गया था। इस घटना में दो कर्मियों की जहां मौके पर ही मौत हो गई थी। वही चार कर्मी गंभीर रूप से जख्मी हो गये थे। घायल चार कर्मियों को घटना स्थल से आनन फानन में सदर अस्पताल समस्तीपुर भेजा गया था जहाँ चार में से दो कर्मी की स्थिति को गंभीर देख चिकित्सकों ने उन्हें डीएमसीएच रेफर कर दिया। बुधवार देर रात डीएमसीएच में इलाज के दौरान दोनो कर्मियों ने दम तोड़ दिया। फिलहाल एक कर्मी जहाँ खतरे से बाहर बताएं गये है। वही एक कर्मी पवन अब भी सदर अस्पताल में जिंदगी और मौत से जूझ रहा हैं। इधर मृत कर्मियों के पहचान की पुष्टि करते हुए वैनी थानाध्यक्ष आनंद शंकर गौरव ने बताया की एफएसएल की टीम घटनास्थल पर पहुँचकर जांच करेगी जिस कारण से प्लांट में बाहरी लोगों के प्रवेश पर रोक लगा दी गई है। उन्होंने बताया अंचलाधिकारी के आवेदन के आलोक में फैक्ट्री के मालिक और मैनेजर के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की

मौलाना जाफर नदवी का निधन मिल्लत की क्षति है : मो.सदरे आलम नौमानी

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
अबरार नौमानी सीतामढ़ी

दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ के महाप्रबंधक हजरत मौलाना सैयद मुहम्मद जाफर मसूद हसनी नदवी के निधन की खबर गम के माहौल में मिली। वह एक लेखक, धार्मिक विद्वान और कलमकार थे उक्त बातें उलेमा बोर्ड हिंद के अध्यक्ष मौलाना मो. सदरे आलम नौमानी ने अपने शोक संदेश में कही. उन्होंने कहा कि हजरत मौलाना सैयद मुहम्मद जाफर मसूद हसनी नदवी की कल यात्रा के दौरान एक दुर्घटना में मौत हो गई. निस्संदेह, उनका निधन दीनी मिली और धार्मिक क्षेत्रों के लिए एक अपूरणीय क्षति है। ज्ञान एवं साहित्य के क्षेत्र में उनकी सेवाएं, लेखन सदैव याद किये जायेंगे। उनके निधन से मिल्लत का बड़ा नुकसान हुआ है, जिसे निकट भविष्य में भरना और असंभव नजर आता हैं। अल्लाह से दुआ है कि उनके सभी परिवार, छात्रों, दोस्तों को धैर्य प्रदान करें। आमीन

विकास योजनाओं का बीडीओ ने किया निरीक्षण, दिए आवश्यक निर्देश

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के कल्याणपुर प्रखंड क्षेत्र के सैदपुर पंचायत, मालीनगर पंचायत में विभिन्न प्रकार के विकास के कार्यों का निरीक्षण प्रखंड विकास पदाधिकारी देवेंद्र कुमार ने गुरुवार को किया। बीडीओ ने आगे बताया कि मालीनगर पंचायत के पंचायत भवन पर लगाए गये बायोमैट्री द्वारा कर्मियों की हाजिरी, साफ सफाई शौचालय का निरीक्षण करते हुए पंचायत सचिव, विकास मित्र, कार्यपालक सहायक, लेखपाल आदि मौजूद पाए गये। बायोमेट्रिक को कंप्यूटर सिस्टम से जोड़ने तथा उसके प्रिंट आउट निकालने हेतु निर्देश दिए गये। पंचायत की कई खाता बही

आदि का निरीक्षण किया। मौके पर पंचायत राज की मुखिया मंजू देवी, मुखिया प्रतिनिधि मन्नी कुमार, शशि ठाकुर आदि मौजूद थे। सैदपुर पंचायत, मालीनगर पंचायत के आवास की योजनाओं का निरीक्षण किया गया। इस कार्य में तेजी से घर बनाने हेतु लाभार्थियों को अनुरोध किया गया। प्रखंड विकास पदाधिकारी के द्वारा निर्देशित किया गया कि नये नाम जोड़ने से संबंधित पंचायत रोजगार सेवक को निर्देश दिया गया। पंचायत के दो लाभार्थी आवास नहीं बना रहे थे उन्हें अविलंब आवास बनाने का निर्देश दिया गया। मालीनगर पंचायत के 15 वित्त योजना से बनाए गये पोखर की सीढ़ी घाट का निरीक्षण किया गया। सैदपुर पंचायत निवासी ललित पांडे ने पंचायत में किए जा रहे विकास में हुई अनियमितता की जांच की गुहार प्रखंड विकास पदाधिकारी से की। श्री पांडे ने पूर्व में दिए गये शिकायत आवेदन पर जांच की भी करने कि मांग की।

सीवान 16 जनवरी 25 डॉ विजय कुमार पाण्डेय

- न्यायालय कर्मियों की कलमबंद हड़ताल से न्यायिक कामकाज ठप
- न्यायालय में पसरा रहा सन्नाटा,
- वादकारियों की नहीं हुई सुनवाई, किसी तरह निबटाये गए जरूरी कार्य

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

व्यवहार न्यायालय कर्मियों की आज से शुरू हुई कलमबंद हड़ताल के कारण व्यवहार न्यायालय में कोई काम काज नही हुआ। वादकारी अपने मामलों की सुनवाई के लिए इधर से उधर पूरा दिन दौड़ते रहे।परन्तु न्यायालयों का ताला देर शाम तक खुला ही नहीं।वही दूसरी ओर न्यायालय कर्मी व्यवहार न्यायालय के मुख्य फाटक पर अपनी विभिन्न मांगों को लेकर धरना पर सुबह से ही बैठ कर नारेबाजी कर रहे थे।न्यायालय कर्मियो द्वारा बुलाई गई इस हड़ताल के कारण जिला न्यायाधीश के न्यायालय से लेकर पूरे व्यवहार न्यायालय में पुलिस कर्मियों को छोड़कर सन्नाटा पसरा हुआ था।मुवकिल इधर से उधर परेशान हो रहे थे।हर व्यक्ति हड़ताल से जुड़ी खबर जानने के लिए उत्सुक थे और परेशान दिखे पर देर शाम तक हड़ताल के। खत्म होने की। कोई सूचना नही मिली।अंत में सभी निराश होकर वापस चले गए। इधर न्यायालय सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार किसी तरह जरूरी काम काज जैसे रिमांड ,प्रोडक्शन आदि वर्चुअल एवम फिजिकल निष्पादित किया गया।

बिथान में गरीबों के बीच कंबल का वितरण

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर।जिले के बिथान पंचायत में गुरूवार को कंबल का वितरण किया गया। समाजसेवी इंदु गुप्ता ने वार्ड में रहने वाले गरीब, बेसहारों और कमजोर वर्ग के महिला-पुरुषों के बीच कंबल वितरित किए। समाजसेवी इंदु गुप्ता ने बताया की कंबल का वितरण ठंड और शीतलहर से बचाव के लिए किया जा रहा है, ताकि गरीब और असहाय लोग इस कड़ाके की ठंड से सुरक्षित रह सकें। उन्होंने कहा कि इस तरह के प्रयास समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए महत्वपूर्ण है। मौके पर विनेस मुखिया, श्रवण यादव, किशोर पंजियार, रामू पासवान, फूल कुमार सहित पंचायत के कई ग्रामीण महिला - पुरुष मौजूद थे।

मधुबनी, में उप विकास आयुक्त के अध्यक्षता में गणतंत्र दिवस 2025 के अवसर पर मुख्य समारोह स्थल पर प्रदर्शित की जाने वाली झाकियां को लेकर बैठक

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो. अबु बकर सिद्दीकी

मधुबनी,उप विकास आयुक्त के अध्यक्षता में गणतंत्र दिवस 2025 के अवसर पर मुख्य समारोह स्थल पर प्रदर्शित की जाने वाली झाकियां को लेकर बैठक आयोजित की गई। उप विकास आयुक्त ने बारी बारी से सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों से उनके द्वारा प्रदर्शित किए जाने वाली झाकियां की विषय वस्तु आदि का समीक्षा किया एवं निर्देश दिया कि सभी विभाग अपने अपने विषय वस्तु के अनुसार ससमय झांकी का निर्माण कर लेंगे। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि झाकी का निर्माण गुणवत्ता पूर्ण के साथ साथ सकारात्मक संदेश देने वाली होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि झाकी के विषय वस्तु संबंध में संक्षिप्त नोट या राइट अप सभी विभाग ससमय उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे।

उक्त बैठक में जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, परिमल कुमार, विकास शाखा प्रभारी, हेमंत कुमार, सहायक निदेशक, सामाजिक सुरक्षा, आशीष अमन,जिला प्रोग्राम पदाधिकारी, जिला कृषि पदाधिकारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, मनरेगा, जिला परिवहन पदाधिकारी सहित अन्य विभाग के पदाधिकारी उपस्थित थे।

जिला राजद ने मकर संक्रांति सम्मान भोज का आयोजन किया

मो.सदरे आलम नौमानी

सीतामढ़ी :पूर्व विधायक सह जिला अध्यक्ष राजद सुनील कुमार कुशवाहा के द्वारा दलित अल्पसंख्यकों के बीच आयोजित राष्ट्रीय जनता दल के मकर संक्रांति सम्मान भोज कार्यक्रम के तहत अंबेडकर स्थल, पुनौरा, सीतामढ़ी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत महादलित परिवारों के बीच चूड़ा दही का सस्नेह सह भोज का आयोजन किया गया।इस सम्मान भोज में मुख्य रूप से बाजपट्टी विधायक केश यादव जी, प्रदेश उपाध्यक्ष राजद मो शफीक खा, प्रदेश महासचिव बृजमोहन मंडल, जिला परिषद अध्यक्ष आदिती कुमारी, राजद वरिष्ठ नेता मनोज कुमार, जिला प्रधान महासचिव मो जलालुद्दीन खा, जिला युवा अध्यक्ष रौशन कुमार यादव, युवा प्रदेश सचिव जवाहर यादव, डॉ मंसूर आलम, राजीव भंडारी जी, कैलाश बिहारी यादव, गौहर शमी, अमीरुल हसन ,इफ्तिखार आलम ,पूर्व मुखिया बैद्यनाथ हाथी, मुन्ना यादव खैरका ,खेदु महतो ,रामनरेश यादव ,दिनेश महतो ,मो मंजर अंसारी, सुनील राम, सावन कुमार राम ,गमहीरा राय, सुरेंद्र दादा, भगवान यादव, भदोही साहनी आदि मौजूद थे।

18 जनवरी को शोषित इंकलाब पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नागमणि का सीतामढ़ी आगमन

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सीतामढ़ी । शोषित इंकलाब पार्टी के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह परिहार के पूर्व जिला पार्षद प्रो गौहर सिद्दीकी ने कहा कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व केंद्रीय मंत्री नागमणि 18 जनवरी को सीतामढ़ी आयेंगे। उन्होंने कहा कि 11 बजे सर्किट हाउस में प्रेस को संबोधित करेंगे। वहीं मेहसौल स्थित हाजी मो हशमत हुसैन के आवास पर कार्यकताओं से मिलेंगे। बथनाहा प्रखण्ड के कोइरी में 2 बजे सभा को संबोधित करेंगे। पार्टी द्वारा 23 फरवरी 2025 को गांधी मैदान पटना में महारैली का आयोजन किया जा रहा है। श्री नागमणि के सीतामढ़ी दौरा में पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सह प्रवक्ता सैयद नदीम आलम साथ होंगे।

रक्तदान एवं उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित हुए डॉक्टर कुणाल कौशल

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो. अबु बकर सिद्दीकी

- -राज्य मे सबसे ज्यादा 50 ब्लड डोनेशन कैंप आयोजन, 3369 यूनिट ब्लड का संग्रह को लेकर सम्मानित

मधुबनी जिला के ब्लड बैंक प्रभारी डॉ कुणाल कौशल को रक्तदान करने, रक्तदान के लिए लोगों को प्रेरित करने एवं कैंप के आयोजन जैसे उत्कृष्ट कार्यो के लिए पटना के बापू सभागार मे स्वास्थ्य विभाग के कार्यक्रम में डॉक्टर कुणाल कौशल को रक्त केंद्र " स्वास्थ्य प्रक्षेत्र मे वर्ष 2024" मे उत्कृष्ट कार्य हेतू स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय व अपर मुख्य सचिव श्री प्रत्यय अमृत से प्रशसित पत्र देकर सम्मानित किया गया. डॉ मधुबनी जिले को ही मिला है उन्होंने बताया मधुबनी जिले में राज्य में सबसे ज्यादा ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन किया गया !

सीएम योगी ने सुनीं 200 लोगों की फरियाद

जनता दर्शन में बोले-भू-माफियाओं पर लें कड़ा एक्शन, पैसों की कमी से न रुके किसी का इलाज

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखनाथ मंदिर में बुधवार सुबह जनता दर्शन कार्यक्रम में 200 से अधिक फरियादियों की समस्याएं सुनीं। सीएम ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी शिकायतों का समाधान 15 दिनों के भीतर किया जाए और समाधान के बाद फरियादियों से फीडबैक भी लिया जाए। मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य सेवाओं पर विशेष जोर देते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश में कोई भी इलाज के अभाव में परेशान न हो। उन्होंने आयुष्मान कार्डधारकों के इलाज में किसी भी रुकावट को दूर करने और पात्र व्यक्तियों के कार्ड जल्द से जल्द बनवाने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को सख्त हिदायत दी कि इलाज में किसी भी प्रकार की लापरवाही अस्वीकार्य होगी।

जमीनों पर अवैध कब्जों की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए सीएम योगी ने भू-माफियाओं पर कड़ी कार्रवाई के आदेश दिए। उन्होंने अधिकारियों को साफ शब्दों में कहा कि यूपी में भू-माफियाओं के लिए कोई जगह नहीं है। ऐसे मामलों में तत्काल कार्रवाई करते हुए दोषियों पर शिकंजा कसा जाए। आवास के लिए फरियाद लेकर आए जरूरतमंदों को मुख्यमंत्री ने भरोसा दिलाया कि सभी पात्रों को मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत मकान उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि हर जरूरतमंद को पक्का मकान मिले। जनता दर्शन में अपनी माताओं के साथ आए बच्चों से सीएम ने विशेष रूप से संवाद किया। उन्होंने बच्चों को आशीर्वाद दिया और चॉकलेट भेंट की, जिससे माहौल और अधिक सहज हो गया। मंगलवार को मुख्यमंत्री ने गोरखनाथ मंदिर में मकर संक्रांति के अवसर पर परंपरागत खिचड़ी चढ़ाई और पूजा-अर्चना की। इसके साथ ही गोरखपुर में प्रसिद्ध खिचड़ी मेले की शुरूआत हो गई। सीएम योगी जब भी गोरखपुर में होते हैं, सुबह-सुबह गोरखनाथ मंदिर में आम जनता से मिलकर उनकी समस्याएं सुनते हैं और समाधान के लिए अधिकारियों को निर्देश देते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, ह्महमारा उद्देश्य है कि प्रदेश का हर व्यक्ति न्याय और सहायता पाए। किसी भी प्रकार की लापरवाही या देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

संक्षिप्त डायरी

जिलाधिकारी ने जनसुनवाई के दौरान आई 74 शिकायतों में से ज्यादातर का किया मौके पर डिस्पोजल

संवाददाता

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश के बेमिसाल हमीरपुर जिलाधिकारी घनश्याम मीना ने कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनसुनवाई कर आम लोगों की शिकायतों को सुनकर अधिकारियों को प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी के जनसुनवाई के दौरान कलेक्ट्रेट में आए हुए फरियादियों को जिलाधिकारी ने ठंड से बचाव के दृष्टिगत कंबल वितरित किए। जनसुनवाई में लगभग 74 शिकायते प्राप्त हुई जिनमें से अधिकांश का जिलाधिकारी ने त्वरित ढंग से मौके पर निस्तारण कर दिया। शेष शिकायतों के निस्तारण हेतु जिलाधिकारी ने समस्त एसडीएम , खंड विकास अधिकारी व अन्य संबंधित अधिकारियों के साथ वर्चुअल/ जूम एप के माध्यम से बैठक कर उनके तत्काल निस्तारण हेतु निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि सभी एसडीएम ,बीडीओ व अन्य संबंधित अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से अपने कार्यालय में जनसुनवाई कर जन समस्याओं का त्वरित ढंग से निस्तारण किया जाए इसमें किसी भी तरह किसी शिथिलता न बरती जाए। जिलाधिकारी ने कहा की जनसुनवाई, आईजीआरएस व अन्य माध्यमों से प्राप्त होने वाले प्रकरणों का सभी संबंधित अधिकारियों द्वारा मौके पर जाकर गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारण कर उसकी वख्त से आख्या दी जाए।

लखनऊ नगर निगम मुख्यालय पर हंगामा

लखनऊ । हजरतगंज स्थित नगर निगम मुख्यालय पर बुधवार को आजाद समाज पार्टी कार्यकताओं ने हंगामा किया। ठेकेदारी प्रथा के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। उनका कहना था कि सफाई कर्मचारी नगर निगम की रीढ़ की हड्डी हैं। पूरे शहर को साफ-सुथरा बनाने की जिम्मेदारी इनके कंधों पर है। इन्हें परमानेंट किया जाए। प्रदर्शनकारी बोले- ठेका प्रथा और संविदा पर कर्मचारियों को रखकर इनका शोषण किया जा रहा है। संविदा कर्मचारियों को 5 हजार से 7 हजार रुपए वेतन मिलता है। इसमें घर चला पाना संभव नहीं है। आसपा कार्यकताओं ने कहा- प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम इतना वेतन दिया जाए कि वह अपने बच्चों की पढ़ाई, दवा-इलाज की जरूरत को पूरा कर सकें। सफाई कर्मचारियों को विशेष स्वास्थ्य बीमा और पेंशन योजना का लाभ दिया जाए। उन्होंने कहा-मांग पूरी नहीं हुई तो पूरे प्रदेश में आंदोलन किया जाएगा। लखनऊ समेत पूरे प्रदेश में कूड़ा उठाने के काम को ठप कर दिया जाएगा। आसपा प्रदेश अध्यक्ष अनिकेत धानुक ने चेतावनी देते हुए कहा- सरकार की ईंट से ईंट बजा देंगे। सफाई कर्मचारी कोरोना योद्धा है। कोरोना के समय में चिकित्सकों की सबसे ज्यादा मदद सफाई कर्मियों ने की थी। उन्होंने कहा- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ भारत मिशन को सफल बनाने में सफाई कर्मियों का मुख्य योगदान रहा है।

नई दिशाः सेवानिवृत्त सैनिकों एवं शहीद परिजनों का हुआ सम्मान

संवाददाता

कसया, कुशीनगर। सेना दिवस के अवसर पर नयी दिशा पर्यावरण सेवा संस्थान द्वारा बुधवार को हाटा विकास खण्ड स्थित जूनियर हाईस्कूल भठही राजा के परिसर में सैनिक अभिनंदन समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस मौके पर जनपद के अमर शहीदों के परिजनों एवं वर्ष 2024 में सेना से सेवानिवृत्त सभी सैनिकों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डॉ0 राम जियावन मौर्य ने कहा कि सैनिकों के अभिनंदन समारोह का आयोजन उनकी सेवा और समर्पण के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने जैसा है। हम निश्चिंत भाव से दुनियादारी या देश के विकास के अन्य कार्यों में लग पाते हैं, इसका कारण सैनिक हैं। वे हमें सीमाओं के ओर से निश्चिंत रखते हैं तभी हम अपनी ऊर्जा को अन्य क्षेत्रों में लगा पाते हैं।अध्यक्षता करते जिला सैनिक कल्याण अधिकारी विंग कमांडर आलोक सक्सेना ने कहा कि सैनिक सम्मान समारोह सैनिकों को यह अहसास कराता है कि देश हमारे समर्पण और सेवा को महसूस कर रहा है। नयी दिशा द्वारा पूरे जनपद के शहीदों के परिजनों और अवकाश प्राप्त सैनिकों को सम्मानित करने का कार्यक्रम बहुत पवित्र है।कार्यक्रम का शुभारम्भ भारत माँ एवं सरस्वती माँ की प्रतिमा के समक्ष पुष्पार्चन व दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। संचालन मजीबुल्लाह राही, अतिथियों का स्वागत संस्था सचिव डॉ0 हरिओम मिश्र व आभार प्रधान सुभाष कान्दू ने किया।

इस अवसर पर पूर्व विधायक कुशीनगर रजनीकांत मणि त्रिपाठी, भंते डॉ0 नंद रतन थेरो, पूर्व प्राचार्य डॉ0 दयाशंकर तिवारी, प्रो0 अमृतांशु शुक्ल, प्रो0 गौरव तिवारी, डॉ0 निगम मौर्य, डॉ0 सौरभ द्विवेदी, ब्लाक प्रमुख कसया प्रतिनिधि अमरजीत यादव, जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि सतवंत यादव, ब्रजेश त्रिपाठी, आलोक श्रीवास्तव, आचार्य चंद्रिका शर्मा, राजेश शुक्ल, नरेंद्र नाथ त्रिपाठी, देवानंद धर दुबे, शम्भू राव, प्रवीण राव, अमित सिंह, हरेंद्र चौरसिया, डॉ0 वीना कुमारी, त्रिलोकी नाथ श्रीवास्तव, सुरेश गुप्त, विपिन बिहारी श्रीवास्तव, चंदेश्वर शर्मा परवाना, कृष्ण मोहन, पेशकार गौड़, हरीन्द्र यादव, दशरथ यादव, अजय कुमार, राजेश चौधरी, राहुल कुमार, गोल्डन, अमर नाथ, आदित्य पांडेय, ऋषभ राव, धीरज राव, अश्विनी द्विवेदी, सुनील मिश्र, अतुल भारती, कन्हैया मिश्र, अभिषेक पांडेय, रामदेव गौड़, त्रियोगी नाथ मिश्र आदि उपस्थित रहे।

महिला टीचर को कुत्तों ने दौड़ाया, स्कूटी से गिरीं, मौत

कानपुर । स्कूटी से जा रही महिला टीचर को कुत्तों ने दौड़ा लिया। संतुलन बिगड़ने से योगा टीचर सड़क पर गिर गईं। हेलमेट छिटक कर दूर जा गिरा। सिर में गंभीर चोट लगने के कारण उनकी मौत हो गई। हादसा मंगलवार रात 8:30 बजे काकादेव क्षेत्र के नवीन नगर में हुआ। वहां मौजूद हॉस्टल के छात्र तत्काल अस्पताल लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने टीचर को मृत घोषित कर दिया। अस्पताल पहुंचे पति सुरेश यादव फफक कर रो पड़े। उन्होंने कहा- 19 फरवरी को हमारी शादी की 35वीं सालगिरह है। अब केक कौन लाएगा ? हम दोनों को 2 फरवरी को महाकुंभ में स्नान करने जाना था, अब अस्थियां लेकर जाना पड़ेगा। बर्रा-1 जेड-1 ब्लॉक निवासी सुरेश यादव की पत्नी अन्नपूर्णा देवी (56) योग शिक्षिका थीं। वह घर-घर जाकर योगा सिखाती थीं। मंगलवार को वह काकादेव थाना क्षेत्र के नवीन नगर में योगा सिखाने गई थीं। स्कूटी से घर लौट रही थीं। गुरुगोविंद सिंह स्टेडियम के पास आवारा कुत्तों ने उन्हें दौड़ा लिया। अन्नपूर्णा ने बचने के लिए स्कूटी भगाई और असंतुलित होकर सड़क किनारे बिखरी ईंटों पर जा गिरीं। हुक खुला होने से हेलमेट छिटक गया, इससे सिर में गंभीर चोट लग गई। वहां मौजूद हॉस्टल के छात्र उन्हें पास के पनेसिया हॉस्पिटल लेकर पहुंचे। जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। सूचना पर काकादेव थाना प्रभारी मनोज भदौरिया हॉस्पिटल पहुंचे। महिला के पर्स से बरामद दस्तावेज के आधार पर टीचर की शिनाख्त कर परिजनों को फोन कर अस्पताल बुलाया। मौत की खबर सुनते ही परिवार में कोहराम मच गया। पति सुरेश यादव ने बताया कि वह मूल रूप से देवरिया के गौरी बाजार के रहने वाले हैं। अन्नपूर्णा चतुवेर्दी से उन्होंने प्रेम विवाह किया था। पहले वह लोग गुमटी नंबर पांच में किराए पर रहते थे। हाल ही में वह बर्रा जेड वन ब्लॉक निवासी चंद्रपाल सिंह सचान के मकान में शिफ्ट हुए थे। वह साले राकेश चतुवेर्दी के सचेंडी स्थित तकिया बनाने के कारखाने में काम करते हैं। हादसे के वक्त वह कारखाने में ही थे। करीब 9 बजे फैक्ट्री में काम करने वाले खाड़ेपुर निवासी दीपक उनके पास आया। उसने कहा कि गोपाल ने उनको बुलाया है। वह मुझे अस्पताल लेकर पहुंचा। यहां पर मेरे सालों के साथ मेरी बेटी दिव्या और दामाद सुपास भी खड़े थे। मुझे देखते ही बेटी दौड़कर मेरे पास आई और रोते हुए बोली- पापा मम्मी नहीं रहीं। उनका सड़क हादसे में निधन हो गया।

डॉक्टर की पत्नी की श्रीदेवी की तरह थाईलैंड में मौत

लखनऊ । प्रियंका की थाइलैंड में मौत हो गई। श्रीदेवी की तरह होटल के बाथटब में शव मिला। प्रियंका अपने डॉक्टर पति आशीष और बच्चों के साथ घूमने गई थीं। प्रियंका का शव देर रात थाईलैंड से लखनऊ पहुंचा। प्रियंका के पिता ने फिर से पोस्टमॉर्टम कराने की तहरीर दी है। सोमवार को प्रियंका के पिता ने पीजीआई थाने में दामाद पर बेटी की हत्या का करने की शिकायत दर्ज कराई थी। पिता का आरोप है कि दामाद बेटी को थाईलैंड घुमाने के बहाने अपने साथ ले गया। जहां उसकी हत्या करके खुद लखनऊ आ गया। प्रियंका के डॉक्टर पति का कहना है- मेरे पास एवीडेंस हैं। प्रियंका को पार्टी में शराब पीने का शौक था। परिवार के साथ शराब पार्टी करती थी। प्रियंका के पिता सत्यनारायण ने कहा- हमारे तीन बेटी पुष्पा, प्रियंका, संध्या और एक बेटा विकास शर्मा है। प्रियंका ने फाइनेंस से एमबीए की थी। उसकी जॉब एम्स पटना में अकाउंट डिपार्टमेंट में लग गई। वहीं पर सीनियर रेजिडेंट के पद पर डॉक्टर आशीष मिश्रा तैनात थे। लखनऊ के होने के कारण डॉक्टर से प्रियंका की दोस्ती हो गई। 3 दिसंबर, 2017 में परिवार की रजामंदी से दोनों की शादी हुई। नाती के जन्म के बाद से आशीष का रवैया बदल गया। वह मारपीट करने लगा। वह प्रियंका के साथ हमेशा मारपीट करता, लेकिन प्रियंका ने कभी कुछ नहीं बताया। सितंबर 2023 को उसके साथ हाथापाई की गई थी। इस पर आशीष को समझाने के लिए घर गए। वह काफी नशे में था। बेटे विकास को थप्पड़ जड़ दिया। इस पर आशीष के पिता ने उसे मारा तो वह घर के अंदर गया और चाकू लेकर आ गया। बीच बचाव करने पर छोटी बेटी संध्या के सीने में मार दिया। पुलिस के पास शिकायत की तो उसने भी क्रॉस केस दर्ज करवा दिया। कुछ दिन बाद आशीष के पिता के कहने पर समझौता हो गया। प्रियंका वापस ससुराल चली गई। थाईलैंड में हुए प्रियंका के पोस्टमॉर्टम की रिपोर्ट के मुताबिक उसकी मौत कार्डियो पलमोनरी फेल होने से हुई है। कुछ इसी तरह अभिनेत्री श्रीदेवी की भी मौत हुई थी। उनका भी शव दुबई की एक होटल में बाथटब में मिला था। हालांकि प्रियंका के परिजनों का कहना है कि वह दोबारा पोस्टमॉर्टम कराना चाहते हैं। इस पर पुलिस ने कहा कि जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। प्रियंका के पिता सत्यनारायण ने कहा- दामाद ने बताया कि मसाज कराकर आया। इसके बाद बेटे को जूस दिलाने चला गया। तभी प्रियंका बॉथ टब में नहाने गई और हादसा हो गया। पहली बात तो ये कि वो बेवक्त नहाने क्यों जाएगी। दूसरी उसे पानी से डर लगता था। वह पानी से दूर ही रहती थी। दामाद ने बताया कि प्रियंका ने पार्टी के दौरान ड्रिंक की थी। आज तक प्रियंका शराब नहीं पी। हां...अगर वहां पी होगी तो एक से दो पैग। इससे ज्यादा वो नहीं पी सकती। डॉक्टर आशीष श्रीवास्तव का कहना है कि सभी आरोप बेबुनियाद है। वहां पर जो भी कार्रवाई हो रही है, उसका एक कॉमन ग्रुप बना है। जिसमें पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से लेकर शव को लखनऊ भेजे जाने तक की डिटेल शेयर हो रही है। हम क्यों कुछ छिपाएंगे। अगर हत्या की बात है तो पत्नी के साथ हैदराबाद, मनाली, थाईलैंड सहित 7 जगह ट्रिप किया है। इसके पहले क्यों नहीं मारा? डॉक्टर आशीष का कहना है कि प्रियंका को पार्टी के दौरान ड्रिंक का शौक था। अपने जीजा मयंक और बहन संध्या के साथ कई बार शराब पार्टी कर चुकी है। 24 अक्टूबर को सासू मां के निधन के बाद से थाईलैंड जाने के पहले करीब 5 से 6 बार इन लोगों ने पार्टी की है।

लखनऊ के चाय वाले का मशहूर शर्मा चालान हुआ

लखनऊ। नगर निगम टीम ने बुधवार दोपहर नोवेल्टी चौराहा, लालबाग और नगर निगम मुख्यालय के पास कार्रवाई की। अतिक्रमण करने पर मशहूर शर्मा चाय वाले का चालान काटा गया। इसके साथ ही सड़क पर अवैध दुकान लगाने वालों से 29 हजार रुपए जुमार्ना वसूला। नगर निगम मुख्यालय के पास शर्मा चाय वाले की दुकान के पास अतिक्रमण मिला। यहां आए दिन ट्रैफिक जाम की स्थिति बन जाती है। दुकान को अतिक्रमण मुक्त और ट्रैफिक व्यवस्था सुचारू बनाए रखना के लिए दुकान मालिक को हिदायत दी। 5 हजार रुपए का जुमार्ना वसूला गया। नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह ने बताया कि शर्मा चाय वाले, अल-जाएका नॉनवेज और सरदार जी छोले- भटूरे वाले, इन सभी लोगों का 5-5 हजार का चालान काटा गया। अतिक्रमण को लेकर सभी जोन के जोनल अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए हैं। शहर को अतिक्रमण और जाम से मुक्त करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में यह अभियान चलाया जा रहा है। जोनल अधिकारी ओम प्रकाश ने बताया कि कई बार हिदायत दी गई, जो दुकानदार हिदायत के बाद भी दुकान लगा रहे हैं। उनके खिलाफ कार्रवाई की गई है।

लखीमपुर खीरी में 12वीं तक के स्कूल रहेंगे बंद, शीतलहर के चलते छुट्टी का नया आदेश

लखीमपुर। उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जनपद में भीषण ठंड, शीतलहर और कोहरे को देखते हुए एक बार फिर स्कूलों में छुट्टी कर दी गई है। बीएसए प्रवीण कुमार तिवारी ने बताया कि जिलाधिकारी के निर्देश पर ठंड और शीतलहर के चलते 16 जनवरी से 18 जनवरी तक कक्षा एक से आठ तक के सभी विद्यालयों में अवकाश घोषित किया गया। शाम को 12वीं तक स्कूलों में भी 18 जनवरी तक के अवकाश का आदेश जारी कर दिया। बता दें कि शीतकालीन अवकाश के बाद बुधवार को स्कूल खुले थे। घने कोहरे के बीच विद्यार्थी ठिठुरते हुए पहुंचे थे। अवकाश बढ़ने से छात्र-छात्राओं को राहत मिली है। 18 जनवरी यानी शनिवार तक अवकाश है। 19 जनवरी को रविवार है। अब 20 जनवरी को स्कूल खुलेंगे। हालांकि अवकाश के दौरान शिक्षकों व अन्य स्टाफ को स्कूल में उपस्थिति रहने के निर्देश दिए हैं। तराई के जनपद में लगातार दूसरे दिन घने कोहरे और भीषण ठंड से जनजीवन प्रभावित रहा। कोहरे ने सर्द हवा से ठिठुर रहे लोगों की परेशानी और बढ़ा दी। बुधवार को पूरा जिला घने कोहरे की चादर से ढक गया। सुबह जरूरी काम से और स्कूल जाने वाले शिक्षक शिक्षिकाओं को काफी दिक्कत का सामना करना पड़ा। कोहरे के कारण लोगों को सवारियां मिलने ने भी दिक्कत हुई। बुधवार को सुबह न्यूनतम तापमान नौ डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। मौसम विभाग ने शनिवार तक घना कोहरे छाने का अलर्ट जारी किया है। बरेली और पीलीभीत में सर्दी और कोहरे के चलते बुधवार को आठवीं तक के स्कूल बंद रहे। शीतकालीन अवकाश के बाद बुधवार को स्कूल खुलने थे, लेकिन घने कोहरे और भीषण ठंड को देखते हुए डीएम के आदेश पर दोनों जिलों के स्कूलों में एक दिन का अवकाश बढ़ा दिया गया।

संविधान गौरव अभियान को लेकर भाजपा संयुक्त मोर्चा की बैठक

संवाददाता

कुशीनगर। भारतीय जनता पार्टी द्वारा चलाए जा रहे संविधान गौरव अभियान को लेकर भाजपा की संयुक्त मोर्चा बैठक रविन्द्र नगर भाजपा कार्यालय में सम्पन्न हुई। बुधवार को हुई बैठक को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय ने कहा कि भारत के संविधान को निर्मित हुये 75 वर्ष हो रहे हैं। इस अवसर पर संविधान गौरव अभियान को एक उत्सव के रूप में भारतीय जनता पार्टी द्वारा मनाया जा रहा है। भाजपा के सभी मोर्चे इस अभियान को सफल बनाने में पूरी ताकत लगा दें। संविधान गौरव अभियान की जानकारी देते हुए जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय ने बताया कि 19 जनवरी को रविन्द्र नगर स्थित भाजपा कार्यालय में अनुसूचित जाति मोर्चा द्वारा हमारा संविधान-हमारा स्वाभिमान विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। 15 से 25 जनवरी तक स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय एवं सभी शिक्षा संस्थानों में हमारा संविधान-हमारा स्वाभिमान विषय पर क्विज, निबंध एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन कराना होगा। 18 से 25 जनवरी तक युवा मोर्चा द्वारा अनुसूचित जाति छात्रावासों एवं कॉलेज संपर्क के माध्यम से युवाओं में भारत रत्न डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर के योगदान और भाजपा की संविधान के प्रति प्रतिबद्धता को प्रचारित किया जायेगा। 20 से 25 जनवरी तक अनुसूचित जाति वाले बाहुल्य जिलों में रैली एवं सभा का आयोजन होगा। 25 जनवरी को सभी बूथ एवं मण्डल पर पार्टी के कार्यकर्ता आमजन के साथ एकत्रित होकर के भारतीय संविधान के प्रस्ताव एवं नीति निर्देशक तत्व को पढ़ेगे व संक्षिप्त में इस पर चर्चा करेंगे। इस अवसर पर जिला मंत्री विवेकानंद शुक्ल,अनुसूचित जाति मोर्चा जिलाध्यक्ष रविन्द्र प्रसाद, महिला मोर्चा जिलाध्यक्षा चन्द्र प्रभा पाण्डेय, युवा मोर्चा जिला संयोजक शैलेन्द्र तिवारी, विश्वरंजन कुमार आनन्द, नमो नारायण मौर्य,रुपम सिंह,रानी शुक्ला,बन्दना ठाकुर,रिम्पा सिंह,अंजली मौर्य,वर्षा तिवारी, सीता गुप्ता, सुगन्धा सिंह, नवनीत तिवारी,सत्यम शुक्ल, भृगुराशन प्रसाद, धर्मेंद्र प्रसाद, नकुल वर्मा, नवनीत सिंह संजू सहित सभी मोर्चो के पदाधिकारी उपस्थित थे।

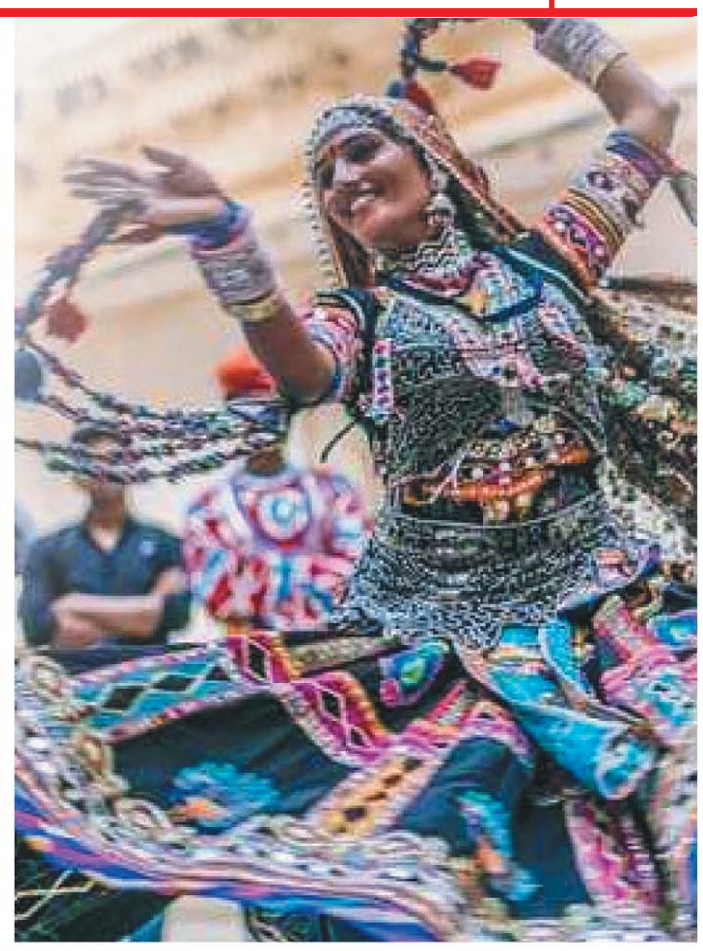

पुष्कर में सैलानी उठाते हैं मरुस्थल का लुत्फ, लजीज व्यंजन और लोक नृत्यों का है संगम

अजमेर जिला रेगिस्तानी जिलों में शामिल नहीं है परन्तु अजमेर का पुष्कर चारों और से रेगिस्तान की रेत से घिरा है। यहां जेसलमेर में सम जैसे आकर्षक रेतीले धोरें नहीं हैं परंतु सैलानियों को राजस्थान की ग्रामीण संस्कृति से बखूबी परिचित कराते हैं।

आकर्षण

पुस्कर में पर्यटकों के लिए कार्तिक पूर्णिमा पर ऊँट उत्सव, अंतर्राष्ट्रीय हॉट एयर बैलून फेस्टिवल, सावित्री मन्दिर पर केबल राइड, वराह घाट पर पुष्कर आरती, रॉक क्लाइम्बिंग, रैपलिंग, क्रैड बाइकिंग, साइकिलिंग, सनसेट के साथ केमल सफारी, पूरी रात केमल सफारी, केमल सफारी के साथ लक्ज़री नाईट कैंपिंग, केमल कार्ट सफारी, जीप सफारी, हॉर्स राइडिंग, ज़िप्लिनिंग मनोरंजन के प्रमुख आकर्षण हैं। पर्यटक रेगिस्तान के अनदेखे क्षेत्र के इन आकर्षणों का यहाँ लुत्फ उठा सकते हैं। जयपुर के पास रेगिस्तान देखने की इच्छा रखने वाले पर्यटकों के लिए जयपुर से मात्र 150 किमी. एवं अजमेर से 11 किमी.दूरी पर पुष्कर सर्वश्रेस्ठ विकल्प है। पूरे वर्ष ही भारत एवं अन्य देशों के पर्यटक पुष्कर का डेजर्ट क्षेत्र देखने आते हैं और ग्रामीण केमल सफारी, नाईट कैंपिंग,लजीज व्यंजन और लोक नृत्यों का लुत्फ उठाते हैं।

प्रतिवर्ष यहां पर कार्तिक पूर्णिमा को पुष्कर मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक भी आते हैं। हजारों हिन्दु लोग इस मेले में आते हैं और अपने को पवित्र करने के लिए पुष्कर झील में स्नान करते हैं। भारत में किसी पौराणिक स्थल पर आम तौर पर जिस संख्या में पर्यटक आते हैं, पुष्कर में आने वाले पर्यटकों की संख्या उससे कहीं ज्यादा है। इनमें बडी संख्या विदेशी सैलानियों की है, जिन्हें पुष्कर खास तौर पर पसंद है। हर साल कार्तिक महीने में लगने वाले पुष्कर ऊंट मेले ने तो इस जगह को दुनिया भर में अलग ही पहचान दे दी है। मेले के समय पुष्कर में कई संस्कृतियों का मिलन देखने को मिलता है। एक तरफ तो मेला देखने के लिए विदेशी सैलानी बडी संख्या में पहुंचते हैं, तो दूसरी तरफ राजस्थान व आसपास के तमाम इलाकों से आदिवासी और ग्रामीण लोग अपने-अपने पशुओं के साथ मेले में शामिल होने आते हैं। मेला रेत के विशाल मैदान में लगाया जाता है। ढेर सारी कतार की कतार दुकानें, खाने-पीने के स्टाल, सर्कस, झूले और न जाने क्या-क्या। ऊंट मेला और रेगिस्तान की नजदीकी है इसलिए ऊंट तो हर तरफ देखने को मिलते ही हैं। वर्तमान में इसका स्वरूप विशाल पशु मेले का हो गया है।

मनोरंजन

दिलचस्प ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता , सजे-धजे ऊंट का नृत्य, मटकीफोड़, लम्बी मूंछें और दुल्हन की प्रतियोगिताएं पर्यटकों का खूब मनोरंजन करती हैं। रात्रि में लोक कलाकारों के सुर-ताल की जुगलबंदी और रंगबिरंगे नृत्यों से पर्यटक आनन्दित होते हैं। अनेक प्रदर्शनियां भी सजाई जाती हैं। परेड और दौड़ को हजारों देशी और विदेशी पर्यटक रुचिपूर्वक देखते हैं। स्मृतियों को संजोने के लिए पर्यटक हर तरफ फ़ोटो खीचते नज़र आते हैं। पर्यटकों के लिए पुष्कर में सरोवर एवं कई मन्दिर भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय हॉट एयर बैलून भी प्रबल आकर्षण बन गया है।

ब्रह्मा मन्दिर

पुष्कर सुरण्य नागा पहाड़ की गोद में रेतीले धरातल पर बसा है। पुष्कर का महात्म्य वेद, पुराण, महाकाव्य, साहित्य, शिलालेख एवं लोक कथाओं में वर्णित है। पुष्कर को मंदिरों के शहर के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ लगभग 500 मंदिर बताए जाते हैं। ब्रह्माजी का मंदिर देश भर में अकेला प्रसिद्ध मन्दिर है। धरातल से करीब 50 फीट की ऊंचाई पर स्थित मन्दिर के प्रवेश द्वार के भीतरी भाग पर ब्रह्मा का वाहन राजहंस है। प्रमुख मंदिर के गर्भगृह में ब्रह्मा जी की बैठी हुई मुद्रा में प्रतिमा स्थापित है। चतुर्मुखी इस प्रतिमा के तीन मुख सामने से दिखाई देते हैं। प्रतिमा को करीब 800 वर्ष पुराना बताया जाता है। सैंकड़ों वर्षों से प्रतिमा का प्रतिदिन जलस्नान व पंचामृत अभिषेक किया जाता है। मंदिर के आंगन में ब्रिटिशकालीन एक-एक रूपये के सिक्के जड़े हैं। संगमरमर के कलात्मक स्तंभ मोह लेते हैं। मंदिर परिक्रमा मार्ग में सावित्री माता का मंदिर स्थापित किया गया है। परिसर में अन्य मन्दिर भी दर्शनीय हैं।

पुष्कर सरोवर

अर्धचन्द्राकार पवित्र पुष्कर सरोवर प्रमुख धार्मिक पर्यटक स्थल है। यहां 52 घाट बने हैं, जिन पर 700 से 800 वर्ष प्राचीन विभिन्न देवी-देवताओं के मंदिर बनाए गए हैं। देश के चार प्रमुख सरोवरों में माना जाने वाला पुष्कर सरोवर की धार्मिक आस्था का पता इसी बात से चलता है कि यहां स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। प्रातःकाल की वेला में जब सूर्योदय होता है तथा गोधूलि की वेला में जब सूर्यास्त होता है पुष्कर का दृष्य अत्यंत ही मनोरम होता है। इस दृष्य को देखने के लिए घाटों पर सैलानियों और श्रद्धालुओं का जमावड़ा देखा जा सकता है।

वराह मन्दिर

प्राचीनता की दृष्टि से करीब 900 वर्ष पुराना वराह मंदिर का निर्माण अजमेर के चैहान शासक अर्णीराज ने कराया था। पुष्कर सरोवर के वराह घाट के पास स्थित वराह चौंक से एक रास्ता बस्ती के भीतर इमली मोहल्ले तक जाता है, जहां यह विशाल मंदिर स्थापित है। करीब 30 फुट ऊंचा मंदिर, चौड़ी सीढ़ियां तथा किले जैसा प्रवेश द्वार आकर्षण का केन्द्र है। बताया जाता है कि कभी मंदिर का शिखर 125 फीट ऊंचा था, जिस पर सोन चराग (स्वर्ण दीप) जलता था, जो दिल्ली तक दिखाई देता था। मुख्य मंदिर में विष्णु के अवतार वराह भगवान की मूर्ति स्थापित है। मूर्ति के नीचे सप्त धातु से निर्मित करीब सवा मन वजन की लक्ष्मी-नारायण की प्रतिमा है। यहीं पर बून्दी के राजा द्वारा भेंट किया गया लोहे का सवा मनी भाला रखा गया है। जलझूलनी ग्यारस पर लक्ष्मी-नारायण की सवारी धूमधाम से निकाली जाती है। चैत्र माह में वराह नवमी के दिन भगवान का जन्मदिन मनाया जाता है। जन्माष्टमी व अन्नकूट के अवसर पर उत्सव आयोजित किए जाते हैं। मंदिर में वेशेष कर चावल का प्रसाद चढ़ता है। वराह घाट पर संध्या आरती का दृश्य देखे ही बनता है।

श्री रमा वैकुण्ठ मंदिर

ब्रह्मा जी के मंदिर के बाद इस मंदिर का विशेष महत्व है, जिसे रंगा जी का मंदिर भी कहा जाता है। मंदिर करीब 20 बीघा भूमि पर बना है। मंदिर का प्रवेश द्वार आकर्षक एवं विशाल है। भीतर जाने पर सामने ही रमा वैकुण्ठ का मंदिर नजर आता है। मंदिर के ऊतंग गोपुरम पर 350 से अधिक देवताओं के चिन्ह बने हैं। यह गोपुरम दक्षिण भारतीय स्थापत्य कला शैली का अनुपम उदाहरण है। मंदिर के सामने प्रांगण में ही एक बड़ा स्वर्णिम गरूड़ ध्वज नजर आता है। मंदिर के पास अभिमुख गरूड़ मंदिर स्थापित है। मुख्य मंदिर के चारों तरफ पक्के दालान के बीच में तीन-चार फीट ऊंचे चैकोर बड़े संगमरमरी चबूतरे पर मंदिर स्थित है। मुख्य प्रतिमा व्यंकटेश भगवान विष्णु की काले पत्थरों की आभूषणों एवं वस्त्रों से सुसज्जित है। इसी को वैकुण्ठ नाथ की प्रतिमा कहा जाता है। मंदिर में ही श्रीदेवी, तिरूपति नाथ, भूदेवी, लक्ष्मी व नरसिंह की मूर्तियां भी हैं। परिक्रमा मार्ग में दोनों तरफ दीवारों पर आकर्षक रंगीन चित्र एवं संगमरमर के कलात्मक स्तंभ बने हैं। सम्पूर्ण परिक्रमा मार्ग अत्यंत लुभावना लगता है।

रंगनाथ वेणुगोपाल मंदिर

दक्षिण भारत स्थापत्य शैली पर आधारित भगवान रंगनाथ वेणुगोपाल का विशाल मंदिर वराह चौंक के पास स्थित है। मंदिर का निर्माण दक्षिण भारत के एक सेठ पूरनमल गनेरीवाल द्वारा 1844 ईस्वी में करवाया गया था। मंदिर का गोपुरम और कलश दूर से ही नजर आता है। विशाल द्वार से अंदर प्रवेश करने पर पक्का दालान और कमरे बने हैं। यहीं पर उतंग स्वर्णिम गरूड़ ध्वज है, जिसके पास गरूड़ का छोटा सा मंदिर है, जो भगवान वेणुगोपाल की तरफ मुख किए हुए है। दांयी ओर मुख्य मंदिर की सीढ़ियां जाती हैं। गर्भगृह में बंशी बजाते हुए भगवान वेणुगोपाल की श्याम वर्ण की लुभावनी प्रतिमा है। मंदिर मकराना के श्वेत पत्थर से निर्मित है, जिसके दोनों ओर जय-विजय द्वारपाल हैं। इसी मंदिर में रूकमणी, श्रीकृष्ण, भूदेवी, सत्यभामा की पंचधातु की प्रतिमाएं हैं। चैत्र माह में भगवान रंगनाथ का विवाह उत्सव मनाया जाता है।

अरावली पर्वत की घाटियों में बसा रणकपुर जैन मंदिर

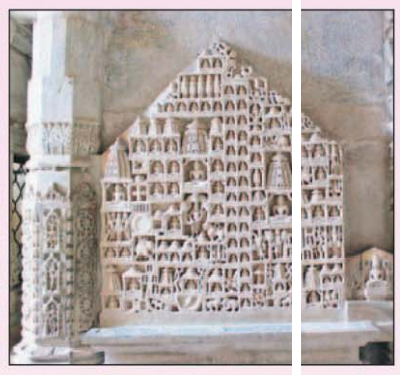

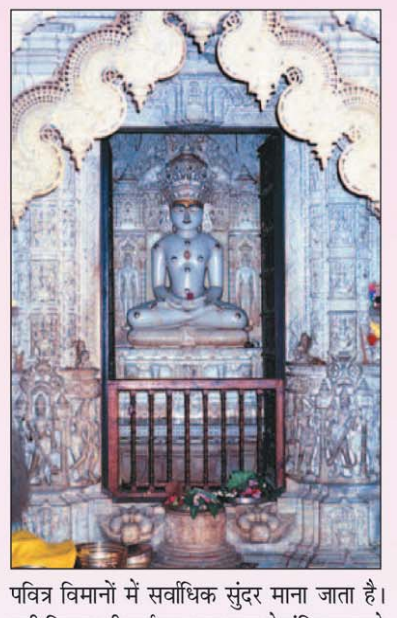

राजस्थान में अरावली पर्वत की घाटियों के मध्य चारों ओर जंगलों से घिरे रणकपुर में भगवान ऋषभदेव का चतुर्मुखी जैन मंदिर है। जंगलों से घिरे होने के कारण इस मंदिर की भव्यता देखते ही बनती है। भारत के जैन मंदिरों में संभवतः इसकी इमारत सबसे भव्य एवं विशाल है। रणकपुर मंदिर उदयपुर से 96 किलोमीटर की दूरी पर है।

इस मंदिर की इमारत लगभग 40,000 वर्गफीट में फैली है। आज से करीब 600 वर्ष पूर्व 1446 विक्रम संवत में इस मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ था, जो 50 वर्षों से अधिक समय तक चला। कहा जाता है कि उस समय में इसके निर्माण में करीब 99 लाख रुपए का खर्च आया था। इस मंदिर में 4 कलात्मक प्रवेश द्वार हैं। मंदिर के मुख्य गृह में तीर्थंकर आदिनाथ की संगमरमर से बनी 4 विशाल मूर्तियां हैं। करीब 72 इंच ऊंची ये मूर्तियां 4 अलग दिशाओं की ओर उन्मुख हैं। इसी कारण इसे चतुर्मुख मंदिर कहा जाता है। इसके अलावा मंदिर में 76 छोटे गुम्बदनुमा पवित्र स्थान, 4 बड़े प्रार्थना कक्ष तथा 4 बड़े पूजन स्थल हैं। ये मनुष्य को जीवन-मृत्यु की 84 योनियों से मुक्ति प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस मंदिर की प्रमुख विशेषता इसके सैकड़ों खंभे हैं जिनकी संख्या करीब 1,444 है। यहां आप जिस तरफ भी नजर घुमाएंगे आपको छोटे-बड़े आकारों के खंभे दिखाई देते हैं, परंतु ये खंभे इस प्रकार बनाए गए हैं कि कहीं से भी देखने पर मुख्य पवित्र स्थल के दर्शन में बाधा नहीं पहुंचती है। इन खंभों पर अतिसुंदर नक्काशी की गई है। इन खंभों की खास विशेषता यह है कि ये सभी अनोखे और अलग-अलग कलाकृतियों से निर्मित हैं। मंदिर की छत पर की गई नक्काशी इसकी उत्कृष्टता का प्रतीक है।

मंदिर के निर्माताओं ने जहां कलात्मक दोमंजिला भवन का निर्माण किया है, वहीं भविष्य में किसी संकट का अनुमान लगाते हुए कई तहखाने भी बनाए गए हैं। इन तहखानों में पवित्र मूर्तियों को सुरक्षित रखा जा सकता है। ये तहखाने मंदिर के निर्माताओं की निर्माण संबंधी दूरदर्शिता का परिचय देते हैं।

विक्रम संवत 1953 में इस मंदिर के रखरखाव की जिम्मेदारी एक ट्रस्ट को दे दी गई थी। उसने मंदिर के पुनरुद्धार कार्य को कुशलतापूर्वक कर इसे एक नया रूप दिया। पत्थरों पर की गई नक्काशी इतनी भव्य है कि कई विख्यात शिल्पकार इसे विश्व के आश्चर्यों में से एक बताते हैं। हर वर्ष हजारों कलाप्रेमी इस मंदिर को देखने आते हैं। इसके अलावा यह संगमरमर के टुकड़े पर भगवान ऋषभदेव के पदचिन्ह भी हैं। ये भगवान ऋषभदेव तथा शत्रुंजय की शिक्षाओं की याद दिलाते हैं।

रणकपुर का निर्माण कैसे हुआ:- इस मंदिर का निर्माण 4 श्रद्धालुओं- आचार्य सोमसुंदरजी, धरन शाह, कुंभा राणा तथा देपा ने कराया था। आचार्य सोमसुंदर एक धार्मिक नेता थे जबकि कुंभा राणा मलगढ़ के राजा तथा धरन शाह उनके मंत्री थे। धरन शाह ने धार्मिक प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर भगवान ऋषभदेव का मंदिर बनवाने का निर्णय लिया था।

कहा जाता है कि एक रात उन्हें स्वप्न में नलिनीगुल्मा विमान के दर्शन हुए, जो पवित्र विमानों में सर्वाधिक सुंदर माना जाता है। इसी विमान की तर्ज पर धरन शाह ने मंदिर बनवाने का निर्णय लिया। मंदिर निर्माण के लिए धरन शाह ने कई वास्तुकारों को आमंत्रित किया। इनके द्वारा प्रस्तुत कोई भी योजना उन्हें पसंद नहीं आई। अंततः मुंदारा से आए एक साधारण से वास्तुकार दीपक की योजना से वे संतुष्ट हो गए।

मंदिर निर्माण के लिए धरन शाह को मलगढ़ नरेश कुंभा राणा ने जमीन दी। उन्होंने मंदिर के समीप एक नगर बसाने का भी सुझाव दिया। मंदिर के समीप मदगी नामक गांव को इसके लिए चुना गया तथा मंदिर एवं नगर का निर्माण साथ ही प्रारंभ हुआ। राजा कुंभा राणा के नाम पर इसे रणपुर कहा गया, जो बाद में रणकपुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आज का रणकपुर पुरानी विरासत और इसे सहेजकर रखने वालों के बारे में भी संदेश देता है जिनके कारण रणकपुर मात्र एक विचार से वास्तविकता में बदल सका।

वैसे भी राजस्थान अपने भव्य स्मारकों तथा भवनों के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थुान में स्थित रणकपुर मंदिर जैन धर्म के 5 प्रमुख तीर्थस्थरलों में से एक है। यह मंदिर खूबसूरती से तराशे गए प्राचीन जैन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर परिसर के आसपास ही नेमीनाथ और पार्श्वनाथ को समर्पित 2 मंदिर हैं, जो हमें खजुराहो की याद दिलाते हैं। यहां निर्मित सूर्य मंदिर की दीवारों पर योद्धाओं और घोड़ों के चित्र उकेरे गए हैं, जो अपने आप में एक उत्कृष्ट उदाहरण के समान है। यहां से लगभग 1 किलोमीटर दूरी पर माता अम्बा का मंदिर भी है।

कैसे पहुंचें:-

सड़क मार्ग:- उदयपुर देश के प्रमुख शहरों से सड़कों के जरिए जुड़ा हुआ है। उदयपुर से यहां के लिए प्राइवेट बसें तथा टैक्सियां उपलब्ध रहती हैं। आप यहां अपने निजी वाहन से भी जा सकते हैं।

रेलवे:- यहां पहुंचने के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन उदयपुर ही है, साथ ही रणकपुर के लिए सभी प्रमुख शहरों से रेलगाड़ियां उपलब्धे हैं।

वायु मार्गः- रणकपुर पहुंचने के लिए नजदीकी हवाई अड्डा उदयपुर है। दिल्लीं, मुंबई से यहां के लिए नियमित उड़ानें हैं।

आसपास के क्षेत्रों में पावापुरी सिरोही, संघवी भेरूतारक तीर्थ धाम, माउंट आबू, दिलवाड़ा का विख्यात जैन मंदिर भी हैं, जहां आसानी से पहुंचा जा सकता है।

एचडीएफसी एएमसी के शेयरों में आया उछाल, ब्रोकरेज ने कहा जमकर करें खरीदारी

कंपनी का मुनाफा 31 फीसदी से बढ़कर 641 करोड़ रुपए पर पहुंच गया

नई दिल्ली।

एचडीएफसी एसेट मैनेजमेंट कंपनी के शेयरों में बुधवार को उछाल आया। कंपनी ने शेयर शुरुआती कारोबार में 5 फीसदी से ज्यादा चढ़े।

इसकी तुलना में बीएसई सेंसेक्स 0.59 फीसदी चढ़कर 76,947 पर कारोबार किया। तीसरी तिमाही में अच्छे नतीजों के दम पर कंपनी के शेयरों में यह उछाल देखने को मिला है।

एचडीएफसी एसेट मैनेजमेंट कंपनी ने मंगलवार को शेयर बाजार बंद होने के बाद तीसरी तिमाही के नतीजे जारी किए हैं। कंपनी ने बताया कि दिसंबर तिमाही में उसका मुनाफा सालाना आधार पर 31 फीसदी से बढ़कर 641 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। ऑपरेशन से होने वाली कमाई भी सालाना आधार पर 39 फीसदी बढ़कर 671.32 करोड़ रुपए हो गई है।

मजबूत तिमाही नतीजों को देखते हुए ज्यादातर ब्रोकरेज कंपनियों ने इन्वेस्टमेंट स्ट्रेटेजी अपडेट करते हुए एचडीएफसी एएमसी का टारगेट प्राइस बढ़ा दिया है। साथ ही स्टॉक में खरीदारी करने की सलाह देते हुए 35 फीसदी तक के अपसाइड रिटर्न का अनुमान जताया है।

ब्रोकरेज फर्म मोतीलाल ओसवाल ने एचडीएफसी असेट मैनेजमेंट कंपनी पर अपनी रेटिंग को बरकरार रखते हुए खरीदने की सलाह दी है। ब्रोकरेज ने इसके लिए 5200 रुपए का टारगेट प्राइस दिया है। कंपनी के शेयर मंगलवार को 2 फीसदी चढ़कर 3863 रुपए पर बंद हुए। इस तरह शेयर लॉन्ग टर्म में 35 फीसदी का अपसाइड रिटर्न दे सकते हैं। ब्रोकरेज के मुताबिक ओवरऑल एयूएम में इक्विटी की बढ़ती हिस्सेदारी यील्ड्स में संभावित गिरावट को कम करने में मदद करेगी। नए बिजनेस से बड़े पैमाने पर बेनिफिट्सज्हाई प्रोफिटेबिल्टी में बदल सकता है। ब्रोकरेज ने अपने अनुमानों को कोई बड़ा बदलाव नहीं किया है और 5200 रुपए के टारगेट प्राइस के साथ स्टॉक पर बाय रेटिंग को बरकरार रखा है।

पेट्रोल-डीजल की कीमतों में आया बदलाव

नई दिल्ली ।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल (क्रूड) की कीमतों में उतार-चढ़ाव से घरेलू बाजार में भी बुधवार को पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बदलाव आया है। इस दौरान डब्ल्यूटीआई क्रूड की कीमतों में 0.03 फीसदी करीब 0.02 डॉलर की बढ़त रही और यह 77.52 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गयीं जबकि ब्रेंट क्रूड की कीमतें 0.06 फीसदी तकरीबन 0.05 डॉलर नीचे आकर 79.87 डॉलर प्रति बैरल रहीं।

इससे घरेलू बाजार में भी पेट्रोल और डीजल की कीमतों पर प्रभाव पड़ा है। कुछ शहरों में तेल की कीमतें घट गई हैं, वहीं कुछ स्थानों पर बढ़ी हैं। गुरुग्राम में पेट्रोल की कीमतें 21 पैसे कम होकर 95.04 रुपये और डीजल 20 पैसे नीचे आकर 87.90 रुपये प्रति लीटर हो गया। वहीं उड़ीसा के भुवनेश्वर में पेट्रोल की कीमत 28 पैसे घटकर 101.11 रुपये और डीजल 27 पैसे सस्ता होकर 92.69 रुपये प्रति लीटर हो गया है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में भी पेट्रोल 8 पैसे सस्ता होकर 94.61 रुपये और डीजल 10 पैसे घटकर 87.71 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

दूसरी ओर नोएडा और ग्रेटर नोएडा में पेट्रोल और डीजल की कीमतें 7 और 6 पैसे बढ़कर 95.05 रुपये और 88.19 रुपये प्रति लीटर हो गई हैं। जयपुर में भी पेट्रोल की कीमत 31 पैसे बढ़कर 104.46 रुपये और डीजल 28 पैसे बढ़कर 90.21 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

वहीं चार महानगरों दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, और चेन्नई में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बदलाव नहीं आया है। दिल्ली में पेट्रोल 94.77 रुपये और डीजल पहले की तरह ही 87.67 रुपये प्रति लीटर पर जबकि मुंबई में पेट्रोल 103.50 रुपये और डीजल 90.03 रुपये प्रति लीटर की दर से मिल रहे हैं।

थीमैटिक फंड्स ने 2024 में नेट कलेक्शन में 488 फीसदी की वृद्धि की

मुंबई। पिछले साल थीमैटिक फंड्स ने नेट कलेक्शन में 488 फीसदी की वृद्धि दर्ज की है। सेक्टोरल और थीमैटिक फंड्स ने संग्रह में 1,09,711 करोड़ रुपए हासिल किए हैं, जो कि कुल नेट कलेक्शन का 34 फीसदी रहा। बुधवार को एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई। रिपोर्ट के मुताबिक पिछले साल सेक्टोरल और थीमैटिक फंड्स में कुल नेट कलेक्शन में मैन्युफैक्चरिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर और एनर्जी ने कुल मिलाकर 56 फीसदी का योगदान दिया, इसके बाद एफएमसीजी ने 9 फीसदी, बिजनेस साइकिल ने 6 फीसदी और पीएसयू ने 5 फीसदी का योगदान दिया। सेक्टोरल और थीमैटिक स्कीम के तहत बिजनेस साइकिल फंड का नेट कलेक्शन 2023 में 103 करोड़ रुपए से बढ़कर 2024 में 6,841 करोड़ रुपए रहा था। एनर्जी सेक्टर ने 2023 में 470 करोड़ रुपए की तुलना में 2024 में 23,964 करोड़ रुपए जमा किए। पिछले साल लार्ज कैप के तहत नेट कलेक्शन 2023 में -3,768 करोड़ रुपए की तुलना में 17,404 करोड़ रुपए रहा। 2024 में मल्टी कैप और फ्लेक्सीकैप के तहत नेट कलेक्शन क्रमशः 37,649 करोड़ रुपए और 36,231 करोड़ रुपए रहा। रिपोर्ट के मुताबिक स्मॉल कैप के तहत नेट कलेक्शन 2023 में 45,270 करोड़ रुपए की तुलना में 2024 में घटकर 29,555 करोड़ रुपए रह गया। घरेलू संस्थागत निवेशकों ने 5.27 लाख करोड़ रुपए का शुद्ध इक्विटी प्रवाह (नेट इक्विटी इनफ्लो) दर्ज किया, जिसमें अक्टूबर में 1.07 लाख करोड़ रुपए का उच्च प्रवाह देखा गया। डीआईआई का शुद्ध इक्विटी प्रवाह 2023 की तुलना में करीब 3 गुना हो गया। रिपोर्ट के मुताबिक अक्टूबर में एफआईआई के हाई आउटफ्लो के बावजूद, डीआईआई ने महीने के लिए अपने रिकॉर्ड इक्विटी प्रवाह के साथ स्थिति को बैलेंस करने में मदद की है। रिपोर्ट में बताया गया है कि सभी कैटेगरी ने लगातार दूसरे साल दोहरे अंकों में सकारात्मक रिटर्न हासिल किया। फार्मा 40.5 फीसदी रिटर्न के साथ लिस्ट में सबसे ऊपर रहा, जबकि बैंकिंग और फाइनेंशियल सर्विस में सबसे कम 11.5 फीसदी रिटर्न रहा। 2024 में निवेश क्षेत्र में उभरते हुई बाजार की भावना दिखाई दी, जिसमें थीमैटिक इंवेस्टमेंट में वृद्धि, एफआईआई और डीआईआई फ्लो में अंतर और बड़े सेक्टोरल शिफ्ट शामिल थे।

मेडिकल डिवाइस पर जीएसटी एक समान करने पर विचार कर सकती है सरकार

डिवाइस मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर ने आगामी बजट को लेकर रखी अपनी मांग

नई दिल्ली।

मेडिकल डिवाइस मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर ने आगामी बजट को लेकर अपनी मांगें सामने रखी हैं। इसमें वस्तु और जीएसटी की दरों को समान करने, एक्सपोर्ट प्रमोशन में वृद्धि और इंपोर्टेड डिवाइस की मिनिमम रिटेल प्राइस पर निगरानी जैसी प्रमुख मांगें शामिल हैं। पॉली मेडिक्योर के मैनेजिंग डायरेक्टर ने कहा कि सरकार सभी मेडिकल डिवाइस पर जीएसटी दर को 12 फीसदी पर एक समान करने पर विचार कर सकती है। इससे टैक्स इंफ्रास्ट्रक्चर सरल होगा और कारोबार में आसानी होगी। इसके अलावा उद्योग ने वाणिज्य मंत्रालय की रेमिशन ऑफ ड्यूटीज ऐंड टैक्स ऑन एक्सपोर्ट प्रोडक्ट्स योजना के तहत एक्सपोर्ट इंसेंटिव को वर्तमान 0.6-0.9 फीसदी से बढ़ाकर 2-2.5 फीसदी करने की मांग की है। इसका उद्देश्य उन करों और शुल्कों की वापस करना है जो अब तक उत्पादकों को वापस नहीं किए जाते थे। उन्होंने कहा कि यह कदम भारतीय मेडिकल डिवाइस की ग्लोबल कंपटीटिवनेस को बढ़ाएगा और निर्माताओं को अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपने उत्पादों का दायरा बढ़ाने में भी मदद करेगा। एसोसिएशन ऑफ इंडियन मेडिकल डिवाइस इंडस्ट्री (एआईएमईडी) ने केंद्रीय वित्त मंत्रालय को बजट से पहले सौंपे गए अपने ज्ञापन में मांग की है कि आयातित मेडिकल डिवाइस की अधिकतम खुदरा मूल्य पर निगरानी रखी जाए। इसका उद्देश्य यह तय करना है कि भारतीय मरीजों को सस्ती दरों पर इलाज उपलब्ध हो सके। एआईएमईडी ने कहा कि सरकार द्वारा डिवाइस पर आयात शुल्क घटाने के प्रयास उस समय व्यर्थ हो जाते हैं, जब मरीजों को इन डिवाइस के लिए 10 से 30 गुना ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। संगठन ने मेडिकल डिवाइस की कीमतों को नियंत्रित करने की दिशा में ठोस कदम उठाने की अपील की है। मेडिकल डिवाइस बनाने वाली कंपनियों के संगठन एआईएमईडी ने भारत में बनने वाले और पर्याप्त उत्पादन क्षमता वाले मेडिकल डिवाइस पर शून्य और कंसेशनल कस्टम ड्यूटी के नोटिफिकेशन को वापस लेने की मांग की है।

एप्पल के लिए ठेके पर आईफोन बनाने वाली प्रमुख कंपनी बनी टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स

कुल आईफोन में से 77 फीसदी का निर्यात किया गया

मुंबई ।

टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स भारत में एप्पल इंक के लिए ठेके पर आईफोन बनाने वाली प्रमुख कंपनी बनी है। टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स ने एप्पल इंक की जरूरतों को पूरा करने के लिए तीन मोर्चों उत्पादन में व्यापक इजाफा, निर्यात और वर्ष 2024 में प्रत्यक्ष रोजगार बढ़ाने पर जोरशोर से काम किया है। वर्ष 2024 में टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स ने आईफोन असेंबली के लिए बड़े पैमाने पर लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार दिया। 2024 में उसके कर्मचारियों की संख्या 63 फीसदी बढ़कर 31,000 हो गई जो इससे पिछले साल 19,000 थी।

राज्य और केंद्र सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए तिमाही आंकड़ों के अनुसार प्रत्यक्ष रोजगार सृजन के लिहाज से आईफोन का यह कारखाना देश का दूसरा सबसे बड़ा संयंत्र बन गया है। एप्पल आईफोन ईकोसिस्टम में वर्ष 2024 के दौरान कुल 1,85,000 कर्मचारियों को प्रत्यक्ष रोजगार दिया था जिसमें आईफोन के इस कारखाने की हिस्सेदारी 17 फीसदी रही।

एप्पल ईकोसिस्टम में असेंबल करने वाली कंपनियां और कलपुर्जा बनाने वाली इकाइयां भी शामिल हैं। कर्मचारियों के लिहाज से सबसे बड़ा कारखाना भी आईफोन बनाने वाली एक अन्य कंपनी फॉक्सकॉन की है।

तमिलनाडु के कारखाने में 42,000 कामगार काम करते हैं। टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स ने विस्ट्रॉन से 12.5 करोड़ डॉलर में कर्नाटक स्थित आईफोन के कारखाने का अधिग्रहण किया था।

इसके बाद से टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स ने कारखाने में बड़े पैमाने पर कर्मचारियों की भर्ती की और आईफोन उत्पादन क्षमता में भी व्यापक इजाफा किया।

रुपया बढ़त पर बंद

नई दिल्ली । अमेरिकी डॉलर के मुकाबले बुधवारक को रुपया 20 पैसे की बढ़त के साथ ही 86.38 पर बंद हुआ। वहीं गत दिवस रुपया 86.58 पर बंद हुआ था। इससे पहले सोमवार को रुपये ने लगभग दो वर्षों में अपनी सबसे बड़ी एकदिनी गिरावट दर्ज की थी, जिसमें यह 66 पैसे कमजोर हुआ था। दूसरी ओर इंटरबैंक विदेशी मुद्रा बाजार में रुपया 86.57 पर खुला और फिर मजबूत होकर 86.49 पर पहुंचा। विशेषज्ञों के अनुसार, खुदरा महंगाई में गिरावट और खाद्य वस्तुओं की कीमतों में नरमी से रुपये को समर्थन मिला है। दिसंबर महीने में खुदरा महंगाई चार महीने के निचले स्तर 5.22 फीसदी पर पहुंच गई, जिससे भारतीय रिजर्व बैंक को आगामी मौद्रिक नीति समीक्षा में ब्याज दरों में कटौती का विकल्प मिल सकता है।

अब पीएफ कर्मचारी खुद सेल्फ-अटेस्टेशन के जरिए कर सकेंगे केवाईसी

नहीं होगी एचआर डिपार्टमेंट से अप्रूवल की जरूरत

नई दिल्ली। एंप्लॉयी प्रॉविडेंट फंड (ईपीएफ) के सब्सक्राइबर्स के लिए अहम बदलाव होने वाले हैं। अब कर्मचारियों को पीएफ केवाईसी कराने के लिए एचआर डिपार्टमेंट से अप्रूवल की जरूरत नहीं होगी। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने घोषणा की है कि जून 2025 से वह कर्मचारी खुद से सेल्फ-अटेस्टेशन के जरिए केवाईसी कर सकेंगे, जिससे कंपनी के चक्कर काटने नहीं पड़ेंगे। इस बदलाव से पीएफ से जुड़ी प्रक्रियाओं को आसान बनाया जाएगा, खासकर तब जब कंपनियां बंद हो जाती हैं और केवाईसी की वजह से पीएफ क्लेम अटक जाते हैं। यह कदम ईपीएफओ 3.0 का हिस्सा होगा, जो इस साल लॉन्च किया जाएगा। इस नई योजना में आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत किया जाएगा और रोजगार आधारित योजनाओं को भी शामिल किया जाएगा, जिससे ईपीएफओ का कामकाज और भी आसान होगा। ईपीएफओ 3.0 के लॉन्च से अनुमान लगाया है कि पीएफ सब्सक्राइबर्स की संख्या में बढ़ोतरी होगी, जो वर्तमान में करीब आठ करोड़ है और यह 10 करोड़ तक पहुंच सकती है। इसके अलावा फंड निकालने की प्रक्रिया भी सरल हो जाएगी। ईपीएफओ के नए नियमों के तहत बैंकों के साथ मिलकर सब्सक्राइबर्स को एक तय सीमा तक बिना किसी आवेदन के सीधे अपने खाते से फंड निकालने की सुविधा दी जा सकती है, जिससे पीएफ के सब्सक्राइबर्स को अपनी मेहनत की कमाई निकालने में आसानी होगी।

निवेशकों को शानदार ऑफर, एसबीआई समेत कई बैंकों ने एफडी पर बढ़ाया ब्याज

नई दिल्ली।

निवेश पर गारंटीड रिटर्न और हाई लिक्विडिटी के साथ फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) भारत में सबसे पसंदीदा निवेश वाले विकल्प हैं। एसबीआई और एचडीएफसी बैंक जैसे बड़े बैंकों के साथ छोटे बैंकों ने भी हाल के दिनों में एफडी पर ब्याज दरों में बढ़ोतरी की है। एसबीआई ने एक नई कैटेगरी सुपर सीनियर सिटीजन (80 साल से ज्यादा) जोड़ी है। बैंक इस वर्ग के जमाकर्ताओं को अतिरिक्त 10 बेसिस प्वाइंट्स की ब्याज दर ऑफर कर रहा है। इसके जैसी स्कीम आईडीबीआई बैंक द्वारा भी दी जा रही है। आईडीबीआई बैंक ने आईडीबीआई चिरंजीवी-सुपर सीनियर सिटीजन एफडी लॉन्च की है, जो 80 साल और उससे ज्यादा आयु के लोगों के लिए एक स्पेशल एफडी है। इस स्कीम में स्टैंडर्ड एफडी दरों से 0.65 फीसदी ज्यादा ब्याज प्रदान किया जा रहा है। इस स्कीम के तहत 555 दिनों की अवधि की एफडी के लिए 8.05 फीसदी, 375 दिनों के लिए 7.9 फीसदी, 444 दिनों के लिए 8 फीसदी और 700 दिनों के लिए 7.85 फीसदी का ब्याज दिया जा रहा है। वहीं एसबीआई निवेशकों को आकर्षित करने के लिए लगातार कदम उठा रहा हैं। इसके तहत देश के सबसे बड़े बैंक ने हर घर लखपति आरडी स्कीम शुरू की है। इस स्कीम का मकसद 3 से लेकर 10 साल की मंथली जमा कर एक लाख या उससे ज्यादा का फंड एकत्रित करना है। इस स्कीम में 10 साल या उससे ज्यादा कोई भी शख्स खाता खोल सकता है। इस योजना में 60 साल से कम की आयु के लोगों को 3 और 4 साल की अवधि के लिए 6.75 फीसदी और 5 से 10 साल की अवधि के लिए 6.50 फीसदी की ब्याज दर दी जा रही है। वहीं, 60 साल से ज्यादा की आयु के लोगों को 3 और 4 साल के लिए 7.25 फीसदी और 5 से 10 साल के लिए 7 फीसदी की ब्याज दर ऑफर की जा रही है।

शेयर बाजार बढ़त के साथ बंद

मुंबई ।

भारतीय शेयर बाजार बुधवार को तेजी के साथ बंद हुआ। बाजार में ये तेजी दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही खरीददारी हावी होने से आई है। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 224.45 अंक करीब 0.29 फीसदी बढ़कर 76,724.08 और 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 37.15 अंक तकरीबन 0.16 फीसदी ऊपर आकर 23,213.20 अंक पर बंद हुआ। आज कारोबार के दौरान लार्जकैप की जगह मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में अधिक उछाल रहा। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 222.50 अंक करीब 0.41 फीसदी की तेजी के साथ 53,899 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 96.15 अंक या 0.56 फीसदी की बढ़त के साथ ही 17,353.95 पर बंद हुआ।

कारोबारी सत्र में उछाला वाले शेयरों की तादाद अधिक रही। बीएसई पर 2,144 शेयर ऊपर आये जबकि 1,808 शेयरों में गिरावट रही। 112 शेयर बिना किसी बदलाव के बंद हुए। आईटी, पीएसयू बैंक, मेटल, रियल्टी, एनर्जी, इन्फ्रा, कमोडिटी, पीएसई, सर्विसेज और ऑयल एंव गैस इंडेक्स लाभ के साथ ही हरे निशान में जबकि ऑटो, फिन सर्विस, फार्मा, एफएमसीजी और मीडिया नुकसान के साथ ही लाल निशान पर बंद हुए।

सेंसेक्स पैक में जोमैटो, एनटीपीसी, पावर ग्रिड, कोटक महिंद्रा, मारुति सुजुकी, टेक महिंद्रा, एलएंडटी, रिलायंस इंडस्ट्रीज, अदाणी पोर्ट्स, एसबीआई, एचसीएल टेक और अल्ट्राटेक सीमेंट के शेयरों को सबसे ज्यादा लाभ हुआ। वहीं एमएंडएम, बजाज फिनसर्व, बजाज फाइनेंस, एक्सिस बैंक, टाटा मोटर्स, नेस्ले, सन फार्मा और एशियन पेंट्स सबसे अधिक नुकसान वाले शेयर रहे। विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने 14 जनवरी को 8,132.26 करोड़ रुपये के शेयर बेचे, जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने उसी दिन 7,901.06 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे।

बाजार जानकारों के अनुसार एफआईआई का आउटफ्लो बढ़ने, डॉलर की मजबूती और यूएस बॉन्ड यील्ड के बढ़ने के कारण भी घरेलू बाजार में उतार-चढ़ाव रहा। अमेरिका में महंगाई के डेटा से पहले निवेशकों ने सतर्कता बरती।

इससे पहले आज सुबह बाजार बढ़त के साथ खुला। सुबह सेंसेक्स 400 अंक ऊपर आकर 76,900 पर खुला। वहीं निफ्टी हल्की तेजी के साथ 75 अंक बढ़त लेकर 23,273.55 पर खुला।

देसी कंपनियों के तीसरी तिमाही के परिणामों और विदेशी निवेशकों की बिकवाली को लेकर बाजार में अभी भी आशंकाएं लगी हुई हैं। साथ ही आईटी स्टॉक्स में गिरावट से भी बाजार की तेजी पर अंकुश रहा है। वहीं गत दिवस सेंसेक्स और निफ्टी हल्की बढ़त पर बंद हुआ था।

अब घरेलू मोर्चे पर निवेशकों की नजर देसी कंपनियों के दिसंबर तिमाही के परिणामों पर रहेगी। सीएट, एचडीएफसी लाइफ, एल्टीटीएस और बैंक ऑफ महाराष्ट्र समेत 24 कंपनियां के तिमाही परिणामों को घोषित करेगी। भारतीय कंपनियों के लिए मार्जिन विस्तार की संभावनाएं अब सीमित हैं। ऐसे में, कमाई बढ़ाने के लिए राजस्व में वृद्धि जरूरी होगी।

वहीं एशियाई बाजारों में बुधवार को आज मिश्रित रुख रहा। जापान में निक्केई 225 पर रहा, जो 0.75 फीसदी बढ़ा, जबकि व्यापक टॉपिक्स इंडेक्स में 0.86 फीसदी की बढ़त रही।

सेबी ने डीमैट खाते को लेकर कौन सा नया प्रस्ताव पेश किया, निवेशकों को होगा फायदा

मुंबई । शेयर बाजार नियामक संस्था सेबी (सिक्योरिटी एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया) समय-समय पर निवेशकों के हित में नए नियम बनाती है। इसी कड़ी में सेबी ने डीमैट खाते में होल्डिंग्स को बढ़ावा देने के लिए एक नया प्रस्ताव पेश किया है। इसके तहत लिस्टेड कंपनियां को स्टॉक स्प्लिट, मर्जर या डीमर्जर के स्थिति में नई सिक्योरिटी सिर्फ डी मैट खाते में जारी करना अनिवार्य किया जाए। सेबी के प्रस्ताव के अनुसार, अगर निवेशक के पास डीमैट खाता नहीं है, तब सिक्योरिटी इश्यू करने वाली कंपनी इसतरह के शेयर को एक अलग डीमैट खाते में रखे और इन स्टॉक्स के मालिकाना हक की पूरी जानकारी रखे। हालांकि, यह सिर्फ प्रस्ताव है और इस पर सेबी ने 4 फरवरी तक टिप्पणियां मांगी गई हैं। सेबी के प्रस्ताव से निवेशकों को बड़ा फायदा होगा। क्योंकि, सिक्योरिटीज को डीमैट फॉर्म में रखने से धोखाधड़ी, पेपर सर्टिफिकेट के खोने या नष्ट होने सहित कई गड़बड़ियों की आशंका खत्म होगी। इसके साथ ही शेयर ट्रांसफर की प्रक्रिया की तेज और पारदर्शी होगी। इन फायदों के चलते सेबी चाहती है कि ज्यादा से ज्यादा सिक्योरिटीज डीमैट फॉर्म में रखी जाएं। हालांकि, ज्यादातर निवेशक अपने शेयरों को डीमैट खाते में रख रहे हैं, हालांकि कुछ निवेशक हैं जो पेपर सर्टिफिकेट के रूप में इन सिक्योरटीज को अपने पास रखते हैं।

हल्दीराम को खरीदने की दौड़ में शामिल हुई अमेरिकी कंपनी पेप्सिको

सीधे प्रमोटर अग्रवाल फैमिली से चर्चा कर रहे

मुंबई ।

स्नैक्स और मिठाइयां बनाने वाली दिग्गज कंपनी हल्दीराम में हिस्सेदारी खरीदने को होड़ दिलचस्प होती जा रही है। अमेरिकी दिग्गज कंपनी पेप्सिको भी हल्दीराम को खरीदने की दौड़ में शामिल हो गई है। सूत्रों के मुताबिक कंपनी के अधिकारी हल्दीराम स्नैक्स फूड में हिस्सेदारी खरीदने के लिए सीधे प्रमोटर अग्रवाल फैमिली से चर्चा कर रहे हैं। पेप्सिको के अलावा सिंगापुर की कंपनी टेमासेक और अल्फा वेव ग्लोबल भी हल्दीराम में हिस्सेदारी खरीदने की होड़ में शामिल हैं। इन दोनों कंपनियों ने हल्दीराम में 10-15 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदने के लिए ऑफर दिया है।

सूत्रों के मुताबिक न्यूयॉर्क में पेप्सिको हेडक्वार्टर के अधिकारियों ने हाल के दिनों हल्दीराम में माइनोरिटी स्टेक खरीदने के लिए अग्रवाल परिवार के सदस्यों के साथ सीधे बात की है। हालांकि बातचीत अभी शुरुआती स्तर पर है और संभव है कि यह अंजाम तक न पहुंचे। माना जा रहा है कि अगर यह डील आगे बढ़ती है, तब इसमें फंडिंग भी अमेरिका की मूल कंपनी करेगी। पेप्सिको की भारतीय यूनिट की इसमें ज्यादा भूमिका नहीं है। अग्रवाल फैमिली 85,000-90,000 करोड़ रुपये की वैल्यूएशन की उम्मीद कर रही है।

लेज चिप्स, कुरकुरे नमकीन स्नैक्स और डोरिटोस नाचो चिप्स बनाने वाली कंपनी पेप्सिको को भारतीय स्नैक्स बाजार में कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय कंपनियों और डायरेक्ट टू कंज्यूमर कंपनियों की संख्या में काफी तेजी आई है। इसमें हल्दीराम, बीकानेरवाला, बालाजी और लिस्टेड कंपनियों बीकाजी फूड्स, गोपाल स्नैक्स और प्रताप स्नैक्स शामिल हैं। साथ ही एथनिक स्नैक्स कंपनियों की भी बाजार में भरमार है। इनमें से ज्यादातर की कीमत जाने-माने ब्रांड्स के कम है। वे डायरेक्ट डिस्ट्रीब्यूशन करते हैं और रिटेलर्स को ज्यादा लाभ देते हैं।

पेप्सिको की वेस्टर्न स्नैक्स मार्केट चिप्स और नाचोस में लगभग 24 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी है। लेकिन नमकीन, भुजिया और चना चूर जैसे लोकल स्नैक्स में कंपनी अभी भी बहुत पीछे है। यह वजह है कि कंपनी हल्दीराम को अपने साथ लाना चाहती है। रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज के आंकड़ों के अनुसार, पेप्सिको इंडिया होल्डिंग्स ने अप्रैल से दिसंबर 2023 की नौ महीने की अवधि के लिए 5,954.16 करोड़ रुपये का कंसोलिडेटेड रेवेन्यू हासिल किया। इसी अवधि में पेप्सिको के स्नैक्स बिजनस का रेवेन्यू 4,763.29 करोड़ रुपये रहा। हल्दीराम स्नैक फूड्स ने वित्त वर्ष 2024 में 12,800 करोड़ रुपये का रेवेन्यू दर्ज किया, जो पेप्सिको से करीब दोगुना है। यह 500 प्रकार के स्नैक्स, नमकीन, मिठाइयां, रेडी टू ईट और प्री-मिक्स्ड फूड बनाती और डिस्ट्रीब्यूट करती है।

2027 तक भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा

नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि भारत 2027 तक जापान और जर्मनी को पीछे छोड़कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। उन्होंने बताया कि पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत ने 10 सालों में 11वें सबसे बड़े जीडीपी वाले देश से पांचवें स्थान पर छलांग लगाई है। उन्होंने पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदंबरम के 2014 के अनुमान का जिक्र करते हुए कहा कि जहां उन्होंने भारत को तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने में 30 साल का समय बताया था, वहीं पीएम मोदी ने इसे 13 सालों में हासिल करने का संकल्प लिया और यह लक्ष्य 2027 तक पूरा हो जाएगा। गोयल ने कहा कि पीएम मोदी को 19 देशों ने अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान से नवाजा है, जिनमें 8 मुस्लिम बहुल, 10 ईसाई बहुल और 1 बौद्ध बहुल देश शामिल हैं। यह सम्मान वैश्विक स्तर पर उनकी लोकप्रियता और समावेशी दृष्टिकोण को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी तुष्टिकरण की राजनीति से परे हैं और 'सबका साथ, सबका विकास' की नीति में यकीन रखते हैं।

भारत के लिये खतरा है पाक-बांग्लादेश की नजदीकियां

ललित गर्ग

बांग्लादेश की युनूस सरकार पाकिस्तान के इशारों पर पुराने मुद्दे उछाल कर विवाद को हवा दे रही है। निश्चित ही पाक से उसकी नजदीकियां लगातार बढ़ी हैं और वहां पाक सेना के अधिकारियों की सक्रियता देखी गई है, ऐसी जटिल होती स्थितियों में भारत को अपनी सुरक्षा चिंताओं के लिये कदम उठाने ही चाहिए एवं अपनी सीमाओं को सुरक्षित बनाना ही चाहिए।

बांग्लादेश की कार्यवाहक सरकार प्रधानमंत्री शेख हसीना के अपदस्थ होने के बाद से लगातार भारत विरोधी गतिविधियों एवं कारगुजारियों एवं षडयंत्रों में संलग्न है, लगता है पाकिस्तान के शह पर बांग्लादेश का भारत विरोधी रवैया बढ़ रहा है। बांग्लादेश में लगातार भारत विरोधी मुहिम व अल्पसंख्यक हिन्दुओं एवं हिन्दू धर्मस्थलों पर हिंसक हमलों के बाद अब भारत सीमा पर बाड़बंदी को लेकर बेवजह का विवाद खड़ा किया जा रहा है। जबकि इस मुद्दे पर दोनों देशों के बीच पहले ही सहमति बनने के बाद बड़े हिस्से पर बाड़बंदी हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार बैठे बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्तनाबूंद कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्भाव की कामना एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की शांति, सद्भावना एवं सौहार्द के लिये किसी तीसरे देश के दखल को बढ़ने न दिया जाये।

2015 में शेख हसीना के कार्यकाल के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ढाका पहुंचे। यहां दोनों नेताओं ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किया। इसे लैंड बाउंड्री एग्रीमेंट कहते हैं। इसी के अन्तर्गत भारत ने अब तक 3271 किलोमीटर सीमा कर बाड़बंदी कर दी है। अब केवल 885 किलोमीटर खुली सीमा की बाड़बंदी बाकी है। भारत बचे इलाके की बाड़बंदी कर रहा है लेकिन बांग्लादेश भारत की कोशिशों में अड़ंगा डाल कर दोनों देशों के बीच हुए समझौते को नकार रहा है। बांग्लादेश के गृह मंत्रालय ने ढाका में भारतीय उच्चायुक्त प्रणय वर्मा को बुलाकर विरोध व्यक्त किया तो इसके जवाब में भारत ने भी जवाबी कार्रवाई की और बांग्लादेश के डिप्टी हाईकमिश्नर नूरूल इस्लाम को तलब कर अपना विरोध जताया। भारत अपनी सीमाओं को अभेद्य बना रहा है। सीमाओं के खुले रहने से बांग्लादेश से लगातार अवैध घुसपैठ, हथियारों की तस्करी, ड्रग स्मगलिंग, नकली नोटों का कारोबार और आतंकवादी गतिविधियां लगातार हो रही हैं। विशेषतः पाकिस्तान अब अपनी आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने के लिये बांग्लादेश का उपयोग कर रहा है। दरअसल, बांग्लादेश की युनूस सरकार पाकिस्तान के इशारों पर पुराने मुद्दे उछाल कर विवाद को हवा दे रही है। निश्चित ही पाक से उसकी नजदीकियां लगातार बढ़ी हैं और वहां पाक सेना के अधिकारियों की सक्रियता देखी गई है, ऐसी जटिल होती स्थितियों में भारत को अपनी सुरक्षा चिंताओं के लिये कदम उठाने ही चाहिए एवं अपनी सीमाओं को सुरक्षित बनाना ही चाहिए।

पाकिस्तान पंजाब, जम्मू-कश्मीर व नेपाल के रास्ते आतंकवादियों को भारत भेजने की कोशिशें लगातार करता रहा है, अब उसने बांग्लादेश को भी इन गतिविधियों के लिये चुना है एवं बांग्लादेश से लगी भारत की खुली सीमा का दुरुपयोग कर रहा है तो भारत को सतर्क एवं सावधान होना ही चाहिए। पाकिस्तान से लगती सीमा पर तमाम चौकसी के बाद भी सीमा पार से जिस तरह जब-तब आतंकियों की घुसपैठ होती रहती है, वह गंभीर चिंता की बात है। जब पाकिस्तान से लगती सीमा भारत की सुरक्षा के लिए खतरा बनी हुई है, तब यह शुभ संकेत नहीं कि बांग्लादेश से लगी सीमा भी भारत के लिए चिंता का कारण बने।

बड़ी सच्चाई है कि पाक का जन्म ही भारत विरोधी मानसिकता से हुआ है। ऐसे में अतीत से सबक लेते हुए भारत को अपनी सीमाओं की सुरक्षा को लेकर किसी तरह की चूक नहीं करनी चाहिए। किसी भी तरह की ढिलाई भारतीय सुरक्षा पर भारी पड़ सकती है। भारत की उदारता को बांग्लादेश हमारी कमजोरी न मान ले, इसलिए उसे बताना जरूरी है कि भारत से टकराव की कीमत उसे भविष्य में चुकानी पड़ सकती है। यह भी कि संबंधों में यह कसैलापन, दौगलापन एवं टकराव लंबे समय तक नहीं चल सकता। उसकी यह कटुता उसके लिये ही कालांतर घातकएवं विनाशकारी साबित हो सकती है। यह विडंबना ही है कि नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस से क्षेत्र में शांति व सद्भाव की जो उम्मीदें थी, उसमें उन्होंने मुस्लिम कट्टरपंथ को आगे करके निराश ही किया है। उनकी सरकार लगातार विघटनकारी, अड़ियल व बदमिजाजी का रुख अपनाए हुए है, दोनों देशों के संबंध बिगाड़ने में पर्दे के पीछे पाकिस्तान की भूमिका को साफ-साफ देख जा रहा है। जबकि शेख हसीना शासनकाल में भारत और बांग्लादेश के संबंध सामान्य थे तो भारत बांग्लादेश को विश्वास में लेकर बाड़बंदी कर रहा था लेकिन अब यूनुस सरकार लगातार उकसाने वाली कार्रवाई कर रही है। उसने पाकिस्तानियों का बांग्लादेश में प्रवेश आसान कर दिया है तो पाक के बांग्लादेश को भारत विरोधी प्लेटफॉर्म के रूप में इस्तेमाल करने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। इसी के चलते बांग्लादेश की भारत विरोधी बयानबाजी और कारगुजारी से दोनों देशों के संबंधों में जबरदस्त कड़वाहट आ चुकी है। बावजूद इसके गत दिसम्बर में भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने अपनी ढाका यात्रा के दौरान बांग्लादेश को आश्वस्त किया था कि भारत उसका दोस्त बना हुआ है और व्यापार, ऊर्जा, बुनियादी ढांचे और कनेक्टिविटी के मामलों में रिश्ते पहले की तरह बरकरार रहेंगे। उस समय ऐसा लगा था कि दोनों पक्षों ने सीमा पर स्थिति को शांत कर लिया है।

यूनुस सरकार ने भारत विरोधी तत्वों को न केवल हवा दी है बल्कि उनको उग्र कर दिया है। जेल में बंद कई भारत विरोधी तत्वों को बेल दे दी गयी है, ये ही तत्व भारत में अस्थिरता फैलाने की साजिश रच रहे हैं। लिहाजा भारत के लिये बॉर्डर पर घेराबंदी अत्यावश्यक हो गयी है। राजनीतिक आग्रह, पूर्वाग्रह एवं दुराग्रह के चलते यूनुस सरकार शेख हसीना के पिता की विरासत को निपटाने एवं धुंधलाने की कोशिशों में लगी हुई है। कट्टरपंथी तत्व जनाक्रोश के चलते अपनी सुविधा का मुहावरा गड़ने का प्रयास कर रहे हैं। भारत में पहले से ही लाखों बांग्लादेशी अवैध रूप से रह रहे हैं लेकिन ढाका द्वारा आतंकवादियों और दोषी ठहराए गए इस्लामी कट्टरपंथियों की रिहाई के बाद भारत द्वारा बॉर्डर पर कंटीले तारों को लगाने की कोशिश का बांग्लादेश ?सरकार द्वारा कड़ा विरोध दर्शा रहा है कि पाकिस्तान की तरह बांग्लादेश भी भारत में अस्थिरता, अशांति एवं अराजकता फैलाना चाहता है।

बांग्लादेश बाड़ लगाने के समझौते का सम्मान करने के बजाय उसकी समीक्षा करने की बात करके उसमें रौड़ा अटकाना चाह रहा है। वह उन स्थानों पर कंटीले तारों वाली बाड़ लगाने का खास तौर पर विरोध कर रहा है, जहां से बड़े पैमाने पर घुसपैठ और तस्करी होती है और यही से आतंकवादी गतिविधियों को संचालित करने की संभावनाएं हैं। इसके कुछ पुष्ट प्रमाण भी मिले है। इस संदर्भ में बांग्लादेश वैसे ही कुतर्क एवं बेतूके तथ्य प्रस्तुत कर रहा है, जैसे सीमा सुरक्षा के भारत के प्रयत्नों पर पाकिस्तान करता रहता है। हैरानी नहीं कि यह बांग्लादेश से पाकिस्तान की हालिया नजदीकी किसी बड़ी दुर्घटना या आतंकी हमले का सबब बन जाये। भारत इसकी अनदेखी नहीं कर सकता। भारत को यह देखना होगा कि कहीं ये दोनों देश मिलकर उसके खिलाफ कोई ताना-बाना तो नहीं बुन रहे हैं? निश्चित रूप से पिछले दिनों बांग्लादेश से रिश्तों में जिस तरह से अविश्वास एवं कडवाहट उपजी है, उसके चलते भारत अपनी सुरक्षा चिंताओं को नजरअंदाज नहीं कर सकता। भारत के लिए यही उचित है कि वह पाक-बांग्लादेश के संभावित गठजोड़ से सावधान रहे। भारत को अपनी सुरक्षा चिंताओं के लिये कदम उठाने ही चाहिए। बीएसएफ और बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश यानी बीजीबी में कई बार बातचीत के बाद बाड़बंदी मुद्दे पर सहमति बन चुकी है। लेकिन बांग्लादेश भारत की सदाशयता एवं उदारता के बावजूद टकराव के मूड में नजर आता है। ऐसा ही रवैया उसका अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को लेकर भी रहा है, जिस बारे में वह अब दलील दे रहा है कि हालिया बांग्लादेश में हिन्दुओं से जुड़ी हिंसक घटनाएं सांप्रदायिक नहीं बल्कि राजनीतिक कारणों से हुई हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि दोनों देशों के संबंध बिगाड़ने में पर्दे के पीछे पाकिस्तान की भूमिका हो। जिस बांग्लादेश को पाकिस्तानी क्रूरता से मुक्त कराकर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत ने तमाम कुर्बानियों के बाद जन्म दिया, उसका यह रवैया दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं, बल्कि विडम्बनापूर्ण कहा जाएगा।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

संपादकीय

हल नहीं है ड़ॉट ड़ॉट ड़ॉट

आतंकवाद के मुद्दे को लेकर पाकिस्तान को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने नसीहत और चेतावनी दी है। उन्होंने कहा है कि जम्मू-कश्मीर पीओके के बिना अधूरा है। इस क्षेत्र को आतंकवाद के केंद्र के रूप में इस्तेमाल किए जाने का आरोप लगाते हुए रक्षा मंत्री ने इसकी भूमि प्रशिक्षण शिविरों और घुसपैठ गतिविधियों के लॉन्च पैड़ के तौर पर करने की बात कही। रक्षा मंत्री ने जम्मू-कश्मीर के अखनूर में सशस्त्र बल वयोवृद्ध दिवस रैली को संबोधित करते हुए कहा कि इसकी पक्की जानकारी भारत के पास है, पाकिस्तान को यह बीमारी खत्म करनी होगी, नहीं तो ड़ॉट-ड़ॉट-ड़ॉट। पीओके के लोगों को सम्मानजनक जीवन से वंचित रखने और धर्म के नाम पर उनका शोषण करने की भी उन्होंने चर्चा की। पीओके के प्रधानमंत्री की टिप्पणियों की निंदा करते हुए कहा कि यह जिया-उल-हक के समय से पोषित भारत विरोधी एजेंड़ा का हिस्सा है। पीओके यानी पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के प्रधानमंत्री अनवर-उल-हक ने बीते हफ्ते जिहादी संस्कृति को फिर जीवित करने की घोषणा की है। जिहाद की वकालत कर, अल-जिहाद के नारे लगवाने के पीछे उनकी मंशा इलाके की शांति भंग कर स्थिरता को ठेस लगाने की है। भारत-पाकिस्तान के दरम्यान 1965 में अखनूर में ही युद्ध लड़ा गया था। 1948, 1965, 1971 से लेकर 99 तक पाकिस्तान को मुंह की खानी पड़ी परंतु घुसपैठ की घटनाएं रुकी नहीं हैं। न ही लगातार अंतरराष्ट्रीय दबाव के बावजूद पाकिस्तान आतंकवाद को समर्थन देने की नीति छोड़.रहा है। सरकार का दावा है कि धारा 370 को हटाने के बाद से जम्मू-कश्मीर में महत्त्वपूर्ण बदलाव नजर आ रहा है। राज्य की अब्दुल्ला सरकार ने भी लचीला रुख अख्तियार किया है। सरकार इस इलाके को भारत के माथे के मुकुट का मणि बताते हुए लंबे समय से दावा कर रही है कि वह पीओके को वापस लेने के प्रति गंभीर है। पाकिस्तान का भारत विरोधी रुख किसी से छिपा नहीं है। शांति के प्रति उदासीन इस पड़ोसी मुल्क के पास आंतरिक समस्याओं का इतना अंबार है कि वह अंतरराष्ट्रीय मसलों के प्रति उपेक्षा भाव अपनाए रहने को मजबूर लगता है। सैनिकों की हौंसलाफजाई तक तो ठीक है परंतु जब उस पर ड़पट काम नहीं करती तो यूं ड़ॉट-ड़ॉट-ड़ॉट जैसे हर्फों का क्या असर हो सकता है। कोरी धमकियों की बजाय अब सरकार को स्पष्ट तौर पर उंगली टेढ़ी करने से परहेज नहीं करना चाहिए।

चिंतन-मनन

द्वंद्व के बीच शांति की खोज

केवल ज्ञान की बातें करों। किसी व्यक्ति के बारे में दूसरे व्यक्ति से सुनी बातें मत दोहराओ। जब कोई व्यक्ति तुम्हें नकारात्मक बातें कहे, तो उसे वहीं रोक दो, उस पर वास भी मत करो। यदि कोई तुम पर कुछ आरोप लगाये, तो उस पर वास न करो। यह जान लो कि वह बस तुम्हारे बुरे कर्मो को ले रहा है और उसे छोड़ दो। यदि तुम गुरु के निकटतम में से एक हो तो संसार के सारे आरोपों को हंसते हुए ले लोगे। द्वंद्व संसार का स्वभाव है और शांति आत्मा का स्वभाव है। द्वंद्व के बीच शान्ति की खोज करो। द्वंद्व समाप्त करने की चेष्टा द्वंद्व को और ज्यादा बढ़ाती है। आत्मा की शरण में आकर विरोध के साथ रहो। जब शान्ति से मन ऊबने लगे तो सांसारिक क्रिया-कलापों का मजा लो। और जब इनसे थक जाओ तो आत्मा की शान्ति में आ जाओ। यदि तुम गुरु के करीब हो, तो दोनों क्रिया कलाप साथ-साथ करोगे। ईश्वर व्यापक हैं। और अन्नत काल से ईश्वर सभी विरोधों को संभालते आए हैं। यदि ईश्वर सारे विरोधों को ले सकते हैं, तो निश्चित ही तुम भी ऐसा कर सकते हो। जैसे ही तुम विरोध के साथ रहना स्वीकार कर लेते हो, विरोध स्वतः समाप्त हो जाता है। शान्ति चाहने वाले लोग लड़ना नहीं चाहते और इसके विपरीत लड़ाई करने वाले शान्ति पसन्द नहीं करते। शान्ति चाहने वाले लड़ाई से बचना चाहते हैं। आवश्यक यह है कि मन को शांत करें और फिर लड़ें। गीता की यही मूल शिक्षा है। कृष्ण अजरुन को उपदेश देते हैं कि अजरुन युद्ध करो मगर हृदय को शान्त रखकर। संसार में जैसे ही तुम एक विरोध को समाप्त करते हो तो दूसरा खड़ा हो जाता है। उदाहरण के लिए जैसे ही रूस की समस्या समाप्त हुई, बोस्निया की समस्या खड़ी हो गई। एक समस्या हल होती है, तो दूसरी शुरू हो जाती है। तुम्हें जुकाम हुआ। वह जरा ठीक हुआ नहीं कि फिर कमर में दर्द शुरू हो गया। फिर यह ठीक हो गया। और तो और, शरीर ठीक ठाक है तो मन अशान्त हो जाता है। बिना किसी इरादे के गलतफहमियां पैदा होती हैं, उलझन पैदा होती है। यह तुम्हारे ऊपर नहीं कि तुम उनका समाधान करो।

आस्था का महापर्व बाजारवाद के हवाले

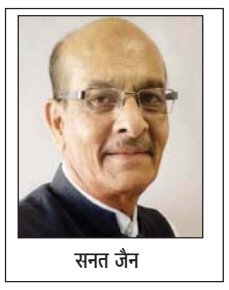

सनत जैन

प्रयागराज के त्रिवेणी तट पर आस्था का सबसे बड़ा महाकुंभ हो रहा है। संसार का यह सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन है, जिसमें करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु शामिल होते हैं। देश और विदेश से कुंभ मेले में शामिल होने के लिए आने वाले श्रद्धालुओं के लिए बड़े पैमाने पर इंतजाम किया जाता है। कुंभ मेला लगातार एक माह से ज्यादा दिनों तक चलता है। नागा साधु कुंभ मेले में सबसे बड़े आकर्षण का केंद्र होते हैं। इस बार किन्नर साधु भी बड़े पैमाने पर कुंभ मेले में पहुंचे हैं। धार्मिक आस्था के इस महाकुंभ में पहली बार बाजारवाद भी देखने को मिल रहा है। साधु, सन्यासी भी इससे अछूते नहीं दिख रहे हैं। जो साधु, सन्यासी कुंभ मेले में पहुंच रहे हैं उनमें से अधिकांश नेशनल मीडिया और सोशल मीडिया में धूम मचा रहे हैं। गंगा, जमुना और सरस्वती की इस त्रिवेणी में सब अपने-अपने पाप धोकर ज्यादा से ज्यादा पुण्य पाने की लालसा लिए आते हैं। वहीं बाजारवाद के पोषक हर वह हथकंडा अपना रहे हैं जिससे वो ज्यादा से ज्यादा अर्थ कमा सकें। वहीं दूसरी तरफ धार्मिक आस्था के इस महापर्व पर अनेक साधु, सन्यासियों द्वारा जिस तरह से अपने भक्तों को लुभाया जा रहा है, जिस तरह से कुंभ मेले में साधु, सन्यास अपनी शान-शौकत का प्रदर्शन कर रहे हैं, सा सन्यासी के पंडाल और उनके पंडाल में भक्तों के लि जिस तरह के आधुनिक इंतजाम किए गए हैं वो भ सभी का ध्यान खींच रहे हैं। एक-एक रात रुकने क खर्चा लाखों रुपया बताया जा रहा है। साधु-संतों क उनके भक्त चढ़ावे में वह सब दे रहे हैं जिसक कल्पना करना धार्मिक आयोजनों में संभव नहीं होत है।

इसके अतिरिक्त सरकार भी इस अर्थतंत्र के युग महाकुंभ के इस आयोजन से पुण्य के रूप में वह स कुछ पा लेना चाहती है जो शायद इसके बाद संभव हो। सरकार ने दावा किया है कि एक दिन में त्रिवेण के तट पर 3.50 करोड़ श्रद्धालुओं ने आस्था क डुबकी लगाकर अपने पापों को धोया है। तड़के शुर हुआ यह स्नान रात तक चलता रहा। कुंभ के आयोजकों और सरकार के द्वारा एक ही दिन में 3.5 करोड लोगों के स्नान करने की बात पूरे देश औ दुनिया में चर्चा का विषय बन गई है। कुंभ मेला क्षे में साढ़े 3 करोड़ श्रद्धालु होने का जो दावा किया ज रहा है उस पर कोई भी विश्वास करने के लिए तैया नहीं है। कहा जा रहा है कि मेला क्षेत्र के लिए जिर तरह का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है उसमें सरका मशीनरी इंतजाम के नाम पर भारी भ्रष्टाचार कर रही है, लेकिन इस तरह से यदि सरकारी प्रचार किया जाता है तो जिस पर लोगों को विश्वास ही ना हो तो वह चर्चा का विषय बन जाता है। अब सच्चाई अपनी जगह है और दावे-प्रतिदावे अपनी जगह, जिस पर लगातार बात होती रहेगी।

बहरहाल कुंभ के मेला क्षेत्र में साधु, संतों और सन्यासियों द्वारा सनातन की शक्ति और वैभव का प्रदर्शन किया जा रहा है। अखाड़े और नागा साधु-संतों को लेकर जिस तरह से श्रद्धालुओं के बीच में उनका आकर्षण बना हुआ है वह काबिले जिक्र तो हो ही गया है। देसी और विदेशी श्रद्धालु भी कुंभ के मेले में आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। विश्व के कई देशों से वहां के नागरिक जो सनातन परंपरा से प्रभावित हैं वह हिंदी और संस्कृत के मत्रों के साथ कुंभ मेले में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। उसको लेकर कुंभ मेले का आकर्षण अपने आप में अनूठा है। सारी दुनिया के देशों में इतनी बड़ी संख्या में कहीं पर श्रद्धालु एकत्रित नहीं होते हैं। यह अपने आप में एक रिकॉर्ड है। कुंभ के मेले में जाकर साधु-संतों की शोभायात्रा, तरह-तरह की ध्वजा, घोड़े-हाथी पर सवार धर्मगुरु, नागा साधुओं का त्रिशूल, भाला, गदा, तलवार और विभिन्न वेशभूषा में जो प्रदर्शन किए जाते हैं उसको श्रद्धालु देखकर रोमांचित हो उठते हैं। इस बार के कुंभ मेले में एप्पल के को-फाउंडर स्टीव जॉब्स का एक पत्र 4.32 करोड रुपए में नीलाम हुआ है। 1974 में उन्होंने अपने जन्मदिन पर अपने दोस्त को यह पत्र भेजा था,

जिसमें उन्होंने कुंभ मेले में शामिल होने की इच्छा जताई थी। उनकी पत्नी लॉरेन पावेल अपने पति स्टीव के निधन के 12 साल के बाद कुंभ मेले में पहुंची हैं, वह यहां पर रहकर कल्पवास करने जा रही हैं। यह आस्था है और महाकुंभ ऐसी ही आस्थाओं का महापर्व है। यहां आस्था के साथ ही करोड़ों-खरबों रुपयों का व्यापार भी हो रहा, जिसके और बढ़ने की संभावनाएं व्यक्त की जा रही हैं, जो बाजारवाद को रेखांकित करता है। ऐसे में यह ध्यान रखने वाली बात है कि आस्था का महापर्व कुंभ पूरी तरह बाजारवाद के हवाले न होने पाए और अपनी परंपराओं को बनाए रखे, जिसके लिए पूरी दुनियां में भारत पहचाना जाता है।

मुद्दा: तृणमूल में 'खेला' तो होगा

कुमार समीर

इंफोसिस के सह-संस्थापक नारायण मूर्ति ने एक साल पहले युवाओं को हफ्ते में 70 घंटे काम करने की सलाह दी थी और अब निर्माण कंपनी लार्सन एंड टुब्रो (एल एंड टी) के अध्यक्ष एस. एन. सुब्रमण्यम ने अपने कर्मचारियों से कहा है कि कामगारों को हफ्ते में 90 घंटे काम करने को तैयार रहना चाहिए। इतने पर ही नहीं रुके, आगे कहा कि एक्स्ट्रा रिजल्ट के लिए एक्स्ट्रा काम करना होगा और इसके लिए रविवार को भी काम करना चाहिए। आखिर, घर में रह कर मजदूर बीवी का मुंह कितनी देर तक निहारते रहेंगे। अदानी ग्रुप के अध्यक्ष गौतम अदानी ने भी उनकी बातों का समर्थन करते हुए कहा कि अगर काम ही नहीं रहा तो बीवी घर से भाग जाएगी और फिर क्या होगा?

एल एंड टी के चेयरमैन के बयान के बाद देश में फिर से मजदूरों के काम के घंटे को लेकर बहस शुरू हो गई है। कॉरपोरेट जगत के अंदर भी इसका विरोध हो रहा है। आरपीजी ग्रुप के चेयरपर्सन हर्ष गोयनका ने एल एंड टी चेयरमैन के बयान की आलोचना करते हुए कहा, एक हफ्ते में 90 घंटे काम? रविवार को 'सन-ड्यूटी' क्यों न कहा जाए और 'छुट्टी' को एक मिथकीय अवधारणा क्यों न बना दिया जाए! वर्क-लाइफ बैलेंस वैकल्पिक नहीं, बल्कि जरूरी है। यह भी सवाल उठाया जा रहा है कि जब भारत में पहले

से ही लोग सबसे ज्यादा काम करते हैं, तो क्यं कामगारों के घंटे बढ़ाने की बात उठती रहती है: अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की 10 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में भारतीय सबसे ज्यादा काम करते हैं। रिपोर्ट के अनुसार, भारत में प्रति सप्ताह 46.7 घंटे, चीन में 46.01, ब्राजील में 39, अमेरिका में 38, जापान में 36.6, इटली में 36.3, ब्रिटेन में 35.5, खंस में 35.9, जर्मनी में 34.2 और कनाडा में 32.5 घंटे मजदूरों से काम कराया जाता है। इन आंकड़ों के बावजूद भारत में काम के घंटे बढ़ाने के लिए जब-तब शिगूफा छोड़ा जाता रहा है।

सच तो यह है कि पूरी बहस को इसलिए संचालित किया जा रहा है ताकि मोदी सरकार द्वारा मार्च, 2025 में लाए जाने वाले लेबर कोड, जिसमें काम के घंटे 12 कर दिए जाने हैं, की सामाजिक स्वीकृति हासिल की जा सके। इसके लिए बीच-बीच में इस तरह की चचाएं शुरू करवाने का ताना-बाना बुना जाता है। सच तो यह है कि दुनिया में काम के घंटे बढ़ाने के तर्कों के विरुद्ध आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के दौर में काम के घंटे कम करने की कवायद- कार्रवाई हो रही है। तमाम देशों में सप्ताह में चार दिन काम की पद्धति शुरू हुई है। जूम के मालिक एरिक युवान जैसे एआई इनोवेटर्स का मानना है कि एआई हर कंपनी के लिए चार दिन का कार्यसप्ताह हासिल करने की कुंजी होगा। उनके अनुसार चार दिन के वर्किंग में 92 प्रतिशत की सफलता दर है। जापान जैसे देशों में काम के घंटे लगातार कम किए जा रहे हैं। साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार, जहां जापान में वर्ष 2000 में 1839 घंटे सालाना काम के थे वहीं उसे 2022 में घटा कर 1629 घंटे सालाना कर दिया गया। इससे लगभग वार्षिक काम के घंटे में 11.6 प्रतिशत की गिरावट आई। बेल्जियम, आइसलैंड़, यूएई, स्पेन और नीदरलैंड़ जैसे देशों में चार दिन के कार्य दिवस सप्ताह में कर दिए गए हैं। जापान की रिक्रूट वर्क्स इंस्टिट्यूट के विश्लेषक ताकाशी सकामोटो के निष्कर्ष के अनुसार, देश में अब कई यूरोपीय देशों की तरह काम के घंटे कम किए जा रहे हैं।

ऑटोनॉमी की एक रिपोर्ट के अनुसार, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आने के बाद ब्रिटेन में 88 प्रतिशत कंपनियां अपने कर्मचारियों के काम के घंटे 10 प्रतिशत तक कम कर रही हैं यानी कुल मिला कर कहा जाए तो दुनिया में काम के घंटे कम करने की दिशा में काम हो रहा है वहीं भारत, जहां पहले से ही काम के घंटे ज्यादा हैं, में उन्हें बढ़ाने की वकालत की जा रही है। दरअसल, देश में भीषण बेरोजगारी और महंगाई में मजदूरों की मजबूरी का फायदा उठा कर काम के घंटे 12 करने का कानून बनाया जा रहा है। दुखद यह है कि इस सबसे उत्पादन क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। संवैधानिक दृष्टि से देखें तो काम के घंटे बढ़ाने को जो कुछ भी किया जा रहा है, वह स्पष्ट तौर पर भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21, 42 और 43 का उल्लंघन है। हमारे संविधान की प्रस्तावना में ही व्यक्ति की गरिमा की बात कही गई है, जिसकी मौलिक अधिकार और नीति-निर्देशक तत्वों में व्याख्या की गई है। अनुच्छेद 42 जहां काम की न्यायसंगत और मानवोचित दशाओं के लिए राज्य की जवाबदेही तय करता है वहीं अनुच्छेद 43 मजदूरों को काम, निर्वाह मजदूरी, शिष्ट जीवन स्तर और अवकाश की संपूर्ण उपभोग सुनिश्चित करने वाली काम की दशाएं, सामाजिक और सांस्कृतिक अवसर प्राप्त करने के लिए राज्य को जिम्मेदार बनाता है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के दौर में जब दुनिया बड़े पैमाने पर बेरोजगारी के खतरे को महसूस कर रही है, तब भारत में काम के घंटे बढ़ाने के कारण बेरोजगारी और भी बढ़ेगी, यह तय है।

स्वामी, प्रकाशक और मुद्रक डा0 सरवर जमाल ने आर0 डी0 प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्रा0 लि0 प्लाट नं0 16-17 पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, रोड नं0 झ्र 09 पटना झ्र 800013 से छपवाकर कार्यालय 203 बी, ब्लाक रंजीत रेसीडेंसीज, साकेतपुरी, मछली गली, राजा बाजार पटना- 800014 से प्रकाशित किया ।सम्पादक: श्रीमती शबाना प्रवीन पी0 आर0 बी0 एक्ट के तहत खबरों की जिम्मेवार' मैनेजिंग एडिटर: डा0 राजीव कुमार, स्थानीय सम्पादक: डा0 नूतन कुमारी, उप सम्पादक: तबस्सुम नवाज PRGI NO:- BIHHIN/2023/86924 E-mail- Newsindogulf730@gmail.com,Mob-9472871824/8544031786 समस्त विवादों का निवारण पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे।

कुशल टंडन संग पार्टी करती दिखीं शिवांगी जोशी

शिवांगी जोशी और कुशल टंडन, टीवी के जाने-माने एक्टर्स हैं। दोनों के पिछले साल से रिलेशनशिप में होने की बात सामने आ रही है। लेकिन अभी तक इन्हें साथ में फैंस ने कपल के तौर पर नहीं देखा, ना ही दोनों एक्टर्स ने इस बात की पुष्टि भी की। ऐसे में जब शिवांगी और कुशल को साथ में पार्टी करते देखा गया और शिवांगी ने ये वीडियो अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर लगाया।

शिवांगी और कुशल की जोड़ी को पसंद करने वाले फैंस ने जब दोनों का साथ में पार्टी वाला वीडियो देखा तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। एक फैन ने सोशल मीडिया पर लिखा- 'कुशल और शिवांगी अपने प्राइवेसी जोन से बाहर आने में आपको एक साल का समय लगा है। लेकिन मैं दोनों को साथ में देखकर खुश हूं।' एक और फैन लिखती है- 'ये दोनों साथ में बहुत प्यारे लगते हैं।' फैन ने कुशल और शिवांगी की जोड़ी को एक नाम भी दिया- 'कुशिव'। दोनों एक्टर्स के नाम को मिलाकर यह नया नाम बना है। कई फैंस अपनी पसंदीदा जोड़ी को ऐसी अलग तरह का नाम देते हैं।

कुशल ने शादी करने की बात की

साल 2024 में कुशल टंडन ने एक इंटरव्यू में कहा था कि वह प्यार में हैं और उनके माता-पिता चाहते हैं कि वह जल्द शादी कर लें। लेकिन वह अपने रिश्ते को धीरे-धीरे आगे लेकर जाना चाहते हैं।

सीरियल के सेट पर प्यार की शुरुआत

शिवांगी जोशी और कुशल टंडन टीवी सीरियल बरसातें-मौसम प्यार का में साथ नजर आए थे। ऐसा माना जाता है कि इसी सीरियल के सेट पर दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ी थी। इससे पहले शिवांगी ये रिश्ता क्या कहलाता है सीरियल से पॉपुलर हुईं। वहीं कुशल टंडन सीरियल एक हजारों में मेरी बहना है से लाइमलाइट में आए।

अभी एक्टिंग में नए मुकाम की तलाश में हैं श्रेया चौधरी

बंदिश बैंडिट्स के सीजन 2 से चर्चा में आईं एक्ट्रेस श्रेया चौधरी ने इससे पहले भी कई शोज और वेब सीरीज में काम किया है। उनके रोल्स काफी दमदार रहे हैं और वो अभी एक्टिंग में नए मुकाम की तलाश में हैं।

ओटीटी ने कई नए कलाकारों को न केवल अभिनय की जमीन दी, मगर साथ ही नई-नई भूमिकाओं में एक्सपेरिमेंट करने का हौसला भी। ऐसे ही कलाकारों में एक अभिनेत्री हैं श्रेया चौधरी, जो इन दिनों वेब सीरीज बंदिश बैंडिट्स के सीजन 2 से चर्चा में हैं। अपनी इस सीरीज में उन्हें नसीरुद्दीन शाह और दिव्या दत्ता जैसे प्रतिभाशाली कलाकारों के साथ काम करने का मौका मिला है, मगर वे इससे पहले मनीषा कोइराला के साथ डियर माया में काम कर चुकी हैं।

उनका कहना है कि मनीषा कोइराला से उन्होंने बहुत कुछ सीखा। वे कहती हैं, मैं उस वक्त काफी नई थी। 2017 की बात है। मैं जब पहले दिन सेट पर पहुंची, तो बहुत नर्वस थी। मैंने देख कि मेरे सामने एक ऐसी अभिनेत्री खड़ी हैं, जिन्होंने अपने जीवन में सब कुछ अचीव कर लिया है। कई उतार-चढ़ाव देखे हैं, मगर सेट पर उनकी विनम्रता देखते बनती थी। वे मुझसे इतने प्यार से मिलीं कि मैं तो एकदम अभिभूत हो गई। वे रोजाना सेट पर अपनी पूरी रिहर्सल करतीं। उन्होंने कभी ये नहीं जताया कि वे बड़ी अभिनेत्री हैं। अपनी इस सीरीज में मैं नसीर सर, दिव्या और शीबा मैम (दिव्या दत्ता और शीबा) के साथ काम कर चुकी हूं। जितने भी बड़े आर्टिस्ट हैं, उनमें एक बात मैंने जरूर देखी है कि वे सेट पर ऐसे आते हैं, जैसे पहली बार अभिनय करने आए हों। इन सभी कलाकारों में मैंने बच्चों-सी उत्सुकता देखी। वही जिज्ञासा, जो पहली बार होती है। मुझे लगता है कि यही बातें इन्हें बड़ा कलाकार बनाती हैं।

मेरी मां ने दिए प्यार को लेकर टिप्स

ब्यूटी पेजेंट्स में कई टाइटल जीत चुकी श्रेया अपनी हालिया सीरीज बंदिश बैंडिट्स में सिंगर तमन्ना का किरदार निभा रही हैं, जो अपनी संगीत की विरासत के बावजूद एक जुनूनी प्यार में पड़ जाती हैं। उनसे जब पूछा जाता है कि वे किस तरह के प्यार में यकीन करती हैं? क्योंकि आज प्यार ने बहुत मॉडर्न रूप ले लिया है, तो वे कहती हैं, मेरे सामने प्यार का सबसे खूबसूरत रूप मेरे माता-पिता हैं, जो अलग कास्ट से आते हैं। जब उन्होंने प्यार किया, तो उनकी शादी के लिए उनके परिवार कत्तई राजी नहीं थे, मगर वे अपने प्यार पर अडिग रहे और वे आज भी साथ हैं। मेरी मां ने मुझे और मेरे भाई को प्यार को लेकर एक सलाह दी कि कभी भी किसी से प्यार करना, तो इतना करना कि उसके लिए पूरी दुनिया से लड़ सको। मेरे पैरेंट्स के कारण प्यार को लेकर मेरी सोच जुनूनी और ओल्ड स्कूल है। मैं उसी तरह का प्यार करती हूं, मगर हां, आज की तारीख में मैं प्यार के बजाय अपने करियर पर ध्यान देना चाहती हूं। मैं एक ओल्ड स्कूल लवर हूं।

इम्तियाज अली सर की हीरोइन बनना चाहती हूं

बहुत कम लोग जानते हैं कि श्रेया इम्तियाज अली निर्देशित शॉर्ट फिल्म,द अदर वे में काम कर चुकी हैं। वे कहती हैं, इम्तियाज अली सर ही थे, जिन्होंने मुझे यकीन दिलाया कि मैं अभिनेत्री बन सकती हूं और सही राह पर हूं। मैंने उनसे अभिनय की बारीकियां सीखी और मेरी दिली इच्छा है कि इम्तियाज सर की फिल्मों की हीरोइन बनूं। मैं कोलकाता से हूं और हमेशा से अभिनेत्री बनना चाहती थी, मगर मेरा यकीन पुख्ता करने में इम्तियाज सर का बहुत बड़ा हाथ रहा। जल्द ही मैं बोमन इरानी निर्देशित मेहता बॉयज में नजर आऊंगी। मेरा रोल काफी दिलचस्प है। मैं फिल्म को लेकर काफी उत्सुक हूं।

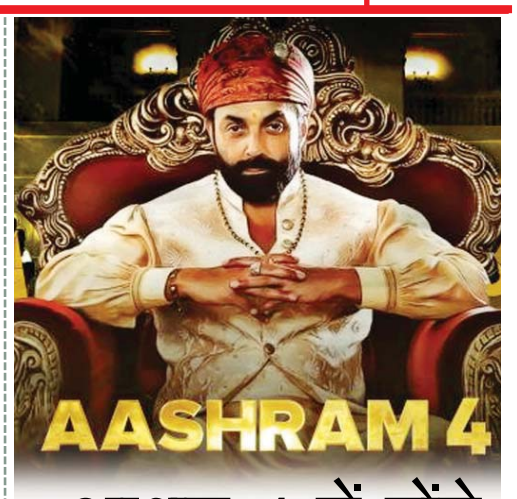

आश्रम 4 में होंगे 5 एपिसोड, नए ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आएगी सीरीज

एनिमल की अपार सफलता के चलते बॉबी देओल पर इंडस्ट्री बड़े दांव लगा रही है। यहां तक कि रिलीज होने से पेंडिंग चल रहे प्रोजेक्ट्स को भी रीवाइव किया जा रहा है। मिसाल के तौर पर आश्रम 4। इसमें वे नेगेटिव रोल में रहे हैं। तीसरा सीजन दो साल पहले एमएक्स प्लेयर प्लेटफॉर्म पर आया था। ऐसे में अब नए साल में आश्रम 4 को रिलीज करने की तैयारियां जारी हैं। इस सीरीज को प्रकाश झा डायरेक्ट करते रहे हैं। हालांकि आगे के सीजन्स को वह सिर्फ सुपरवाइज करेंगे। डायरेक्शन की कमान किसी और के हाथ होगी। इसकी अनाउंसमेंट जल्द होगी।

इस बार सीरीज की कहानी किरदार पम्मी पर ही फोकस होगी

वेब सीरीज आश्रम 4 प्राइम वीडियो पर ही आएगा। सीजन 5 की भी चर्चा है। लेकिन वे एडवांस स्टेज पर है। यह पहले सीजन 4 आ जाए, तो उसके बाद देखेंगे क्या करना है। मेकर्स को ओटीटी वालों ने कहा है कि इस पर काम करना है। इसके अलावा सीजन 5 की भी स्टोरी लाइन तैयारी में है। सीजन 4 की कहानी मूल पम्मी के किरदार पर है। इस बार के सीजन के कुल 5 एपिसोड हैं।

जयपुर और भोपाल में हुई शूटिंग

इसकी शूटिंग जयपुर और भोपाल में हुई है। जबकि प्रकाश झा के बैनर से एक और प्रोजेक्ट जिसका पहले नाम लाल बत्ती था, उसकी शूटिंग यूपी में प्रयागराज और लखनऊ में की गई है। आश्रम 4 के चार-पांच एपिसोड पहले ही शूट कर लिए गए थे।

जयदीप अहलावत ने पाताल लोक 2 के कई रहस्य से उठाया पर्दा

पाताल लोक अमेजन प्राइम वीडियो पर सबसे पसंदीदा क्राइम थ्रिलर वेब सीरीज में से एक है। इस सीरीज का दूसरा भाग पाताल लोक 2 बस कुछ ही दिनों में वापसी कर रहा है। निर्माताओं ने वेब सीरीज का ट्रेलर रिलीज कर प्रशंसकों की उत्सुकता को बढ़ा दिया है। इसी बीच सीरीज में हाथीराम चौधरी की भूमिका से वापसी कर रहे जयदीप अहलावत ने सीरीज के कई रहस्यों से पर्दा उठाया है।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, एक इंटरव्यू के दौरान जयदीप अहलावत ने कहा कि चार साल के ब्रेक के बाद हाथीराम चौधरी की भूमिका में वापसी करने में उन्हें कोई खास मशक्कत नहीं करनी पड़ी। जयदीप अहलावत ने आगे कहा, सीजन 1 के आखिर तक हाथीराम ने खुद को आजाद महसूस कराया, उसे अपनी पत्नी, बेटे या सहकर्मियों के सामने खुद को साबित करने की जरूरत नहीं थी। वह अब पहले से ज्यादा शांत है और उसने अपनी परिस्थितियों को स्वीकार कर लिया है। आगे जयदीप अहलावत ने कहा, यह एक ऐसी भूमिका है जो मेरे बहुत करीब है और मैंने इसके साथ बहुत सारे यादगार पल बिताए और इसे फिर से निभाना घर वापस जाने जैसा था। सुदीप शर्मा द्वारा निर्मित, पाताल लोक 2, 17 जनवरी को अमेजन प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम होगी।

धूम 4 में रणबीर कपूर का होगा नया लुक, अगले साल अप्रैल में शुरू होगी शूटिंग!

बड़े पर्दे पर एक बार फिर से धूम मचाने की तैयारी शुरू हो गई है। पहले ही यह खबर आई थी कि रणबीर कपूर बॉलीवुड की इस ब्लॉकबस्टर फ्रेंचाइज की अगली किस्त का हिस्सा होंगे। अब नई रिपोर्ट में दावा किया गया है कि अगले साल अप्रैल 2026 में इस फिल्म की शूटिंग शुरू हो जाएगी। रणबीर इन दिनों मुंबई में संजय लीला भंसाली की लव एंड वॉर की शूटिंग कर रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, धूम 4 के लिए रणबीर कपूर एक नया लुक भी अपनाएंगे। अभी वह लव एंड वॉर के लिए आलिया भट्ट और विक्की कौशल के साथ शूटिंग कर रहे हैं। जबकि आगे वह नितेश तिवारी की रामायण में भी भगवान राम के रोल में नजर आने वाले हैं।

धूम 4 में एकदम नए लुक में नजर आएंगे रणबीर कपूर

रिपोर्ट में एक सूत्र के हवाले से कहा गया है, रणबीर कपूर को धूम 4 के लिए एक अलग दिया जाएगा। लिहाजा, इसकी शूटिंग शुरू करने से पहले, वह अपने दो मौजूदा प्रोजेक्ट्स को पूरा करेंगे। धूम 4 अगले साल अप्रैल में फ्लोर पर आ जाएगी। प्रोडक्शन टीम फिलहाल फिल्म के लिए दो लीड एक्ट्रेस और एक विलेन की कास्टिंग में जुटी हुई है।

साउथ सिनेमा से होगा फिल्म का विलेन

बताया जाता है कि फिल्म में विलेन के रोल के लिए किसी साउथ इंडियन सुपरस्टार को कास्ट करने की तैयारी है। बताया जाता है कि सूर्या को इसके लिए अप्रोच किया गया है। यशराज फिल्मस की सुपरहिट धूम फ्रेंचाइज की पहली फिल्म 2004 में रिलीज हुई थी। उसमें जॉन अब्राहम के साथ अभिषेक बच्चन और उदर चोपड़ा थे। इसके बाद धूम 2 आई, जिसमें ऋतिक रोश के साथ अभिषेक बच्चन और उदय चोपड़ा थे। जब धूम 3 में अभिषेक और उदय के साथ आमिर खा डबल रोल में थे।

अ षेक और उदय की जग ह दो यंग स्टार्स!

बीते साल सितंबर में यह खबर आई थी कि धूम 4 पर आ त्य चोपड़ा की देख ख में काम शुरू हो चुक है। फिल्म प्री-प्रोड शन फेज में है और पिछ ी तीन फिल्मों की तरह ही म 4 की स्क्रिप्ट आ त्य चोपड़ा ने विजय कृष आचार्य के साथ मिल कर तैयार की है। धूम 4 में रणबीर कपू ग्रे शेड में नजर आए गे, जो एक रीबूट फिर म होगी। इस बार फिल्म में अभि षेक बच्चन और उदय चोपड़ा की जगह पुलिस वाले दो दोस्तों की जोड़ नजर आएगी, जिर के लिए यंग जेन शन के दो एक्ट र्स को कास्ट किर जाएगा।

तृप्ति के फिल्म से बाहर होने को अनुराग बसु ने बताया गलत

फिल्म आशिकी 3 की मेकिंग और रिलीज को लेकर सिनेमा प्रेमियों में गजब का उत्साह देखने को मिल रहा है। पहले खबरें आईं कि अभिनेत्री तृप्ति डिमरी इस फिल्म में नजर आने वाली हैं, फिर उनके नाम को फिल्म से बाहर किए जाने की भी अपडेट सामने आई। आशिकी 3 से तृप्ति के बाहर होने को लेकर अब अनुराग बसु ने अपनी चुप्पी तोड़ी है।

अनुराग बसु ने तृप्ति को लेकर कही ये बात

उन्होंने कहा कि मेकर्स ने फिल्म में कार्तिक आर्यन के साथ किसी अन्य अभिनेत्री को कास्ट करने का सोचा है। उन्हें अभिनेत्री में मासूमियत चाहिए, ऐसे में मेकर्स के हिसाब से तृप्ति इन मानदंडों पर खरी उतरती हैं। आशिकी 3 के निर्देशक अनुराग बसु ने चल रही अफवाहों पर प्रतिक्रिया दी है और मिड-डे से कहा है, यह सच नहीं है। तृप्ति भी यह जानती है।

बॉक्स ऑफिस पर नहीं चली फिल्में

ऐसे में दो तरह की खबरें चर्चा में हैं। तृप्ति फिल्म का हिस्सा हैं ऐसा अनुराग बसु का कहना है। वहीं, जूम की एक रिपोर्ट की मानें तो आशिकी 3 में तृप्ति को कास्ट किया जाना था। हालांकि, मेकर्स का मानना है कि इस फिल्म में वो सेट नहीं हुईं, इसके कारण फिल्म से उनका नाम बाहर कर दिया गया है। फिल्म एनिमल के बाद तृप्ति लगातार अपनी फिल्मों को लेकर चर्चा में बनी हुई हैं। टी सीरीज की ओर से बयान जारी किया गया। इसमें कहा गया कि हम आशिकी के किसी सीक्वल ि स्से पर काम नहीं कर रहे हैं। हम कि भी चल रही अफवाहों का स्पष्ट रू से खंडन करते हैं जो यह सुझाव दे ी हैं कि आशिकी 3 को टी-सीरीज द्वारा किसी अलग शीर्षक के तहत बनाय जा रहा है। अनुराग बसु द्वारा निर्दे शित हमारी प्रस्तावित फिल्म न तो आ ाकी 3 है और न ही आशिकी फ्रेंचाइज का हिस्स है।

इन फिल्मों में नजर ाने वाली हैं अभि त्री

तृप्ति डिमरी अपनी आगामी फिल्म ड़क 2 को लेकर भी चर्चा में हैं। वहीं, र बरों की मानें तो वे शाहिद कपूर के सा भी एक फिल्म में नजर आ सकत हैं।

बिग बॉस में पहले से ही तय होते हैं विनर्स!

टीवी का कॉन्ट्रोवर्शियल शो बिग बॉस-18 लगातार सुर्खियों में बना हुआ है। अब शो धीरे-धीरे अपने फिनाले की ओर बढ़ रहा है। इसी बीच अब टीवी एक्ट्रेस और बिग बॉस सीजन 11 की विनर रह चुकीं शिल्पा शिंदे का एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें उन्होंने शो के मेकर्स पर दर्शकों को उल्लू बनाने का आरोप लगाया है। इस वायरल वीडियो में शिल्पा शिंदे कहती हुई नजर आ रही हैं, मुझे नहीं पता, लेकिन कुछ लोगों को यह पता चल गया है कि मेकर्स ही विनर्स तय करते हैं। वे खुद ही चुनते हैं, अपने घर से उठाकर लाते हैं और दिखाते हैं। अब चैनल की जो भी स्ट्रैटजी हो, वह लोगों को भी पता चल गई है, इसलिए लोग अब शो ज्यादा नहीं देख रहे हैं, क्योंकि आप एक हद तक किसी को उल्लू बना सकते हैं।

बिग बॉस 11 जीत चुकी हैं शिल्पा शिंदे

बिग बॉस सीजन 11 में शिल्पा शिंदे और हिना खान के बीच कड़ा मुकाबला था, लेकिन ट्रॉफी शिल्पा शिंदे ने जीती थी। हालांकि उस समय सोशल मीडिया पर कई लोगों का मानना था कि हिना खान ट्रॉफी जीतने की हकदार थीं। बता दें कि बिग बॉस सीजन 18 का ग्रैंड फिनाले 19 जनवरी को होगा।

एनसीए के सितांशु कोटक भारत के बल्लेबाजी कोच बने, अभिषेक नायर पर दबाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। सौराष्ट्र के पूर्व बल्लेबाज सितांशु कोटक को इंग्लैंड के खिलाफ सीमित ओवरों की श्रृंखला और चैम्पियंस ट्रॉफी से पहले बृहस्पतिवार को भारत का बल्लेबाजी कोच बनाया गया चूंकि ऑस्ट्रेलिया दौरे पर सहायक कोच अभिषेक नायर का प्रदर्शन आशातीत नहीं रहा। 52 वर्ष के कोटक लंबे समय से राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में बल्लेबाजी कोच हैं। वह सीनियर और ए टीमों के साथ दौरों पर जा चुके हैं।

बीसीसीआई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा ,'यह स्पष्ट है कि अभिषेक नायर से खिलाड़ियों को मदद नहीं मिल पा रही है। कोटक लंबे समय से बल्लेबाजी कोच हैं और खिलाड़ी उन पर भरोसा करते हैं।' ऑस्ट्रेलिया में भारतीय बल्लेबाजों की तकनीकी कमियां उजागर हुई और विराट कोहली आफ स्टम्प से बाहर जाती गेंदों पर विकेट गंवाते रहे। कोटक ने घरेलू क्रिकेट में 15 शतक समेत 8000 से अधिक रन बनाए हैं। भारतीय टीम इंग्लैंड के खिलाफ 22 जनवरी से पांच टी20 और तीन वनडे मैचों की श्रृंखला खेलेगी।

सूत्र ने कहा, 'भारत ए टीम का दौरा होने वाला है और कोटक आम तौर पर ए टीमों के साथ रहते हैं। वह लेवल तीन के कोच हैं और अतीत में वीवीएस लक्ष्मण के सहायक रह चुके हैं। वह पिछले साल आयरलैंड दौरे पर भारत के कोच थे। चूंकि वह एनसीए स्टाफ हैं तो उन्हें कहीं भी भेजा जा सकता है।'

समझा जाता है कि मुंबई के पूर्व दिग्गज नायर समीक्षा के दायरे में है। ऐसा माना जा रहा है कि वह सिर्फ प्रभावी सीनियर खिलाड़ियों के लिए ही उपलब्ध रहते हैं जिनकी उनकी नियुक्ति में भूमिका रही है। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर महान पूर्व बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने भारतीय सहयोगी स्टाफ की भूमिका पर यह कहकर सवाल उठाया था कि कोहली जैसे खिलाड़ियों के साथ लगातार तकनीकी समस्या आने के लिये उन्हें जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। सहयोगी स्टाफ में दक्षिण अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज मोर्नी मोर्कल (गेंदबाजी) और नीदरलैंड के रियान टेन डोइशे (फील्डिंग) कोच हैं।

फेक न्यूज फैलाने वालों पर भड़के जसप्रीत बुमराह, बेड रेस्ट की आई थी रिपोर्ट

मुम्बई (एजेंसी)। टीम इंडिया के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को लेकर इन दिनों कई अफवाह आ रही हैं। कई रिपोर्ट में तो ये भी दावा किया जा रहा है कि बुमराह को बेड रेस्ट की सलाह दी गई है। अब इन तमाम मीडिया रिपोर्ट पर खुद बुमराह ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने इस दौरान कहा कि फेक न्यूज फैलाना आसान है। इसका मतलब है कि बुमराह को बेड रेस्ट नहीं दिया गया है।

बता दें कि हाल ही में ऑस्ट्रेलिया की सरजमीं पर खेली गई पांच टेस्ट मैचों की बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024-25 के आखिरी मुकाबले में बुमराह को बैक स्पाज्म हुआ था, जिसके बाद भारतीय गेंदबाज मैच के बीच में स्कैन के लिए गए थे। बुमराह ने इसके बाद मुकाबले में गेंदबाजी भी नहीं कराई थी। बुमराह के गेंदबाजी नहीं कराने से तरह-तरह की अटकलें लगनी शुरू हो गई थीं।

तमाम रिपोर्ट्स में तो ये भी दावा किया जा चुका है कि, बुमराह फरवरी-मार्च में खेली जाने वाली चैंपियंस ट्रॉफी भी मिस कर सकते हैं। हालांकि, बुमराह की चोट पर बीसीसीआई की तरफ से कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन खुद बुमराह ने जरूर सबकी क्लास लगा दी।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बुमराह ने अपनी बेड रेस्ट वाली फैलती खबरों पर रिप्लाई करते हुए लिखा कि, मुझे पता कि फेक न्यूज फैलाना आसान है लेकिन इससे मुझे हंसी आती है। सोर्स अविश्वसनीय।

बता दें कि, टीम इंडिया को चैंपियंस ट्रॉफी से पहले इंग्लैंड के खिलाफ व्हाइट बॉल सीरीज खेलनी है। इस सीरीज में 5 टी20 और 3 वनडे मैच खेले जाएंगे। टी20 सीरीज के लिए टीम इंडिया का ऐलान कर दिया गया है। जिसमें जसप्रीत बुमराह को आराम दिया गया है। अब देखना दिलचस्प होगा कि वनडे सीरीज के लिए उन्हें टीम में रखा जाता है या नहीं।

संन्यास के बाद भी मोटी कमाई कर रहे धवन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व सलामी बल्लेबाज शिखर धवन अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास के बाद भी मोटी कमाई कर रहे हैं। धवन आजकल फ्रेंचाइजी क्रिकेट खेल रहे हैं। वह घरेलू और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास के बाद नेपाल प्रीमियर लीग और बिग क्रिकेट लीग में खेलते हुए दिखे थे। धवन की कमाई का स्रोत लीग क्रिकेट के साथ ही विज्ञापन हैं। उनकी उनकी नेटवर्थ लगभग सवा सौ करोड़ पहुंच गयी है। धवन एंडोर्समेंट से ही हर महीने लाखों की कमाई करते हैं। उन्होंने कई बड़ी कंपनियों में निवेश भी किया है। धवन के पास दिल्ली में एक आलीशान घर भी है। एक रिपोर्ट के अनुसार धवन की नेटवर्थ लगभग 125 करोड़ रुपये के आसपास है। वह बीसीसीआई के ग्रेड ए अनुबंध में शामिल रहे थे। इसके लिए उन्हें बीसीसीआई की ओर से सालाना 5 करोड़ रुपये मिलते थे। इसके अलावा एक टेस्ट खेलने के उन्हें 15 लाख मिलते थे जबकि एकदिवसीय और टी20 के क्रमशः 6 लाख और 5 लाख रुपये मिलते थे। साल 2010 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट करियर की शुरुआत करने वाले धवन ने टीम इंडिया में सलामी बल्लेबाज के तौर पर खेला है। चैम्पियंस ट्रॉफी 2017 और आईसीसी क्रिकेट विश्व कप 2015 में वह भारत की ओर से सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों में शामिल रहे थे। आईपीएल में सबसे पहले दो शतक लगाने का रिकॉर्ड उनके नाम है।

आईपीएल से भी धवन ने करोड़ों की कमाई की है। वह 2014 से 2017 तक आईपीएल में सनराइजर्स हैदराबाद फ्रेंचाइजी के साथ रहे। इस दौरान फ्रेंचाइजी ने उन्हें हर साल 12.50 करोड़ रुपये दिए। वहीं 2018 से 2021 तक वह दिल्ली कैपिटल्स के साथ जुड़े रहे जिसने उन्हें 5.20 करोड़ हर साल दिए। 2022 से 2024 तक धवन पंजाब किंग्स के साथ रहे. पंजाब ने उन्हें 8.25 करोड़ में अपने साथ जोड़ा था। धवन ने साल 2015 में ऑस्ट्रेलिया में 730,000 डॉलर में घर खरीदा था जो भारतीय मुद्रा में लगभग 7 करोड़ था। गब्बर महंगी महंगी घड़ियों के शौकीन हैं। इसके अलावा उनके पास कई लग्जरी गाड़ियां भी हैं। वह बोट, आईएमजी रिलायंस, एल्सिस स्पोर्ट्स, नेरोलैक पेंट्स, जीएस कैलटेक्स, लेज़ और ओप्पो जैसी बड़ी कंपनियों के लिए विज्ञापन करते हैं।

फॉर्म हासिल करने के लिए घरेलू क्रिकेट खेलना सबसे अच्छा तरीका : युवराज सिंह

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व बल्लेबाज युवराज सिंह का मानना है कि फॉर्म से जूझ रहे खिलाड़ी को राष्ट्रीय टीम में अपने कद की परवाह किए बिना हमेशा घरेलू क्रिकेट में खेलना चाहिए। विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे स्टार खराब फॉर्म में हैं जिससे इस बात पर बहस चल रही है कि उन्हें रणजी ट्रॉफी मैचों में खेलना चाहिए या नहीं।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में भारत को ऑस्ट्रेलिया से हार का सामना करना पड़ा जिससे रोहित और कोहली के लाल गेंद की फॉर्म हासिल करने के लिए रणजी ट्रॉफी में खेलने की बात चल रही है। दोनों बल्लेबाज पांच टेस्ट मैचों के दौरान रन बनाने के लिए संघर्ष करते दिखे, विशेषकर रोहित, जिन्होंने सिडनी में अंतिम टेस्ट के लिए खुद नहीं खेलने का फैसला किया।

'सेलिब्रिटी क्रिकेट लीग' के लांच कार्यक्रम के दौरान युवराज ने कहा, 'घरेलू क्रिकेट महत्वपूर्ण है। मैंने हमेशा महसूस किया है कि अगर आपके पास समय है और अगर आप अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं तो आपको निश्चित रूप से घरेलू क्रिकेट खेलना चाहिए। यह अभ्यास करने और मैच खेलने का सबसे अच्छा तरीका है। मुझे लगता है कि अगर आपके पास समय है और आप चोटिल नहीं हैं तो घरेलू क्रिकेट बहुत महत्वपूर्ण है।'

सुनील गावस्कर, रवि शास्त्री और यहां तक ??कि भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने भी भारत के लगातार टेस्ट श्रृंखला गंवाने के बाद घरेलू क्रिकेट के महत्व के बारे में बात की है। रोहित 23 जनवरी से शुरू होने वाले रणजी ट्रॉफी मुकाबलों से पहले मुंबई के अभ्यास सत्रों में शामिल हुए, वहीं कोहली ने अभी तक दिल्ली के लिए घरेलू वापसी के कोई संकेत नहीं दिए हैं। ऋषभ पंत, यशस्वी जायसवाल और शुभमन गिल जैसे अन्य स्टार खिलाड़ियों ने अपनी घरेलू टीमों में खेलने के लिए अपनी उपलब्धता की पुष्टि की है।

बाएं हाथ के बेहतरीन बल्लेबाजों में शुमार युवराज ने रोहित की सराहना की कि उन्होंने खराब फॉर्म के कारण सिडनी टेस्ट से खुद को आराम देने का फैसला किया। ऑस्ट्रेलिया में हार के बाद गंभीर की भूमिका भी सवालों के घेरे में आ गई है, लेकिन युवराज ने अपने दोनों पूर्व साथियों का बचाव किया। उन्होंने कहा, 'मैंने पहले भी कहा है। आप लोग श्रृंखला दर श्रृंखला देखते हैं। अगर भारत श्रृंखला जीतता है तो आप अच्छी बातें करते हैं, अगर हारता है तो आप आलोचना करते हैं।' युवराज ने कहा, 'मैं हमेशा पांच साल या तीन साल की अवधि में टीम के ग्राफ को देखता हूं। गौतम अभी आए हैं, उन्हें और समय चाहिए। अगर आप रोहित की बात करें तो उन्होंने कप्तान के तौर पर टी20 विश्व कप जीता है, जब भारत ने वनडे विश्व कप फाइनल खेला था तब भी व ह कप्तान थे। उन्होंने मुंबई इंडियंस को पांच आईपीए खिताब दिलाए।' उन्होंने पूछा, 'उस खिलाड़ी ने आखि मैच से हटकर किसी और को मौका दिया। पहले कि ने कप्तानों ने ऐसा किया है? कृपया मुझे बताएं।' न्होंने दोहराया कि न्यूजीलैंड से घरेलू मैदान पर 0-3 से ह रना पचा पाना मुश्किल है।

इंग्लैंड दौरे में मिल सकता है सरफराज को अवसर

नई दिल्ली । घरेलू क्रिकेट में काफी रन बनाने वाले सरफराज खान को जून में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज से एक बार फिर अवसर मिल सकता है। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर उन्हें एक भी टेस्ट मैच में खेलने का मौका नहीं मिला पर वह चोटिल हो गए हैं।

ऐसे में अब वह रणजी ट्रॉफी के दूसरे राउंड में भी नहीं खेल पायेंगे हालांकि उनके नॉकआउट मैचों के लिए फिट होने की संभावना है। उन्हें पसलियों में हल्का फ्रेक्चर है। यह चोट उन्हें ऑस्ट्रेलिया में फील्डिंग करते समय लगी। भारत लौटने पर उनका स्कैन कराया गया जिसमें पसली में हल्का फ्रेक्चर है। भारतीय टीम को अब टेस्ट क्रिकेट जून में खेलना है। तब टीम इंडिया इंग्लैंड दौरे पर जाएगी जहां उसे मेजबानों के साथ 5 टेस्ट की सीरीज खेलनी है। सीरीज का पहला टेस्ट 20 जून से खेला जाएगा। सरफराज ने अपना आखिरी टेस्ट न्यूजीलैंड के खिलाफ पिछले साल नवंबर में न्यूजीलैंड के खिलाफ अपने घर में खेला था। उन्होंने अभी तक भारत के लिए केवल एक टेस्ट में डेब्यू किया है। ऐसे में अब वह तभी भारतीय टीम में नजर आ सकते हैं। सरफराज का घरेलू क्रिकेट में शानदार रिकॉर्ड है। उन्हें घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन के बाद साल 2024 में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट में डेब्यू का मौका मिला। सरफराज ने अब तक 6 टेस्ट खेले हैं जिसमें उन्होंने 371 रन बनाए हैं जिसमें 1 शतक और 3 अर्धशतक शामिल है। उनका सबसे अधिक स्कोर 150 रन रहा है। इसके अलावा 54 फर्स्ट क्लास मैचों में सरफराज खान के नाम 4593 रन दर्ज हैं।

पडिक्कल ने लिस्ट ए क्रिकेट में अपने 2000 रन पूरे किये

-औसत के मामले में विराट और डिविलियर्स को पीछे छोड़ा

नई दिल्ली। बल्लेबाज देवदत्त पडिक्कल ने विजय हजारे ट्रॉफी के सेमीफाइनल में अर्धशतकीय पारी खेलकर अपनी टीम कर्नाटक को फाइनल में पहुंचाने के साथ ही एक अहम रिकार्ड भी अपने नाम किया है। पडिक्कल ने हरियाणा के खिलाफ सेमीफाइनल में 86 रन बनाने के साथ ही लिस्ट ए क्रिकेट में अपने 2000 रन भी पूरे कर लिए। उन्होंने ये रन 82.38 की औसत से बनाए। इस प्रकार लिस्ट ए में कम से कम 2000 रन बनाने वाले बल्लेबाजों में सबसे ज्यादा औसत से रन बनाने के मामले में पडिक्कल ने विराट कोहली और एबी डिविलियर्स को दिग्गज बल्लेबाजों का भी रिकार्ड तोड़ दिया है। पडिक्कल ने लिस्ट ए क्रिकेट में 41 मैचों में 2063 रन बनाए हैं। इस दौरान उनका बल्लेबाजी औसत 82.52 रहा है। उनके नाम लिस्ट ए क्रिकेट में 9 शतक और 12 अर्धशतक हैं। इस प्रकार वह सबसे ज्यादा औसत से शुरुआती 2000 रन बनाने वाले बल्लेबाजों में पहले नंबर पर पहुंच गए हैं। उन्होंने इसके के साथ ही ऋतुराज गायकवाड़ (58.16) ऑस्ट्रेलिया के पूर्व खिलाड़ी माइकल बेवन (57.86) विराट कोहली (57.05) और एबी डिविलियर्स (53.47) को भी पीछे छोड़ दिया है। पडिक्कल अभी तक एकदिवसीय में डेब्यू नहीं कर पाये हैं। ऐसे में माना जा हरा है कि अपनी इस पारी से उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज के लिए अपनी दावेदारी पेश कर दी है। अब देखना है कि उन्हें अवसर मिलता है या नहीं।

बोलैंड के आने से सीरीज जीता ऑस्ट्रेलिया : अश्विन

चेन्नई (एजेंसी)। दिग्गज स्पिनर आर अश्विन ने कहा है कि तेज गेंदबाज स्कॉट बोलैंड के टीम में आने से ऑस्ट्रेलियाई टीम को लाभ हुआ था। अश्विन के अनुसार बोलैंड के आने के बाद मैच ऑस्ट्रेलिया के पक्ष में आ गया था। उन्होंने कहा कि बोलैंड नहीं होते तो ऑस्ट्रेलिया हार जीती क्योंकि भारतीय टीम के कई बल्लेबाज इस गेंदबाज का सामना नहीं कर पाये थे। बोलैंड की राउंड-द-विकेट गेंदें खेलना दाएं हाथ के भारतीय बल्लेबाजों के लिए सबसे मुश्किल साबित हुईं। बोलैंड पूरी सीरीज में जबरदस्त गेंदबाजी करते रहे। उन्होंने अपनी क लाइन और लेंथ से भारतीय बल्लेबाजों को संभलने का कोई अवसर नहीं दिया। विशेष रुप से विराट कोहली के लिए वह किसी बुरे सपने की तरह रहे। विराट चार बार इस गेंदबाज का शिकार बने। उन्होंने तीन मैचों में 13.19 की औसत से 21 विकेट लिए जिसमें उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 6/45 रहा। उन्होंने

पांचवें टेस्ट में 10 विकेट लिए। वह सीरीज में तीसरे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज थे।

अश्विन ने कहा, सभी ने कहा कि पैट कमिंस ने शानदार गेंदबाजी की पर उन्हें बाएं हाथ के बल्लेबाजों के खिलाफ संघर्ष करना पड़ा। ऑस्ट्रेलियाई टीम की किस्मत अच्छी थी जो उसने बोलैंड को अवसर दिया। अगर बोलैंड नहीं होते तो भारतीय टीम सीरीज जीत जाती। वहीं अगर वे उसी पारंपरिक आक्रमण के साथ जारी रहते, तो हम जीत जाते। बोलैंड को जोश हेजलवुड के चोटिल होने के कारण टीम में जगह मिली थी।

अश्विन ने यह भी कहा कि क्रिकेट के लिए यह सीरीज बेहतरीन थी। अश्विन ने कहा, सेडनी में आखिरी सत्र तक सीरीज में संघर्ष था। मेजबान टीम ने अंतिम दिन तक कड़ी टक्कर के बाद सीरीज जीती। उस्मान ख्वाजा ने सीरीज के बाद कहा, मुझे बुमराह ने आउट किया इससे पता चलता है कि सीरीज कितनी जोरदार थी।

गौरतलब है कि भारतीय टीम की हार के कारण बने बोलैंड ने 2021 में ऑस्ट्रेलिया के लिए टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया। हालांकि पैट कमिंस, मिशेल स्टार्क और जोश हेजलवुड के होने के कारण वह बहुत अधिक अंतरराष्ट्रीय मैच नहीं खेल पाये। 13 टेस्ट मैचों में उन्होंने 17.66 की औसत और 6/7 के सर्वश्रेष्ठ आंकड़े के साथ 56 विकेट लिए हैं। उन्होंने 14 एकदिवसीय और तीन टी20 मैच भी खेले हैं, में कुल मिलाकर 19 विकेट लिए हैं।

स्नेहा सिंह ने महिला पीजीटी टूर्नामेंट में बनाई बढ़त

कोलकाता। स्नेहा सिंह ने दो अंडर 68 का दिन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए बृहस्पतिवार को यहां महिला पेशेवर गोल्फ टूर (डब्ल्यूपीजीटी) के दूसरे दौर के बाद एक शॉट की बढ़त बना ली। ऑर्डर ऑफ मेरिट 2023 जीतने वाली स्नेहा का दो दौर के बाद कुल स्कोर एक अंडर 139 है। स्नेहा एकमात्र खिलाड़ी हैं जिनका दूसरे दौर के बाद अंडर पार स्कोर है। दूसरे दौर में दो ओवर 72 का स्कोर बनाने वाली वाणी कपूर ने अपनी बढ़त गंवा दी है और वह स्नेहा से एक शॉट पीछे दूसरे स्थान पर हैं। पिछले सत्र में अपना पहला पेशेवर खिताब जीतने वाली अंविता नरेंद्र 72 का स्कोर बनाने के बाद तीसरे स्थान पर हैं। जैस्मिन शेखर (74-73) और रवजोत के दोसांझ (72-75) संयुक्त रूप से चौथे स्थान पर हैं।

पटना में रणजी सत्र के दूसरे चरण में खेलते नजर आयेंगे रिंकू और नीतीश राणा

पटना । बिहार की राजधानी पटना में 23 जनवरी से शुरू हो रहे रणजी सत्र के दूसरे चरण में उत्तर प्रदेश से होने वाले मुकाबले में रिंकू सिंह और नीतीश राणा भी खेलते हुए नजर आयेंगे। हाल में भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने सभी खिलाड़ियों के लिए घरेलू क्रिकेट खेलने को अनिवार्य बनाया था। इसी के तहत ही रिंकू सिंह और नीतीश राणा भी उत्तर प्रदेश रणजी टीम की ओर से खेल रहे हैं। बिहार और उत्तर प्रदेश के बीच मुकाबला 23 से 26 जनवरी के बीच पटना में खेला जाएगा। इसके अलावा यूपी टीम के बल्लेबाज स्वास्तिक चिकारा, माधव कौशिक, प्रियम गर्ग, समीर रिजवी के प्रदर्शन पर भी इस मैच में लोगों की नजरें रहेंगी। ग्रुप सी में खेल रही बिहार टीम को पांच मैचों में से 3 मैचों में पारी से हार मिली है। बंगाल के खिलाफ मुकाबला नहीं खेला जा सका. बिहार के पास अभी 1 अंक है। अब दूसरे चरण में बिहार अपना पहला मैच यूपी से घरेलू मैदान पर खेलेगी। वहीं दूसरा और इस सत्र का अंतिम मैच 30 जनवरी से होगा जिसकी मेजबानी केरल करेगा। साल 2022 में प्लेट ग्रुप में चैंपियन बनने के बाद से ही बिहार पिछले दो सत्र से एलीट ग्रुप में खेल रहा है। बिहार को अब हर हाल में अगले दो मैचों में से एक जीतना होगा तभी एलीट ग्रुप में रह पायेगा. बिहार अगर यह दोनों मैच हार जाता है तो एलीट ग्रुप से प्लेट ग्रुप में चला जाएगा।

विराट-अनुष्का राधावल्लभ जी के दर्शनों के लिए पहुंचे

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के बल्लेबाज विराट कोहली आजकल आध्यात्म में रमे नजर आ रहे हैं। हाल में विराट अपनी पत्नी अनुष्का शर्मा बच्चों के साथ आध्यात्मिक गुरु प्रेमानंद महाराज से आशीर्वाद लेने पहुंचे थे। वहीं अब विराट और अनुष्का राधावल्लभ जी के दर्शनों में लीन दिखे हैं। इसका एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। उसमें विराट को हाथ जोड़े देखा जा सकता है। वहीं, अनुष्का राधावल्लभ जी को साष्टांग प्रणाम कर रही हैं। इसके बाद अनुष्का-विराट कुछ देर बैठकर सत्संग का भी आनंद लेते हैं. साल 2024 से ही विराट और अनुष्का का झुकाव धर्म की ओर अधिक दिखा है। वह लंदन में भी कृष्णा दास कीर्तन में नजर आये थे। वहीं भारत आने पर उन्होंने प्रेमानंद महाराज के दर्शन किये थे। इस साल भी दोनो ऑस्ट्रेलिया से वापसी के बाद सीधे ही वृंदावन में प्रेमानंद महाराज के आश्रम में पहुंचे थे। उनके साथ दोनों बच्चे वामिका और अकाय भी थे। प्रेमानंद महाराज से उन्होंने भक्ति प्रेम के बारे में बात करते देखा गया। दोनों को प्रेमानंद महाराज ने आशीर्वाद भी दिया। विराट अभी अपने करियर के सबसे खराब दौर से गुजर रहे हैं ओर ऐसे में उनकी टीम में जगह को लेकर भी सवाल उठते रहे हैं। इससे भी विराट की इस यात्रा को जोड़कर देखा जा रहा है।

मैंने पिता को यह खबर नहीं दी क्योंकि उन्हें दिल का दौरा पड़ा था : शैफाली वर्मा

राजकोट (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेटर शैफाली वर्मा नवंबर में ऑस्ट्रेलिया दौरे से ही टीम इंडिया से बाहर चल रही हैं। जब टीम में नाम न होने का पता शैफाली को लगा तो उन्होंने इस खबर को सबसे पहले अपने पिता से छिपाया था क्योंकि दो दिन पहले ही उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। सारा परिवार पहले से ही तनाव में था, तो ऐसे में शैफाली ने भी पिता से एक सप्ताह तक यह खबर छिपाकर रखी।

शैफाली ने सीनियर महिला वन डे चैलेंजर ट्रॉफी के मौके पर कहा कि इससे उबरना आसान नहीं है। मैं खुलासा नहीं करना चाहती थी क्योंकि मेरे टीम से बाहर होने से करीब दो दिन पहले मेरे पिता को दिल का दौरा पड़ा था। जब तक वह ठीक नहीं हो गया, मैंने उससे यह खबर छिपाई। वह अस्पताल में थे। मैंने उसे एक हफ्ते बाद बताया। संजीव ने यह खबर मिलते ही खुद को संभाला और शैफाली को अभ्यास के लिए ले जाना शुरू कर दिया। वह उनके पहले कोच थे, जो 5 बजे उठते थे और अभ्यास के लिए पड़ोस में खाली जगह ढूंढने जाते थे।

शैफाली ने कहा कि पिता सब कुछ जानते हैं, कभी-कभी बच्चों के रूप में हम भी अपनी ताकत भूल जाते हैं लेकिन वे नहीं भूलते। उन्होंने मुझे बचपन के वर्कआउट और अभ्यास की याद दिलाई और ऐसा करने में मेरी मदद भी की। जब मैंने शुरुआत की, तो हमारे पास ये नॉकिंग अभ्यास थे - जहां मैं ऑन-ड्राइव, स्ट्रेट ड्राइव खेली थी। मैंने इसी पर काम किया। ये मेरी ताकत हैं और कभी-कभी आपको यह याद रखने के लिए उन पर काम करने की जरूरत होती है कि आप उनमें कितने अच्छे हैं।

राष्ट्रीय टीम से बाहर किए जाने के बाद शैफाली ने जो दो घरेलू टूर्नामेंट खेले हैं, उनमें उन्होंने कुल 12 मैचों में 527 और 414 रन बनाए हैं, जिसमें तीन शतक और पांच अर्द्धशतक शामिल हैं। उन्होंने स्ट्राइक के रोटेशन पर काम किया है। उन्होंने कहा कि निरंतर काम उन क्षेत्रों पर होता है जैसे जब गेंदें मेरी ताकत के अनुरूप नहीं होती हैं, मैं सिंगल कैसे लेती हूं, मैं स्ट्राइक कैसे रोटेट करती हूं, मैं अपनी पारी कैसे बनाती हूं - यह आखिरी चीज है जिस पर काम चल रहा है। हर कोई मेरी ताकत जानता है, लेकिन मेरा निरंतर लक्ष्य यह सीखकर मानसिक रूप से बेहतर बनना है कि पारी को बेहतर तरीके से कैसे तैयार किया जाए।

शैफाली ने कहा कि अगर मैं अभ्यास के 5-6 दिनों में 500 से अधिक रन बना रही हूं, तो कल्पना करें कि मैं एक महीने या 20 दिनों के लिए पर्दे के पीछे अधिक काम करके क्या कर सकता हूं। मुझे अपने परिवार और हरियाणा क्रिकेट एसोसिएशन को धन्यवाद देना होगा। जब मैं इस काम के बारे में कुछ भी नहीं जानता था तो उन्होंने अंडर 19 की कप्तानी के लिए मुझ पर भरोसा किया। उन्होंने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया, मुझे सिखाया कि मैं कैसे काम कर सकती हूं। इससे मेरी बल्लेबाजी में भी मदद मिल रही है।

संक्षिप्त समाचार

अमेरिकी सरकार ने टाइटैनिक मलबे के बचाव अधिकारों पर मुकदमा वापस लिया

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी सरकार ने टाइटैनिक के मलबे को बचाने के अधिकारों की मालिक कंपनी के खिलाफ अपना मुकदमा वापस ले लिया है। सरकार ने यह कदम इसलिए उठाया क्योंकि अब कंपनी के पास मलबे तक पहुंचने के लिए कोई अभियान योजना नहीं है, जो संघीय कानून का उल्लंघन कर सकती हो। हालांकि, यह मुकदमा वापस लेना यह नहीं दर्शाता कि आरएमएस टाइटैनिक इंक भविष्य में फिर से टाइटैनिक के मलबे को देखने या उससे ऐतिहासिक वस्तुएं निकालने का प्रयास नहीं करेगी। कंपनी ने पिछले महीने कहा था कि वह अभी भी भविष्य में ऐसे अभियानों की संभावनाओं पर विचार कर रही है। गौरतलब है कि अमेरिका ने शुक्रवार को वर्जीनिया में एक संघीय कोर्ट में अपनी कानूनी लड़ाई वापस ले ली, जो टाइटैनिक के मलबे के मामलों को देखती है। यह 5 वर्षों में ऋरूर टाइटैनिक इंक. के खिलाफ लड़ा गया दूसरा मुकदमा था। अमेरिका ने 2023 में मुकदमा दायर किया था जब कंपनी ने जहाज़ के पतवार की तस्वीरें लेने और मलबे से वस्तुएं निकालने की योजना बनाई थी। साथ ही अमेरिका का कहना था कि मलबे को छेड़ना 2017 के संघीय कानून और ग्रेट ब्रिटेन के साथ किए गए समझौते का उल्लंघन होगा, क्योंकि दोनों देशों इस स्थान को एक पवित्र स्थल मानते हैं, जहाँ 1912 में टाइटैनिक के हिमखंड से टकराने के बाद 1,500 से ज्यादा लोग मारे गए थे।

जिमी कार्टर की याद में वेस्ट बैंक में लगाए गए 250 जैतून के पेड़

वाशिंगटन, एजेंसी। सोमवार को उत्तरी वेस्ट बैंक के एक शहर में फलस्तीनी कार्यकर्ता और निवासी दिवंगत अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर की याद में जैतून के पेड़ लगाने के लिए एकत्र हुए। उन्हें फिलिस्तीनी मुद्दों का मजबूत समर्थक माना जाता था। मामले में फिलिस्तीनी किसान संघ के कार्यकारी प्रबंधक अब्बास मेलहेम ने बताया कि फ्रीडम फार्म नामक बाग में 250 नए जैतून के पेड़ लगाए गए हैं, जो 10 डनम (2.5 एकड़) में फैला हुआ है। पेड़ों को जंगली जानवरों और चरमपंथी यहूदी बसने वालों से बचाने के लिए खेत को बाड़ से घेरने का फैसला लिया गया है, क्योंकि इस प्रकार के हमले पहले भी हो चुके हैं। मेलहेम ने कहा कि जिमी कार्टर की विरासत फलस्तीन में लोगों के बीच जीवित रहेगी, क्योंकि उन्होंने हमेशा फिलिस्तीनी लोगों के स्वतंत्रता संघर्ष का समर्थन किया। यह परियोजना ट्रीडोम फॉर फिलिस्तीन नामक एक अमेरिकी गैर-लाभकारी संस्था द्वारा शुरू की गई है, जो पेड़ लगाकर फिलिस्तीनी किसानों की मदद करती है। बता दें कि जिमी कार्टर का 29 दिसंबर को 100 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वो 1978 में इस्राइल और मिस्र के बीच कैंप डेविड शांति समझौते के मध्यस्थ थे। अपने अंतिम वर्षों में, वे इस्राइल के शासन के कड़े आलोचक बन गए थे और कहा था कि वेस्ट बैंक में स्थिति रंगभेद के समान है।

ओक्लाहोमा के अटॉर्नी जनरल जेंटनर ड्रमंड ने गवर्नर पद के लिए अपनी उम्मीदवारी की घोषणा की

ओक्लाहोमा, एजेंसी। ओक्लाहोमा के रिपब्लिकन अटॉर्नी जनरल जेंटनर ड्रमंड ने सोमवार को गवर्नर पद के लिए अपनी उम्मीदवारी की घोषणा की। रिपब्लिकन पार्टी के गवर्नर और अन्य राजनेताओं के खिलाफ धर्म को पब्लिक स्कूलों में घुसाने की कोशिशों के खिलाफ आवाज उठाने वले ड्रमंड ने यह घोषणा अपने परिवार के खेत के पास पावुस्का में ओसेज काउंटी फेयरग्राउंड में की। ड्रमंड ने कहा कि मैं गवर्नर पद के लिए इसलिए नहीं दौड़ रहा हूं कि मैं पार्टी के आकाओं के सामने झुक सकू। बता दें कि वह 1991 के खाड़ी युद्ध के दौरान एक लड़ाकू पायलट के रूप में भी सेवा दे चुके हैं और ओक्लाहोमा के अटॉर्नी जनरल के रूप में अवैध मारिजुआना उत्पादन को बंद करने के अपने कार्यकाल का जिक्र किया। ओक्लाहोमा स्टेट फ्रेटरनल ऑर्डर ऑफ पुलिस के अध्यक्ष मार्क नेल्सन ने कहा कि ड्रमंड को संगठन का शुरुआती समर्थन मिला है। ड्रमंड, गवर्नर केविन स्टिट की जगह लेने के इच्छुक पहले आधिकारिक उम्मीदवार हैं, जो कार्यकाल की सीमाओं के कारण फिर से चुनाव नहीं लड़ सकते हैं।

जेफ बेजोस की कंपनी ब्लू ओरिजिन ने स्थगन के बाद फिर शुरू की लॉन्चिंग की तैयारी

वाशिंगटन, एजेंसी। अरबपति कारोबारी जेफ बेजोस की स्पेस कंपनी ब्लू ओरिजिन ने सोमवार को अपने नए रॉकेट की लॉन्चिंग टाल दी थी, लेकिन अब मंगलवार को फिर से कंपनी ने लॉन्चिंग की तैयारी शुरू कर दी है। दरअसल 320 फीट के न्यू ग्लेन रॉकेट को प्रोटोटाइप उपग्रह के साथ सोमवार की सुबह केप कैनावेरल से लॉन्च किया जाना था, लेकिन रॉकेट के कुछ हाइड्रोलिक सिस्टम और लॉन्च कंट्रोलर को पावर देने वाली यूनिट में बर्फ जम जाने से लॉन्चिंग टल गई थी। अब ब्लू ओरिजिन ने कहा है कि मंगलवार के खराब मौसम के पूर्वानुमान के कारण और देरी हो सकती है। न्यू ग्लेन रॉकेट का नाम पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले पहले अमेरिकी जॉन ग्लेन के नाम पर रखा गया है।

उत्तर कोरिया ने मिसाइल का परीक्षण किया, दक्षिण कोरियाई सेना का दावा

प्योंगयांग, एजेंसी। दक्षिण कोरिया की सेना का कहना है कि उत्तर कोरिया ने 2025 के अपने अपने पूर्वी जल की ओर कम से कम एक अज्ञात प्रक्षेपास्त्र का परीक्षण किया है। दक्षिण कोरिया के संयुक्त चीफ ऑफ स्टाफ ने इस बारे में ज्यादा जानकारी नहीं दी। पिछले सप्ताह भी उत्तर कोरिया ने बैलिस्टिक मिसाइल का परीक्षण किया था।

स्पेन में विदेश मंत्री ने भारतीय समुदाय से की बात कहा- दुनिया में आज भारत की स्थिति महत्वपूर्ण

मैड्रिड, एजेंसी। विदेश मंत्री एस जयशंकर इन दिनों अपनी दो दिवसीय स्पेन दौरे पर हैं। मैड्रिड में उन्होंने भारतीय समुदाय को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जब किसी दूसरे देश का विदेश मंत्रालय और राजदूत आपसे आकर बात करने के लिए कहते हैं, तो यह सोचने लायक बात है कि ऐसा क्यों है? दुनिया में आज भारत की स्थिति बहुत महत्वपूर्ण है। आज दुनिया के सभी देशों को लगता है कि भारत के साथ अच्छे संबंध रखना हमारे हित में है। उन्होंने कहा कि आज बहुत कम देश हैं जो रूस और यूक्रेन, इस्राइल और ईरान से बात करने की स्थिति में हैं और पीएम मोदी दोनों से ही बात करने में सक्षम हैं। बहुत कम देश हैं जो क्वाड के सदस्य होने और ब्रिक्स के सदस्य हैं। यह बहुत ही अनोखा है। अगर आप आज दुनिया को देखें तो यह बहुत ही ध्रुवीकृत है। इस ध्रुवीकृत दुनिया में भारत एक ऐसा देश है जो सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास को दुनिया में ले जाने में सक्षम है।

बंगलूरू में खुलेगा स्पैनिश दूतावास : विदेश मंत्री ने कहा कि बार्सिलोना में हमारा एक वाणिज्य दूतावास है। जल्द ही बंगलूरु में एक स्पैनिश वाणिज्य दूतावास होगा। इससे साफ है कि हमारे संबंध गहरे हो रहे हैं। व्यापार बढ़ रहा है। हमने तय किया है कि हम 2026 को ऐसे वर्ष के रूप में मनाएंगे जिसमें हम दोनों देशों में संस्कृति, पर्यटन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का आदान-प्रदान करेंगे। इसलिए 2025 में हम 2026 की तैयारी के लिए कड़ी मेहनत करेंगे।

भारत ने कई देशों को टीका दिया : विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने कहा कि हम कोविड की बात करें तो भारत ही वह देश था जिसने कई देशों को टीका दिया। दुनिया के 99 देश ऐसे हैं जो कहते हैं कि अगर मुझे मेरा टीका मिला, तो यह भारत की वजह से था। इसलिए बहुत कठिन परिस्थितियों में भी हमने देशों की मदद की है। मुझे याद है कि एक बार स्पेन राष्ट्रपति सांचेज ने हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन की आपूर्ति के बारे में पीएम मोदी से फोन पर बात की थी।

भारत के पास दुनिया के लिए कुछ करने की क्षमता : उन्होंने कहा कि हमारे पास जो कुछ भी था, हमने जो कुछ भी बनाया, उसमें दुनिया के लिए कुछ करने की इच्छा थी। हम एक ऐसा देश हैं जहां एक औसत भारतीय सालाना 3000 यूरो कमाता है। स्पेन में औसत आय 45,000 यूरो है, जो कि एक भारतीय से 15 गुना ज़्यादा है। यह पैसे या संसाधनों का सवाल नहीं है। यह दिल और दिमाग का सवाल है। भारत के पास दुनिया के लिए कुछ करने की क्षमता, सोच, सहानुभूति है।

विदेश मंत्री ने कहा कि पिछले 10 साल में हमने कम आय वाले लोगों के लिए 40 लाख घर बनाए और दिए हैं। औसत भारतीय परिवार पांच है। 40 लाख घरों का मतलब स्पेन की आबादी का 54 गुना है। अगर आप स्वास्थ्य को देखें, तो आज भारत का 1/3 हिस्सा यानी 400 मिलियन लोग, यानी स्पेन की आबादी का लगभग 9 या 10 गुना आयुष्मान भारत के माध्यम से मुफ्त स्वास्थ्य या सब्सिडी वाले स्वास्थ्य के दायरे में हैं। गैस सिलिंडर के लाभार्थियों की संख्या 110 मिलियन रसोई है, लोग नहीं। जब आप कैशलेस भुगतान को भी देखते हैं, तो हम एक महीने में 16 बिलियन का लेनदेन करते हैं। अमेरिका एक साल में 4-5 बिलियन करता है, हम एक महीने में 16 बिलियन करते हैं।

पीएम ने प्रवासी भारतीयों के योगदान को महत्व दिया : विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने कहा कि मैंने अपना पूरा कार्यकाल विदेश नीति में बिताया है। पिछले 10 साल में मैंने जो सबसे बड़ा बदलाव देखा है, वह यह है कि भारत सरकार और भारत के लोगों ने प्रवासी समुदाय के योगदान को महत्व दिया है। ईमानदारी से कहूं तो इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी अकेले ही जिम्मेदार हैं। उन्होंने हमें समझाया है कि आप दुनिया के लिए कितने मूल्यवान हैं? मैं आपका धन्यवाद करता हूं। आप जो कर रहे हैं, उसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

देश हमेशा आपके साथ है। उन्होंने कहा कि आज विदेशों में भारतीय मूल के लगभग 35-36 मिलियन लोग रह रहे हैं। लगभग 50त्न राष्ट्रीय हैं और लगभग 50त्न अन्य देशों के नागरिक हैं। इसलिए आप जो सुझाव दे रहे हैं, वह वास्तव में लगभग 20 मिलियन लोगों के लिए एक चुनावी प्रक्रिया आयोजित करना है, जिसे 195 देशों में किया जाना है। हमारे पैमाने को देखते हुए यह एक तरह से बहुत कठिन है। मैं भावना को समझता हूं। लोग मतदान करना चाहते हैं। लोग बदलाव की प्रक्रिया का हिस्सा बनना चाहते हैं। इस पर हमें विचार करना होगा। यह ऐसा मुद्दा नहीं है जिसके लिए मेरे पास कोई तैयार जवाब हो, क्योंकि यह बहुत बड़ा और जटिल है।

इस्राइल-हमास में युद्धविराम जल्द 33 इस्राइली बंधकों की होगी रिहाई

दोहा, एजेंसी। इस्राइल और हमास एक साल से अधिक समय जंग लड़ रहे हैं। दोनों देशों के बीच युद्ध विराम समझौते पर वार्ता जारी है। बताया जा रहा है कि इस्राइल और हमास के बीच युद्ध विराम वार्ता अंतिम चरण में पहुंच गई है। हमास इस पर तैयार हो गया है कि वह पहले चरण में 33 इस्राइली बंधकों को रिहा कर देगा। बताया जा रहा है कि समझौते को लेकर अंतिम दौर की वार्ता मंगलवार को कतर के दोहा में होगी।

आइए जानते हैं युद्ध विराम समझौते में किन-किन मुद्दों पर इस्राइल-हमास के बीच सहमति बनी है? इस्राइल और हमास के बीच हो रहे युद्ध विराम समझौते को लेकर इस्राइल का मानना है कि समझौते के पहले चरण के दौरान रिहा किए जाने वाले 33 लोगों में मृत बंधकों के शव भी शामिल होंगे। बंधकों की रिहाई के बाद समझौता लागू होने के 16वें दिन दूसरे चरण की वार्ता शुरू होगी। समझौते के मुताबिक इस्राइल की सेना मिस्र-गाजा सीमा के पास फिलाडेल्फिया कॉरिडोर पर तैनात रहेगी। वहीं इस्राइल गाजा के अंदर सीमा पर एक बफर जोन भी बनाएगा। बफर जोन की चौड़ाई को लेकर सहमति नहीं बन पा रही है। हमास चाहता है कि बफर जोन सीमा रेखा से 300 से 500 मीटर तक रहे, जबकि इस्राइल 2000 मीटर के बफर जोन की बात कर रहा है। इसके अलावा समझौते के बाद उत्तरी गाजा के लोग अपने क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से लौट सकेंगे। मगर सुरक्षा व्यवस्था लागू रहेगी। इसके अलावा इस्राइल ने कहा है कि वह युद्ध के दौरान पकड़े गए फलस्तीनियों को पश्चिमी तट में नहीं छोड़ा जाएगा, बल्कि उनको विदेशी देशों के साथ समझौते के बाद गाजा पट्टी या विदेश भेजा जाएगा। समझौते में यह भी कहा गया है कि गाजा पट्टी में मानवीय सहायता में इजाफा किया जाएगा। इस्राइल गाजा में लोगों को मदद करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के निर्देशों के तहत काम करेगा। इस्राइल हमास के बीच युद्ध विराम समझौते को लेकर ट्रंप ने हमास को चेतावनी दी थी।

दक्षिण-पूर्वी ब्राजील में भारी बारिश से 11 लोगों की मौत

रियो डी जेनेरियो, एजेंसी। दक्षिण-पूर्वी ब्राजील में भारी बारिश से सामान्य जनजीवन प्रभावित हुआ है। भारी बारिश के चलते यहां 11 लोगों की मौत हो गई है। स्थानीय अधिकारियों ने बताया कि दक्षिण-पूर्वी ब्राजील में भारी बारिश के कारण रविवार को कम से कम 11 लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में से नौ की मौत सुबह मिनास गेरैस राज्य के घाटी क्षेत्र में भूस्खलन के कारण हुई। राज्य अग्निशमन विभाग के अनुसार, इपेटिंगा शहर में भूस्खलन के कारण नौ लोगों की मौत हो गई और एक लापता हो गया। शहर में एक घंटे से भी कम समय में प्रति वर्ग मीटर 80 मिलीमीटर बारिश के बाद शहर भूस्खलन और बाढ़ दोनों की चपेट में आ गया। इसको लेकर स्थानीय अधिकारियों ने 180-दिवसीय सार्वजनिक आपदा की स्थिति घोषित की। सोशल मीडिया पर एक वीडियो संदेश में मिनास गेरैस के गवर्नर रोमू ज़ेमा ने घोषणा करते हुए कहा कि वह आपदा का आकलन करने और विस्थापित लोगों के लिए सुरक्षित अस्थायी आवास की व्यवस्था करने के लिए इपेटिंगा की यात्रा करेंगे। इस बीच, सांता कैटरीना में भारी बारिश ने राजमार्गों के कुछ हिस्सों को बहा दिया है, जिससे दो लोगों की मौत हो गई और एक लापता हो गया। राज्य सरकार ने पिछले 24 घंटों में 121.4 मिलीमीटर बारिश की सूचना दी है। सड़कें बंद हो गई है। इसके साथ ही बचाव कार्यों की देखरेख और क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत के लिए एक संकट प्रबंधन समिति का गठन किया गया है।

पाकिस्तान: सरकार और तहरीक-ए-इंसाफ के बीच तीसरे दौर की वार्ता गुरुवार को होगी

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान सरकार और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के बीच राजनीतिक तनाव कम करने के उद्देश्य से तीसरे दौर की वार्ता 16 जनवरी को होने वाली है. डॉन ने सोमवार को यह जानकारी दी. डॉन के अनुसार, पाकिस्तानी नेशनल असेंबली (एनए) सचिवालय की ओर से जारी एक नोटिस में घोषणा की गई है कि एनए के अध्यक्ष अयाज सादिक पाकिस्तानी संसद भवन में सत्र की देखरेख करेंगे. पिछले साल पीटीआई के संस्थापक इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद से पीटीआई और सरकार के बीच संबंधों में तेजी से गिरावट आई है. जिसमें हिंसक विरोध प्रदर्शन और पीटीआई के कार्यकर्ताओं के खिलाफ राज्य की कार्रवाई शामिल है. डॉन की रिपोर्ट के अनुसार, इमरान खान ने जवाब में किसी भी प्रासंगिक दलों के साथ बातचीत करने के लिए पांच सदस्यीय समिति का गठन किया, जो पीटीआई की संसदीय रणनीति में बदलाव का संकेत है. बदले में, पाकिस्तानी प्रधान मंत्री शहबाज शरीफ ने चर्चा करने के लिए सत्तारूढ़ गठबंधन के सदस्यों की एक समिति की स्थापना की. दोनों पक्षों के बीच पहली बैठक 23 दिसंबर, 2024 को हुई थी, जबकि दूसरी बैठक 2 जनवरी को हुई थी.

हालांकि, इन बातचीत से स्थिति में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं हुआ है. पीटीआई नेतृत्व ने अपनी मांगों की सूची को अंतिम रूप देने के लिए इमरान के साथ कई बैठकों का अनुरोध किया है. संसद भवन में मीडिया से बात करते हुए, एनए के पीटीआई सदस्य असद कैसर ने पुष्टि की कि पार्टी वार्ता के बारे में ईमानदार है.

रविवार को इमरान खान के साथ बैठक के बाद, पीटीआई वार्ता दल को सोमवार को स्पीकर सादिक से औपचारिक रूप से अपनी मांगों को प्रस्तुत करने के लिए मिलना था. इससे पहले, पीटीआई की कई शिकायतों के बाद हुई थी कि उनकी टीम को जेल में रहते हुए इमरान खान तक बिना निगरानी के पहुंच नहीं दी गई थी. खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री अली अमीन गंदापुर ने भी प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने से पहले पीटीआई प्रमुख से आमने-सामने की मुलाकात की. वार्ता की शुरुआत में, पीटीआई ने दो प्राथमिक मांगें रखी थीं: राजनीतिक कैदियों की रिहाई और 9 मई और 26 नवंबर की कार्रवाई की जांच के लिए एक न्यायिक आयोग का गठन, जैसा कि डॉन ने रिपोर्ट किया है।

जापान में 6.9 तीव्रता के भूकंप के बाद सुनामी की चेतावनी

टोक्यो, एजेंसी। जापान के दक्षिण पश्चिमी हिस्से में 6.9 तीव्रता का भूकंप आने के बाद सोमवार शाम सुनामी की चेतावनी जारी की गई। जापान की मौसम विज्ञान एजेंसी ने बताया कि रात 9.19 बजे आए भूकंप की तीव्रता मियाजाकी प्रान्त के कुछ हिस्सों में जापानी भूकंपीय पैमाने 5 से कुछ अधिक मापी गई। जापान के भूकंपीय स्केल में अधिकतम मान 7 है। वहीं अधिकतम 10 मान वाले रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 6.9 मापी गई।

मौसम एजेंसी ने मियाजाकी और कोची प्रान्तों के लिए सुनामी की चेतावनी जारी की है। जापान टाइम्स के अनुसार, भूकंप का केंद्र ह्युगानाडा सागर में 30 किलोमीटर की गहराई पर था। भूकंप के तुरंत बाद, एजेंसी ने मियाजाकी और कोची प्रान्तों के तटों के लिए सुनामी की चेतावनी जारी की। उसने बताया है कि समुद्र में एक मीटर तक ऊंची लहरें उठ सकती हैं। आस-पास के लोगों से तट से दूर रहने और ऊंचे स्थानों पर जाने का आग्रह किया गया है।

चीन की समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने बताया कि बीजिंग समय के अनुसार सोमवार रात 8.58 बजे शिजांग स्वायत्त क्षेत्र के शिगाजे में डिंगरी काउंटी में 5.0 तीव्रता का भूकंप आया। चीन भूकंप नेटवर्क केंद्र (सीईएनसी) के अनुसार, भूकंप का केंद्र 28.45 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 87.52 डिग्री पूर्वी देशांतर पर था।

सीईएनसी द्वारा जारी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि भूकंप 10 किलोमीटर की गहराई पर आया। पिछले सप्ताह 7 जनवरी को तिब्बत क्षेत्र में डिंगरी काउंटी में आए 6.8 तीव्रता के भूकंप के पीड़ितों की याद में सोमवार को एक स्मारक सेवा भी आयोजित की गई। सुबह 9.30 बजे, चामको टाउनशिप में सायरन गूंजने लगे, जहां यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। टाउनशिप स्क्वायर में एक विशाल बोर्ड लगा था, जिस पर सफेद मंदारिन और तिब्बती अक्षरों में डिंगरी भूकंप में मारे गए लोगों के लिए ÷गहरा शोक÷ लिखा हुआ था।

सरकारी अधिकारियों, बचावकर्मियों और स्थानीय निवासियों सहित सैकड़ों लोगों ने अपनी टोपियां उतारीं और मृतकों की याद में तीन मिनट तक मौन खड़े रहे। पुनर्वास स्थलों पर, कुछ प्रीफैब घरों में पारंपरिक तिब्बती मक्खन के दीये टिमटिमा रहे थे, जो अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए शोक मनाने का एक तरीका है। तिब्बत में आए इस भूकंप में 126 लोगों की जान चली गई। सोमवार को भूकंप के बाद सातवां दिन था, जो मृतकों के लिए बौद्ध अनुष्ठानों का सबसे महत्वपूर्ण दिन होता है।

जंगल की आग : लॉस एंजिल्स के लिए नए जोखिम पैदा कर सकती हैं तेज हवाएं

लॉस एंजिल्स, एजेंसी। अमेरिका के कैलिफोर्निया प्रांत के जंगलों से फैली आग ने लॉस एंजेलिस में तबाही मचा दी है। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, शहर की मुश्किलें अभी और बढ़ सकती हैं। लॉस एंजिल्स क्षेत्र में विनाशकारी जंगल की आग से जूझते हुए अग्निशमन दल को परेशानियों की सामना करना पड़ सकता है। यहां आने वाले दिनों में हवाएं तेज होने की उम्मीद है, जिससे बचाव कार्यों में परेशानी आ सकती है। स्थानीय अधिकारियों ने रविवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि तेज हवाएं और लगातार शुष्क मौसम क्षेत्र में आग के खतरे को बढ़ा रहे हैं। रविवार को उत्तर-पूर्वी हवा की गति 50 मील (लगभग 80 किमी) प्रति घंटे से अधिक हो गई, और आने वाले दिनों में सांता एना की तेज हवाएं भी चलने का अनुमान है। वहीं, लॉस एंजेलिस काउंटी के फायर चीफ एंथनी मार्रोन ने कहा कि ये हवाएं लॉस एंजेलिस काउंटी में आग के खतरे को और बढ़ा देंगी।

कैलिफोर्निया के वानिकी और अग्नि सुरक्षा विभाग के अनुसार लॉस एंजेलिस काउंटी में अभी भी तीन जंगलों आग लगी हुई है, जो लगभग 40,300 एकड़ (लगभग 163 वर्ग किमी) को जलाकर राख कर रही है। आग से मरने वालों की संख्या रविवार तक बढ़कर 24 हो गई है। इनमें आठ लोग पैलिसेड्स की आग (सांता मोनिका के पहाड़ों पर) से और 16 लोग ईटन की आग (अल्टाडेना इलाके में) से मारे गए हैं। कैलिफोर्निया के वानिकी और अग्नि सुरक्षा विभाग ने बताया कि दो सबसे बड़ी आगों पर 11 प्रतिशत और 27 प्रतिशत काबू पा लिया गया है।

इस आग में 12,300 से अधिक इमारतें नष्ट हो चुकी हैं। वहीं एक लाख से अधिक लोगों को आपदा क्षेत्रों से निकाला गया है। कैलिफोर्निया के गवर्नर के कार्यालय के अनुसार, गवर्नर गेविन न्यूसम ने रविवार को कैलिफोर्निया नेशनल गार्ड के अतिरिक्त 1,000 सदस्यों को लॉस एंजिल्स में तैनात किया है, जिससे इस क्षेत्र में कैलगार्ड सेवा सदस्यों की कुल संख्या लगभग 2,500 हो गई है। कैलगार्ड के कर्मचारी जंगल की आग को बुझाने के प्रयासों में सहायता कर रहे हैं। वे यातायात नियंत्रण बिंदुओं पर तैनात हैं और कुछ जले चुके क्षेत्रों में सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं। लॉस एंजेलिस काउंटी के शेरिफ रॉबर्ट लूना के अनुसार, पिछले सप्ताह लॉस एंजेलिस में लगी आग के बाद से कम से कम 29 लोगों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें से कई को लूटपाट के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। आग से सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में पैसिफिक पैलिसेड्स और अल्टाडेना के आसपास के आपदा क्षेत्रों में शाम 6 बजे से सुबह 6 बजे के बीच कर्फ्यू लागू है।

टिकटॉक पर प्रतिबंध लगाने की समयसीमा बढ़ाई जाए, अमेरिकी सांसदों की जो बाइडन से अपील

वॉशिंगटन, एजेंसी। डेमोक्रेटिक सांसदों ने सोमवार को कांग्रेस और राष्ट्रपति जो बाइडन से टिकटॉक पर प्रतिबंध लगाने की समयसीमा बढ़ाने की मांग की। सांसदों ने चीन स्थित बाइटडांस के लिए टिकटॉक की अमेरिकी संपत्ति बेचने के लिए 19 जनवरी की समयसीमा बढ़ाने का आग्रह किया। दरअसल, अगर ऐसा न होने पर कंपनी को अमेरिका में प्रतिबंध का सामना करना पड़ेगा। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को टिकटॉक और बाइटडांस की ओर से कानून को चुनौती देने पर सुनवाई की। कंपनियों के वकील नोएल फ्रांसिस्को ने कहा कि अगले सप्ताह की समयसीमा तक बिक्री पूरी करना असंभव होगा। उन्होंने यह भी कहा कि अगर प्रतिबंध लगाया जाता है तो 170 मिलियन अमेरिकियों की ओर से इस्तेमाल किया जाने वाला शॉर्ट वीडियो एप बंद हो जाएगा। इसके बाद यह देश में पूरी तरह से ठप हो जाएगा।

क्या है मामला : दरअसल, अप्रैल में राष्ट्रपति जो बाइडन द्वारा हस्ताक्षरित एक विधेयक को कानून में बदल दिया गया था, जिसके तहत चीन के बाइटडांस (टिकटॉक का मालिक) को 19 जनवरी को अमेरिकी प्रतिबंध का सामना करना पड़ेगा। ऐसे में अमेरिका में टिकटॉक के पास एक ही ऑप्शन है कि वह खुद को किसी अमेरिकी कंपनी को बेच दे। यदि ऐसा नहीं होता है तो कंपनी को अमेरिकी बाजार को छोड़ना होगा। अमेरिका में टिकटॉक के 170 मिलियन यानी करीब 17 करोड़ यूजर्स हैं।

अमेरिका का आरोप : टिकटॉक को लेकर अमेरिका की सरकार का आरोप है कि यह चीन को डाटा जुटाने और यूजर्स की जासूसी करने की अनुमति देता है। इसकी वीडियो होस्टिंग सेवा से दुष्प्रचार फैलता है। हालांकि चीन और बाइटडांस इसका विरोध कर रहे हैं। इस महीने की शुरुआत में तीन न्यायाधीशों वाले अमेरिकी अपील अदालत ने सर्वसम्मति से कानून के आधार को बरकरार रखा कि टिकटॉक का चीनी स्वामित्व से अलग होना हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा के लिए आवश्यक है।

क्या बाइडन राहत दे सकते हैं : अगर बाइडन इस बात को मान लें कि बाइटडांस विनिवेश की दिशा में पर्याप्त प्रगति कर रहा है तो वे समयसीमा को 90 दिनों तक बढ़ा सकते हैं। हालांकि, यह संभावना न के बराबर है कि बाइटडांस उस मानक को पूरा कर पाएगा।

किन सांसदों ने उठाया मुद्दा : सीनेटर एडवर्ड मार्की ने कहा कि उन्होंने बाइटडांस को टिकटॉक बेचने या अतिरिक्त 270 दिनों के लिए प्रतिबंध का सामना करने की समय सीमा में देरी करने के लिए कानून पेश करने की योजना बनाई है। दरअसल, टिकटॉक प्रतिबंध उन लाखों अमेरिकियों पर गंभीर परिणाम डालेगा जो सामाजिक संपर्क और अपनी आर्थिक आजीविका के लिए एप पर निर्भर हैं। हम ऐसा होने की अनुमति नहीं दे सकते। इसके अलावा रो खन्ना ने बाइडन और ट्रंप से इस प्रतिबंध पर रोक लगाने का आग्रह किया।

101 किसानों का मरजीवड़ा समूह 21 जनवरी को दिल्ली कूच करने को तैयार

नई दिल्ली। विभिन्न मांगों को लेकर पंजाब और हरियाणा के कुछ किसान बीते कई महीनों से आंदोलन कर रहे हैं। उन्होंने फिर दिल्ली मार्च का ऐलान कर दिया है। किसान यूनियनों ने अपने चल रहे आंदोलन को तेज कर गुरुवार को घोषणा की कि वे 21 जनवरी 2025 को फिर से हरियाणा सीमा पार करने का प्रयास करने वाले है। इसमें 101 किसानों का समूह शामिल होगा, जिन्हें मरजीवड़ा नाम दिया गया है। मरीजवाड़ का मतलब होता है जो अपनी जान देने के लिए तैयार हैं। बता दें कि इसके पहले साल 2021 में कृषि कानून के खिलाफ किसानों के द्वारा 26 जनवरी को निकाली गई ट्रैक्टर रैली के दौरान प्रदर्शनकारी पुलिस बैरिकेडिंग को तोड़ कर सेंट्रल दिल्ली में जबरन घुसे गए थे। आंदोलनकारी किसानों ने लाल किले की प्राचीर पर अपना झंडा फहराया था। हालांकि, बाद में उनके झंडे को लाल किले से हटाया और पुलिस कार्रवाई में उन्हें वहां से खदेड़ दिया गया था। किसान मजदूर मोर्चा के संयोजक सर्वन सिंह पंधेर ने कार्यक्रम की घोषणा करते हुए कहा, मुझे नहीं लगता कि केंद्र सरकार हमारे साथ बातचीत करने के मूड में है। हमारा 101 किसानों का समूह 21 जनवरी को एक और प्रयास करेगा। अब सरकार के ऊपर है कि वह हमारी मांगों को पूरा करे या हमें मार डाले।

रायबरेली में हिट-एंड-रन का मामला, एक व्यक्ति की मौत... बीजेपी नेता सहित कई घायल

रायबरेली । यूपी के रायबरेली जिले में बीती रात तेज रफ्तार कार का तांडव दिखाई दिया। रायबरेली में प्रयागराज हाईवे पर हिट-एंड-रन दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत हुई। वहीं, बीजेपी नेता अभिजात मिश्रा सहित चार अन्य घायल हो गए। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो में देखा जा सकता है कि कैसे कार सवार बीच सड़क खौफनाक तरीके से गाड़ी दौड़ा रहा है। कार के गेट खुले हुए हैं। इस दौरान कार सवार ने कई लोगों को रौंद डाला। बताया जा रहा हैं कि दुर्घटना बुधवार रात रायबरेली शहर के प्रगतिपुरम के पास हुई जब एक तेज रफ्तार कार ने दो पैदल यात्रियों को टक्कर मार दी। वीडियो में दरवाजा खुली एक कार को तेजी से भागते हुए दिखाया गया है, जबकि दो बाइक सवार हाईवे के किनारे गिर गए थे और कुछ स्थानीय लोग भाग रही कार को रोकने की कोशिश कर रहे थे। लोगों के घायल होने की सूचना मिलते ही मौके पर पुलिस पहुंची और दोनों घायल व्यक्तियों को जिला अस्पताल ले गई, जहां 67 वर्षीय एक व्यक्ति को मृत घोषित कर दिया गया, जबकि दूसरे का इलाज जारी है। घटना में बीजेपी युवा मोर्चा के नेता अभिजात मिश्रा और उनके साथी भानु तिवारी भी घायल हुए। पुलिस ने बताया कि हमने संबंधित कार को हिरासत में लेकर चालक का पता लगाने के प्रयास जारी हैं। मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले की जांच की जा रही है।

संभल में 14 सौ से अधिक बिजली चोरी के मामले दर्ज, 16 मस्जिदें और 2 मदरसे नामजद

संभल। जिला प्रशासन का दावा है कि उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक बिजली की चोरी संभल में हो रही है। जिसके चलते यहां बिजली विभाग का तबोड़तोड़ ऐक्शन जारी है। जोन में बिजली चोरी के सर्वाधिक मामले संभल जिले से सामने आए हैं। संभल में बिजली चोरी की धारा 135 के तहत 1,400 से अधिक एफआईआर दर्ज की गई हैं। इसमें समाजवादी पार्टी के सांसद जियाउर रहमान बर्क, 16 मस्जिदों और दो मदरसों सहित कई व्यक्तियों और संस्थान शामिल हैं। बिजली चोरी में 11 करोड़ का जुर्माना लगाया गया है। बताया जा रहा है कि 20 लाख रुपए की वसूली की गई है। बिजली विभाग ने सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क के घर पर भी छापेमारी की। सांसद के घर खामियां मिलने पर बिजली विभाग ने बिजली चोरी के आरोप में मुकदमा दर्ज किया था और उन पर 1.91 करोड़ का जुर्माना भी लगाया था। सांसद के घर की बिजली भी काट दी थी। इसके साथ सांसद के पिता के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज कराया था। बिजली कर्मचारियों ने उनपर धमकाने का आरोप लगाया था। इसके बाद से अधिकारियों ने जिले भर में अवैध बिजली कनेक्शनों की पहचान करने और उन्हें दंडित करने के प्रयास तेज कर दिए हैं। जिले भर में तबाड़तोड़ छापेमारी में बिजली चोरी के सैकड़ों मामले सामने आए। विभाग की ओर ऐक्शन लिया गया। उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड ने कुल 11 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है, जिसमें से 20 लाख रुपये पहले ही वसूले जा चुके हैं। बता दें दिसंबर में बिजली विभाग के अधिकारियों ने सपा सांसद के इलाके खग्गू सराय, रायसत्ती, दीपा सराय, हिंदू पुरा खेड़ा सहित तमाम इलाकों में चेकिंग अभियान चलाया। इस अभियान के दौरान बिजली विभाग ने बड़े पैमाने पर बिजली चोरी पकड़ी थी।

राजस्थान के कई इलाकों में बूंदाबांदी और बारिश, नागौर में पारा 3.7 डिग्री सेल्सियस पर पहुंचा

जयपुर । गत दो दिनों में राजस्थान के कई इलाकों में बूंदाबांदी और बारिश होने के बाद सर्दी और तेज हो गई है। राजस्थान में नागौर में सबसे कम, 3.7 डिग्री सेल्सियस न्यूनतम तापमान दर्ज हुआ। मौसम विभाग के अनुसार, गुरुवार को सुबह तक बीते चौबीस घंटे में पूर्वी राजस्थान में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा दर्ज की गई जबकि पश्चिमी राजस्थान में मौसम शुष्क बना हुआ है। गुरुवार सुबह राज्य में कहीं-कहीं पर घने से अति घना कोहरा छाया रहा। तापमान में और गिरावट के चलते पूर्वी राजस्थान में कई जगह शीत और अति शीत दिन रहा। इसके अनुसार, इस दौरान न्यूनतम तापमान नागौर में 3.7 डिग्री, फतेहपुर में 5.4 डिग्री, अलवर में 5.8 डिग्री, सिरोही में 6.1 डिग्री और अजमेर में न्यूनतम तापमान 6.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विभाग के अनुसार राज्य के अधिकतर भागों में आगामी 4-5 दिन मौसम शुष्क रहने तथा कोटा, अजमेर, जयपुर, भरतपुर, बीकानेर संभाग के कुछ भागों में आगामी 2-3 दिन घना कोहरा रहने की संभावना है। कोहरे के प्रभाव से आगामी दो दिन कहीं-कहीं अधिकतम तापमान सामान्य से 2-4 डिग्री नीचे जाने की संभावना है।

दिल्ली में जाट समुदाय की किस मांग पर खुद ही फंसते दिख रहे केजरीवाल

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग का दावा, 10 सालों में कोई प्रस्ताव नहीं आया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में विधानसभा चुनाव के बीच आप नेता और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बीते सप्ताह जाट समुदाय को दिल्ली में ओबीसी की केंद्रीय सूची में डालने का मुद्दा उठाया था। केजरीवाल का आरोप था कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार बीते 10 सालों से मामले को दबाए बैठी है। वहीं केजरीवाल के आरोपों पर भाजपा ने जवाब दिया था कि दिल्ली सरकार को प्रस्ताव को पहले विधानसभा से पारित कराना चाहिए था। फिर उस प्रस्ताव को केंद्र सरकार को भेजने पर मुहर लगती। इसके बाद अब पिछड़ा वर्ग आयोग ने भी आप के दावों का जवाब दिया है। पिछड़ा वर्ग आयोग का कहना है कि बीते 10 सालों में दिल्ली सरकार से ऐसा कोई प्रस्ताव ही नहीं भेजा गया, जिसमें मांग की गई हो कि राजधानी के जाटों को दिल्ली में केंद्र की सूची में शामिल करे।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष हंसराज अहीर ने बताया कि बीते 10 सालों में हमें दिल्ली के जाटों को केंद्रीय ओबीसी सूची में शामिल करने का कोई प्रस्ताव नहीं मिला। ऐसा कुछ आता, तब विचार जरूर होता। दिल्ली में विधानसभा चुनाव है और इसके पहले केजरीवाल ने यह मसला उठाया था, लेकिन अब आप खुद ही मामले पर घिरती दिख रही है। दिल्ली के किशनगढ़, मुनिरका, नरेला जैसे इलाकों में जाटों की अच्छी खासी आबादी है। इसके बाद बाहरी दिल्ली और दक्षिणी दिल्ली के एक हिस्से में जाट मतदाता नतीजों पर असर डालने का दम रखते हैं। माना जा रहा है कि इसी रणनीति के तहत केजरीवाल ने दिल्ली के जाटों को केंद्रीय ओबीसी लिस्ट में शामिल करने की मांग उठाई है।

अहीर ने साफ कर दिया है कि दिल्ली सरकार से कोई प्रस्ताव नहीं आया। उन्होंने कहा कि किसी भी राज्य के समुदाय को केंद्रीय ओबीसी सूची में शामिल करने के लिए राज्य से ही प्रस्ताव भेजा जाता है। उस प्रस्ताव से पहले संबंधित राज्य सरकार उनके पिछड़ेपन को लेकर सर्वे कराती है। इसके बाद विधानसभा में वह प्रस्ताव मंजूर होता है, और इसके बाद केंद्र को प्रस्ताव भेजा जाता है। उस प्रस्ताव पर राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग फैसला लेता है। अहीर ने बताया कि यूपीए के कार्यकाल में दिल्ली से दो बार जाटों को केंद्रीय पिछड़ा सूची में शामिल करने का प्रस्ताव भेजा गया था। लेकिन तब उस प्रस्ताव को खारिज किया गया था। यह प्रस्ताव पहले 2010 में भेजा गया था और फिर 2014 के आम चुनाव से ठीक पहले गया था, लेकिन दोनों बार प्रस्ताव को मंजूरी नहीं मिल सकी।

जूते के बाद साड़ी बांटने के आरोपों में घिरे प्रवेश वर्मा, एफआईआर दर्ज

नई दिल्ली। नई दिल्ली सीट से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार प्रवेश वर्मा फिर से एक कानूनी मुश्किलों में घिरते दिख रहे हैं। जूते बांटने के आरोपों को लेकर एफआईआर के बाद चुनाव आयोग ने वर्मा के खिलाफ एक और केस दर्ज कराया है। वर्मा के आवास पर साड़ी बांटने के एक वीडियो का संज्ञान लेकर रिटर्निंग अधिकारी ने एफआईआर दर्ज करवा दी है। नई दिल्ली जिला निर्वाचन अधिकारी के एक्स हैंडल पर वर्मा के खिलाफ दर्ज नए केस की जानकारी दी गई है। बताया गया है कि यूट्यूब पर एक वीडियो सामने आया था जिसमें आरोप हैं कि नई दिल्ली सीट से भाजपा प्रत्याशी वर्मा के आवास पर साड़ियां बांटी जा रही हैं, जोकि आचार संहिता उल्लंघन का मामला बनता है। चुनाव आयोग की ओर से बताया गया कि यह जानकारी मिलने पर एक फ्लाइंग स्क्वॉड को तुरंत मौके पर भेजा गया। वेरिफिकेशन के दौरान मौके पर ऐसी कोई गतिविधि नहीं मिली। हालांकि, वीडियो साफ तौर पर इंगित कर रहा है कि साड़ियां बांटी जा रही थीं। इस सबूत के आधार पर नई दिल्ली सीट के रिटर्निंग ऑफिसर ने पुलिस को आधिकारिक रूप से शिकायत दर्ज कराई। पुलिस को पूरे मामले की तहकीकात करने और जनप्रतिनिधित्व कानून की संबंधित धाराओं और अन्य कानूनों के तहत कार्रवाई शुरू करने को कहा गया है।

13 फरवरी को होगी गोधरा कांड पर 'सुप्रीम' सुनवाई, साबरमती एक्सप्रेस के कोच में आग लगने से मारे गए थे 59 लोग

वाराणसी (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह 2002 के गोधरा ट्रेन अग्निकांड मामले में गुजरात सरकार और कई अन्य दोषियों द्वारा दायर अपील पर 13 फरवरी को सुनवाई करेगा। न्यायमूर्ति जेके माहेश्वरी और न्यायमूर्ति अरविंद कुमार की पीठ ने स्पष्ट किया कि सुनवाई की अगली तारीख पर मामले में कोई स्थगन नहीं दिया जाएगा। 27 फरवरी 2002 को गुजरात के गोधरा में साबरमती एक्सप्रेस के एस-6 कोच को जलाए जाने से 59 लोगों की मौत हो गई थी, जिससे राज्य में दंगे भड़क उठे थे।

गुजरात उच्च न्यायालय के अक्टूबर 2017 के फैसले को चुनौती देते हुए शीर्ष अदालत में कई अपीलें दायर की गई हैं, जिसने कई दोषियों की सजा को बरकरार रखा था और 11 लोगों की मौत की सजा को आजीवन कारावास में बदल दिया था।

मामला गुरुवार को सुनवाई के लिए आया, तो एक दोषी की ओर से पेश वकील ने कहा कि कोई सबूत रिकॉर्ड पर नहीं रखा गया है। न्यायमूर्ति माहेश्वरी ने कहा कि हमें पता नहीं। हम मामले की सुनवाई करेंगे और हमने यह पहले ही स्पष्ट कर दिया था। हम इस मामले को स्थगित नहीं करेंगे. इस मामले को कम से कम पांच बार स्थगित किया जा चुका है। (पिछले एक साल से, मैं इस मामले को स्थगित कर रहा हूं। वकील ने अदालत को बताया कि कुछ दोषियों ने माफी याचिका दायर की है जो लंबित हैं। मामले को स्थगित करने से इनकार करते हुए पीठ ने कहा कि हमारे पास मुख्य न्यायाधीश के कार्यालय से निर्देश हैं कि आपराधिक अपील और माफी के मामलों को एक साथ सुनने की जरूरत नहीं है।

दोषियों में से एक की ओर से पेश वरिष्ठ वकील संजय हेगड़े ने कहा कि मौत की सजा को उम्रकैद में बदलने के खिलाफ गुजरात द्वारा दायर अपील पर पहले सुनवाई होनी है। बाईस साल बीत चुके हैं। मेरे मुवक्किलों को मौत की सजा नहीं दी गई है। इस पीठ को पहले अपराध की पुष्टि करनी होगी। एक बार इसकी पुष्टि हो जाए, उसके बाद सजा का हिस्सा आता है।

बिहार चुनाव से पहले एक्शन में चिराग पासवान, शहाबुद्दीन के गढ़ में चला बड़ा दांव

पटना (एजेंसी)। अपराध और राजनीति अक्सर साथ-साथ चलते हैं। और ठीक ऐसा ही हुआ जब अयूब खान और रईस खान, जिन्हें 'खान बंधुओं' के नाम से जाना जाता है, औपचारिक रूप से केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान के नेतृत्व वाली लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) में शामिल हो गए। अयूब खान और रईस खान, जिनके नाम से एक समय पूरे बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में आतंक फैला हुआ था, ने शुरू में नीतीश कुमार की जनता दल (यूनाइटेड) में शामिल होने की कोशिश की थी, लेकिन सूत्रों ने दावा किया कि नीतीश ने उन्हें पार्टी में शामिल करने के लिए अपनी मंजूरी नहीं दी।

बुधवार को खान बंधुओं ने अपने समर्थकों के साथ पार्टी प्रमुख चिराग पासवान की मौजूदगी में एलजेपी (आरवी) की सदस्यता ली। सीवान के सहुली हाई स्कूल ग्राउंड में आयोजित मिलन समारोह के लिए खान बंधुओं ने पार्टी सुप्रीमो के लिए हेलिकॉप्टर की व्यवस्था की थी। पार्टी ने एक्स पर लिखा कि आज सिवान के साहुली हाई स्कूल में चिराग पासवान के प्रेरणादायक नेतृत्व में 'बिहार फर्स्ट-बिहारी फर्स्ट' और 'नव-संकल्प अभियान' से प्रेरित होकर मो. अयूब खान और मो. रईस खान ने हजारों समर्थकों की उपस्थिति में लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण की।

पार्टी ने लिखा कि उनका पार्टी में शामिल हो पार्टी की प्रतिबद्धता को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने इस कार्यक्रम में उमड़े विशाल जनसैलाब को संबोधित किया। वहीं, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के अध्यक्ष लालू प्रसाद ने बुधवार को संकेत दिए कि उनकी पार्टी के नेतृत्व वाला महागठबंधन पूर्व केंद्रीय मंत्री पशुपति कुमार पारस को अपने साथ जोड़ सकता है। प्रसाद मकर संक्रांति के अवसर पर भोज के निमंत्रण पर पारस के घर पहुंचे। प्रसाद के साथ उनके बड़े बेटे तेज प्रताप यादव और राजद के राष्ट्रीय महासचिव अब्दुल बारी सिद्दीकी भी थे।

2 से ज्यादा बच्चे होने पर ही लड़ पाएंगे चुनाव, चंद्रबाबू नायडू लेने जा रहे एकदम अलग फैसला

अमरावती (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि कोई व्यक्ति तभी सरपंच, नगर निगम पार्षद या मेयर बन सकता है, जब उसके दो से अधिक बच्चे हों, यह संकेत देते हुए कि यह गिरती जनसंख्या को रोक देगा। नायडू ने कहा कि वह लोगों को अधिक बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए नीतियां लाएंगे। उन्होंने कहा कि एक समय में, कई बच्चों वाले व्यक्तियों को पंचायत (चुनाव) या स्थानीय निकायों में लड़ने की अनुमति नहीं थी। अब मैं जो कह रहा हूं वह यह है कि कम बच्चों वाले व्यक्ति चुनाव नहीं लड़ सकते। आप सरपंच, नगर निगम पार्षद, निगम अध्यक्ष या महापौर तभी बन पाएंगे जब आपके दो से अधिक बच्चे होंगे।

सीएम के अनुसार, उत्तर भारत लगभग 15 वर्षों में स्थिर प्रजनन दर का लाभ खो सकता है। उन्होंने कहा, ÷आपके माता-पिता चार से पांच बच्चे पैदा करते थे और आपने इसे घटाकर एक कर दिया। यहां तक कि होशियार लोग भी अब कह रहे हैं कि दोगुनी आय वाले बच्चे हमें आनंद नहीं लेने देते। अगर उनके माता-पिता ने उनके जैसा सोचा होता, तो वे इस दुनिया में नहीं आते।' नायडू ने कहा, सभी देशों ने यह गलती की है और हमें सही समय पर निर्णय लेना होगा। उन्होंने कहा कि अधिक बच्चे पैदा करने के महत्व पर जोर नहीं दिया गया और स्थिति हाथ से बाहर हो गई।

दक्षिण कोरिया, जापान और महाद्वीपीय यूरोप जैसे देशों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि उन जगहों पर लोगों को आबादी कम होने के खतरे का एहसास नहीं था, बल्कि उन्होंने केवल धन पैदा करने, आय बढ़ाने और उ देशों को आगे ले जाने पर ध्यान केंद्रित किया इस महीने की शुरुआत में, नायडू ने गिरत जन्मदर पर प्रकाश डाला और कहा कि भार को दक्षिण कोरिया और जापान जैसे अन्य देश द्वारा की गई गलतियों को नहीं दोहराना चाहिए जहां जन्मदर में गिरावट आई है।

हिमाचल प्रदेश में बर्फबारी शुरू, छह जिलों में शीतलहर का येलो अलर्ट जारी

– आने वाले समय में हिमालय के ऊंचे क्षेत्रों में और भी अच्छी बर्फबारी की संभावना

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश में मौसम का मिजाज बदल गया है। रात से ही ऊंचे पहाड़ों पर बर्फबारी शुरू हो गई है, जबकि निचले क्षेत्रों में बदलता मौसम और बरसात की चहल-पहल देखने को मिल रही है। शिमला समेत कुफरी, नारकंडा संजौली, और जाखू इलाके में सुबह हल्की बर्फबारी हुई है, जिसने इलाके को सफेद रंग की चादर से ढक दिया है। यहां तक कि पर्वतीय क्षेत्रों में हुई बर्फबारी के कारण सर्दी और बढ़ गई है, लेकिन पर्यटकों के लिए यह खुशियों का समय है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अनुसार आने वाले दिनों में लाहौल स्पीति, किन्नौर, कांगड़ा, शिमला, कुल्लू और चंबा के कुछ ऊंचे क्षेत्रों में और भी अच्छी बर्फबारी की संभावना बनी है। चंबा, किन्नौर और लाहौल स्पीति में जल्दी ही बर्फबारी की संभावना है, जो इन स्थानों के लोगों के लिए एक प्रिय समाचार होगी। मौसम विभाग ने ऊना, हमीरपुर, बिलासपुर, मंडी, सोलन और सिरमौर जिलों में शीतलहर का येलो अलर्ट जारी किया है, जिससे कि लोग सावधानी बरत सकें। किसानों के लिए भी यह समाचार खुशियों का संदेश है, क्योंकि उन्हें बारिश और बर्फबारी की अच्छी प्रतीक्षा थी। मौसम विभाग की आशंका के अनुसार जनवरी महीने में भी हिमाचल प्रदेश में अच्छी बर्फबारी की संभावना है, जो किसानों के लिए अच्छी खबर है। इससे उन्हें राहत मिलेगी और उनकी फसलें भी मौसम की अनुकूलता के आधार पर विकसित हो सकती हैं। इस खुशखबरी के साथ हिमाचल प्रदेश वालों को सजीव और खुशहाल मौसम का आनंद लेने का अच्छा मौका मिला है। इस समय बर्फबारी और बदलते मौसम का आनंद लेने के साथ-साथ, स्थानीय लोगों और पर्यटकों को भी सुरक्षित रहने की सलाह दी जाती है। इस छुट्टियों को मनोरंजन से भरपूरी बनाए रखने के लिए सुरक्षा व्यवस्था में कोई कमी न हो, ताकि सभी इस कुदरती सुंदरता का लुफ्त उठा सकें।

सलमान, बाबा सिद्दीकी अब सैफ अली... आखिरकार क्यों मुंबई में सिलेब्रिटी अपराधियों के निशाने पर

मुंबई (एजेंसी)। अभिनेता सैफ अली खान के घर में आधी रात को चोर घुस आया। यही नहीं उनमें से एक चोर ने सैफ पर ही चाकू से हमला कर दिया, इससे उन्हें कई जगह चोटें आईं। फिलहाल वे खतरे से बाहर हैं और घर के अन्य लोग पूरी तरह सुरक्षित हैं। लेकिन यह चिंता की बात है कि आखिर मुंबई के बांद्रा इलाके में देश की नामी हस्तियां और फिल्मी सितारे रहते हैं, वहां इतनी क्राइम की घटनाएं क्यों और कैसे हो रही हैं। बांद्रा इलाके में रहने वाले सलमान खान के घर पर फायरिंग हुई थी और उन्हें बचाव के लिए अपनी बालकनी को बुलेटप्रूफ कराना पड़ा है। वहीं बाबा सिद्दीकी भी बांद्रा पूर्व इलाके में गोलीबारी में मारे गए थे। उन पर तीन हमलावरों ने भीषण फायरिंग की थी, इसमें एनसीपी नेता की मौत हो गई थी।

सलमान जिस गैलेक्सी अपार्टमेंट में रहते हैं, वह भी बांद्रा इलाके में ही है। अब मामले को लेकर राजनीति भी तेज हो गई है। उद्धव सेना की नेता प्रियंका चतुर्वेदी ने सीधे तौर पर मुंबई पुलिस और सरकार की असफलता करार दिया। प्रियंका चतुर्वेदी ने लिखा, क्या शर्म की बात है कि मुंबई में एक और हाईप्रोफाइल कांड हुआ है। इसमें सैफ पर जानलेवा अटैक किया गया। इससे मुंबई पुलिस पर सवाल उठते हैं। इसके अलावा गृहमंत्री पर भी सवाल है। ऐसी घटनाएं लगातार हो रही हैं, जिसमें मुंबई के बड़े नामों को ही टारगेट किया जा रहा है।

प्रियंका ने पूछा कि आखिर बांद्रा में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम क्यों नहीं हैं, जबकि इस इलाके में बड़ी संख्या में सिलेब्रिटीज रहते हैं। यदि मुंबई में सिलेब्रिटीज सेफ नहीं हैं, तब फिर मुंबई में सुरक्षित कौन है। फिलहाल पुलिस हमलावर को पहचान करने में जुटी है। मामला इसलिए भी शक पैदा कर रहा है क्योंकि घर के अंदर किसी बाहरी की एंट्री का सबूत नहीं मिला है। फिलहाल सैफ के घर के तीन स्टाफ को ही पुलिस ने पूछताछ के लिए हिरासत में लिया है। पुलिस ने मामले में एफआईआर दर्ज करके जांच शुरू की है। बता दें कि अक्टूबर 2024 में एनसीपी के नेता बाबा सिद्दीकी का यहां कत्ल हो गया था। उन्हें तीन हमलावरों ने उस वक्त गोलियां मारी थीं, जब वह बेटे जीशान के दफ्तर से निकल रहे थे इसके बाद उन्हें लीलावती अस्पताल लाया गया, ले किन उन्हें बचाया नहीं जा सका।

बाबा सिद्दीकी की हत्या दशहरे के दिन हुई थी, जब लोग त्यौहार मना रहे थे। अब तक पुलिस की जांच में लॉरेंस बिश्नोई गैंग का नाम मामले में सामने आया है। एनसीपी नेता को 6 गोलियां मारी गई थीं। सिद्दीकी के कत्ल से पहले करीब एक महीने तक हत्यारे मुंबई में रहे थे। उनकी लंबे समय तक रेकी की गई थी। फिर टारगेट करके मारा गया था। बता दें कि हत्या से 15 दिन पहले ही सिद्दीकी को हत्या की धमकी मिली थी। इसकी जानकारी उन्होंने पुलिस को दी थी, जिसके बाद सुरक्षा में इजाफा किया गया था।